मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 60 | अंक : 09 | मार्च, 2020 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

शिक्षा में नवाचार : नो बैंग डे

राजकीय विद्यालयों में शनिवार को ''नो बैंग डे घोषित'' किया गया है। ऐसा पहली बार हुआ है, जब राज्य बजट में बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ आनन्ददायी सृजनात्मक प्रवृत्तियों से जोड़े जाने की दिशा में इस तहत की महत्त्वपूर्ण घोषणा की गई है। समय-समय पर गठित कमेटियों एवं आयोगों ने बच्चों पर बढ़ते बस्ते के बोझ पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उससे निजात दिलाने की अनुशंषाएं की हैं। सप्ताह में एक दिन ''नो बैग डे'' के रूप में रखने की ऐतिहासिक पहल राजस्थान से हुई है। मैं इस हेतु हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

कोई तीन दशक पूर्व 1992 में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) स्तर पर स्कूली छात्र-छात्राओं के शैक्षिक बोझ को कम करने के तरीके सुझाने के लिए एक राष्ट्रीय सलाहकार समिति का गठन किया गया था। इस समिति के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री प्रोफेसर यशपाल थे। इस उच्च स्तरीय समिति में डॉ. कृष्ण कुमार सरीखे अनुभवी एवं पारखी शिक्षाविद् सदस्य थे। समिति ने 15-16 माह के अध्ययन-विश्लेषण एवं चिन्तन-मनन के बाद अपनी रिपोर्ट तैयार की थी। बिना बोझ के अधिगम (Learning Without Burden) नाम से जारी वह प्रतिवेदन आज भी उतना ही सामयिक एवं अर्थपूर्ण है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रदेश के शिक्षक राज्य सरकार की भावना को समझकर शनिवार ''नो बैग डे'' को Joyfull Learning day के रूप में स्थापित कर सम्पूर्ण देश को एक अनुकरणीय संदेश देंगे। बगैर बस्ते के विद्यालय के दिन का अर्थ है, बोझ रहित शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना।

यह समय परीक्षाओं का है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की इस वर्ष की सैद्धान्तिक परीक्षाएँ 5 मार्च (गुरुवार) से प्रारम्भ हो गई है। परीक्षाओं में लगभग 20.56 लाख विद्यार्थी 5680 परीक्षा केन्द्रों पर सम्मिलित हो रहे हैं। मेरा यह मानना है कि परीक्षाएँ स्वयं का मूल्यांकन करने की कसौटी है। इन्हें सहज रूप में लेना चाहिए। मैं परीक्षाओं के सफल संचालन की शुभकामनाएँ देता हूँ। चाहता हूँ, राज्य के विद्यार्थी परीक्षाओं को सहज लेते हुए इनमें बेहतर प्रदर्शन करें और प्रदेश को अपनी उपलब्धियों से गौरवान्वित करें।

शिक्षा एवं शिक्षण संस्थाओं में गहरी रूचि है। जब भी समय मिलता है, मैं स्कूलों में जाता रहता हूँ। इस क्रम में पिछले महिने (22 फरवरी) राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, तैतरवालों की ढाणी, श्यामपुरा, सीकर में जाने का सौभाग्य मिला। मैंने देखा विद्यालय में स्व-अनुशासन ही नहीं है बल्कि शिक्षण में भी शिक्षक स्वयं रूचि लेकर कार्य कर रहे हैं। शिक्षण अधिगम बेहतर है। मैं विद्यालय परिवार के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट करता हुआ उनके इस प्रयास के लिए साधुवाद देता हूँ। राजस्थान पूरे देश में शिक्षा की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है। हम सबको इस दूसरे स्थान को पहले स्थान पर लाने के प्रयास करने हैं। ठान लेंगे तो यह कोई कठिन राह नहीं है।

यह माह में रंगों के उल्लास का भी है। रंगों का त्योहार होली इसी माह है। मन का मेल धोने वाला, परस्पर सौहार्द्र बढ़ाते हुए प्रेम-भाईचारे के संदेश का यह अद्भुत त्योहार है। इसी के साथ शीत का समापन होकर गर्मी दस्तक देगी। चेटीचण्ड एवं गणगौर के पर्व भी इसी माह में मनाएंगे।

मार्च माह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि 30 मार्च को राजस्थान दिवस है। रियासतों के एकीकरण पश्चात 30 मार्च 1949 को हमारे प्रदेश राजस्थान की स्थापना हुई। समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, कला-संस्कृति की दृष्टि से राजस्थान उत्सवधर्मी प्रदेश है। आइए, शिक्षित-विकसित राजस्थान के लिए हम संकल्पबद्ध होकर कार्य करें। सभी शिक्षक भाई-बहनों को हार्दिक बधाई एवं मंगलमय शुभकामनाएँ।

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रदेश के शिक्षक राज्य सरकार की भावना को समझकर शनिवार 'नो बैग डे' को Joyfull Learning day के रूप में स्थापित कर सम्पूर्ण देश को एक अनुकरणीय संदेश देंगे। बगैर बस्ते के विद्यालय के दिन का अर्थ है, बोझ रहित शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना।"

मेरे दादा जी ने एक बार मुझसे कहा था कि दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं : वो जो काम करते हैं और वो जो श्रेय लेते हैं, उन्होंने मुझसे कहा था कि पहले समूह में रहने की कोशिश करो, वहां बहुत कम प्रतिस्पर्धा है.

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 60 | अंक : 9 | फाल्गुन शु.-चैत्र शुक्ल २०७६ | मार्च, 2020

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

❉

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❉

सम्पादक
मुकेश व्यास

❉

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❉

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- हमारी प्रतिबद्धता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा 5

आलेख
- महात्मा गाँधी : एक महान् प्रेरक व्यक्तित्व 6
  मेघाराम चौधरी
- Gandhian Values and their Importance in Education : An Observation 7
  Dr. Santosh Kumar Jakhar
- प्रिय बापू महात्मा गाँधी आप 'अमर रहें' 8
  डॉ. कमला शर्मा
- शिक्षा में नई चेतना की ओर एक कदम 9
  संदीप जोशी
- पर्यावरण में पंचवटी का महत्त्व 11
  राजेन्द्र कुमार ढुंढ़ाड़ा
- भय-मुक्ति में सद्गुणों की भूमिका 12
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- परीक्षा की तैयारी : ध्यान देने योग्य बातें 13
  भंवर महेन्द्र सिंह राजपूत
- परीक्षाओं के दौरान अभिभावकों की भूमिका 14
  राजकुमार तोलंबिया
- परीक्षा यानि त्योहार 16
  महेश कुमार शर्मा
- सरस शिक्षण 17
  डॉ. लोकेश कुमार शर्मा
- जीवन की ज्योति हैं पुस्तकें 18
  पूनम
- निराशा और आशा 19
  रामधन मीना
- हमारा जीवन सफलता की ओर 20
  डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी
- राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय शिवाजी पार्क अलवर (राजस्थान) 21
  हेमलता शर्मा
- आओं करें मौखिक अभिव्यक्ति मुखरित 22
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- मनुष्य की मनुष्यता 23
  मंजू मीणा
- समय का सदुपयोग 31
  रेनु सिकरवार
- वैश्विक पर्यावरण समस्या एवं भारतीय संस्कृति 32
  रामचन्द्र स्वामी
- जीवन कौशल 33
  डॉ. साधना गुप्ता
- विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का समावेश 35
  पुष्पा यादव
- आओ गुरुकुल बनाएँ 36
  भगवती प्रसाद मासीवाल
- कर्मण्येवाधिकारस्ते 37
  डॉ. गिरीशदत्त शर्मा
- ग्रामीण इलाकों में शिक्षा 38
  सुमन ओझा

रपट
- निदेशक का स्काउट गाइड ने किया स्वागत 24
  मान महेन्द्र सिंह भाटी

स्तम्भ
- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र 25-28
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- पञ्चाङ्ग (मार्च, 2020) 29
- राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2020 के घोषित अवकाश 30
- बाल शिविरा 42-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39-41
- तीसरी आँख का सच 39
  कवि : राजाराम स्वर्णकार
  समीक्षक : डॉ. कृष्णा आचार्य
- ये दरिया इश्क़ का गहरा बहुत है 40
  कवि : पुरु मालव
  समीक्षक : डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
- कोचिंग @ कोटा 41
  उपन्यासकार : अरुण अर्णव खरे
  समीक्षक : प्रोफेसर डॉ. अजय जोशी

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

▼ परिचय

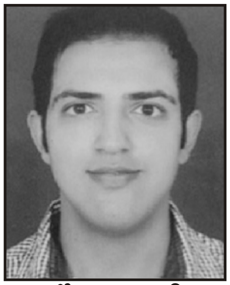

सौरभ स्वामी
आइ.ए.एस.

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

भारतीय प्रशासनिक सेवा (RR-2015) के अत्यंत ऊर्जावान युवा प्रशासनिक अधिकारी श्री सौरभ स्वामी ने 13 फरवरी, 2020 को बीकानेर में निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म दिनांक 01 दिसम्बर 1989 है, गृह जिला भिवानी (हरियाणा) है। आप भारतीय विद्यापीठ, नई दिल्ली से तकनीकी शिक्षा स्नातक (बी-टेक, ईसीई) हैं, आपने बी.इ.एल. बैंगलोर में साढ़े तीन वर्ष सीनियर इंजीनियर के रूप में सेवाएँ प्रदान की।

लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन से फेज 1 और 2 के प्रशिक्षणोपरान्त आपने सब डिविजनल ऑफिसर पीपलखूंट (प्रतापगढ़), सब डिविजनल ऑफिसर तथा सब डिविजनल मजिस्ट्रेट श्रीगंगानगर और चीफ एग्ज्यूकेटिव ऑफिसर जिला परिषद, श्रीगंगानगर में अपने कुशल नेतृत्व और उत्कृष्ट कार्यक्षमता से यशस्वी प्रशासनिक अधिकारी के रूप में राज्य सेवा की। कार्य को गुणवत्तापूर्वक एवं द्रुतगति से सम्पन्न करवाना आपकी विशिष्ट कार्यशैली है।

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान के रूप में आपके पदस्थापन से शिक्षा के क्षेत्र में अपूर्व उत्साह और नई ऊर्जा का संचरण हुआ है। शैक्षिक उन्नयन आपकी सर्वोच्च प्राथमिकता में है। आपका मानना है कि विद्यालयों में उत्कृष्ट आनन्ददायी शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ परिवेश में स्वच्छता, पर्यावरण और हरितिमा संवर्धन जैसे कार्य हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। राज्य का प्रत्येक विद्यार्थी पढ़े, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ आगे बढ़ें इसी प्रतिबद्धता के साथ शैक्षिक जगत में आपका अभिनन्दन....।

-वरिष्ठ सम्पादक

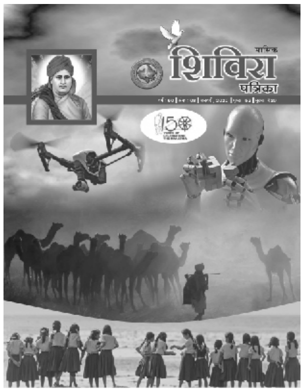

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका का फरवरी 2020 का अंक समय पर उपलब्ध हुआ। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ स्वामी दयानंद सरस्वती व वैज्ञानिक उपलब्धियों को प्रदर्शित करता हुआ आकर्षक लगा। 'दिशाकल्प' में माननीय निदेशक महोदय द्वारा बोर्ड परीक्षाओं में विद्यार्थियों को भय मुक्त होकर स्वस्थ मन से बिना तनाव के परीक्षाएँ देने की प्रेरणा सटीक लगी। गाँधीजी की 150 वीं जयन्ती पर प्रकाशित आलेख 'गाँधी जीवन-आदर्शों की प्रयोगशाला' बहुत ही ज्ञानवर्धक व बार-बार पठनीय लगा। यह आलेख गाँधी जी के त्याग और आदर्शों से प्रेरणा लेने की सीख देता है। इस संदर्भ में 'महात्मा गाँधी विषयक प्रकाशन' आलेख में गाँधी जी के बारे में विभिन्न प्रकाशित कृतियों का उल्लेख सराहनीय है। शिविरा पत्रिका ने इस अंक में महान समाज सुधारक, तपस्वी व युग प्रवर्तक श्रद्धेय स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र व शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को प्रकाशित कर पाठकों पर उपकार किया है। बहुत कम पत्र-पत्रिकाओं का ध्यान ऐसे युग प्रवर्तक के दर्शन की ओर जाता है। शिविरा पत्रिका ने स्वामी दयानन्द का हिन्दी भाषा में योगदान के साथ-साथ नारी उत्थान, शिक्षा में योगदान व स्वदेशी सम्बन्धी उनके विचारों को पाठकों तक पहुँचा कर महान विभूति का स्मरण प्रशंसनीय है। जीवन दर्शन के माध्यम से 'मानव जीवन के सात सरल नियम' पढ़कर पाठकों को संबलन मिलता है। 'हम भी करें-शिक्षा में नवाचार' में विभिन्न बिन्दुओं के माध्यम से शैक्षिक उन्नयन में ये प्रस्ताव नवाचार महत्ती भूमिका का निभा सकते हैं। 'पर्यावरण-संरक्षण' में प्लास्टिक हटाने सम्बन्धी आलेख वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समयानुकूल व सटीक लगा। 'प्रधानाचार्य डायरी' के माध्यम से डॉ. मदन गोपाल लढ़ा ने विद्यालयों के संस्थाप्रधान द्वारा विद्यालय में शिक्षण हेतु सकारात्मक माहौल बनाने व विद्यार्थियों की समस्याओं को सकारात्मक तरीके से सुलझाने की प्रेरणा मिलती है। शाला प्रांगण जहाँ विद्यालयों की विभिन्न गतिविधियों व समाचारों से अवगत कराता है वही पुस्तक समीक्षाएँ रचनाकारों की नई पुस्तकों से परिचय करवाती है। शेष सभी स्थाई स्तंभ प्रशंसनीय व ज्ञानवर्द्धक लगे। साधुवाद शिविरा टीम को जो प्रत्येक माह नवीन सामग्री शिक्षा समाज के चिन्तकों के सामने रखती है शिविरा के माध्यम से। यह अंक बेहद प्रशंसनीय व जानकारी परक लगा। शिविरा टीम को बधाई। सादर।

रामजीलाल घोड़ेला, लूणकरणसर, बीकानेर

- फरवरी 2020 का अंक पढ़ा। विगत 2 अंकों में माननीय शिक्षा राज्य मंत्री महोदय के निर्देशन-मार्गदर्शन का अभाव खल रहा है, उनके निर्देशन से शिक्षकों एवं पाठकों में नवीन ऊर्जा का संचार होता हैं, कृपया निरन्तरता बनाए रखें। निदेशक महोदय के दिशाकल्प से बोर्ड परीक्षा परिणाम में उन्नयन होगा। अंक में प्रकाशित शबनम भारतीय का आलेख 'आदर्शों की प्रयोगशाला' संक्षिप्त किन्तु प्रेरणादायी आलेख है। बिग्रेडियर चौहान सा. का आलेख 'सरल जीवन के सात सरल नियम' अत्यंत उपयोगी एवं व्यावहारिक धरातल पर आधारित पठनीय आलेख है। नवनीत जैन का आलेख 'जीवन एक चुनौती है' जीवन में समय प्रबंधन तथा सकारात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करने वाला बार-बार पढ़ने योग्य 'गागर में सागर' उपमा लायक आलेख है। स्तरीय सामग्री प्रकाशन हेतु शिविरा को साधुवाद।

शान्तिलाल सेठ, बाँसवाड़ा

- सादर नमस्कार! माह फरवरी, 2020 का शिविरा अंक मिला। बेहतरीन आवरण एवं सुन्दर आवरण के साथ वह भी समय पर। दिशाकल्प के माध्यम से निदेशक महोदय ने समस्त विद्यार्थियों को भय व तनावमुक्त होकर आनन्दमय रहते हुए परीक्षा देने की सकारात्मक पहल की हैं। शिविरा में संग्रहित आलेखों में 'एक ही संकल्प प्लास्टिक हटाना' वर्तमान पर्यावरण समस्या की ओर इंगित कर गया। इसके साथ ही सालगराम परिहार जी का 'बालिका शिक्षा की महत्ता' भी प्रभावी लगा। सम्पूर्ण शिविरा टीम को बधाई प्रेषित है।

महेश आचार्य, नागौर

सत्यमेव जयते

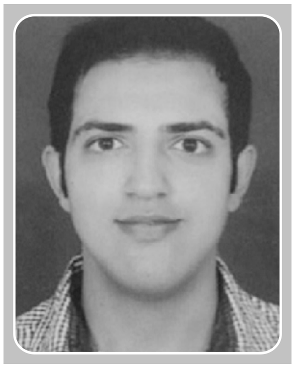

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

"राष्ट्र और समाज में शिक्षा के माध्यम से एक नई जीवनदृष्टि विकसित की जा सकती है। अपने होने के वैशिष्ट्य को पहचानते हुए हमें आधुनिक समय में नवाचारों के साथ विकास और प्रगति के नए आयाम स्थापित करने हैं। हमारा राज्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की शक्ति से, सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा का सिरमौर बने ऐसी मेरी स्पष्ट प्रतिबद्धता है।"

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

हमारी प्रतिबद्धता : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी आत्मीय स्वजनों को मेरा स्नेहित अभिवादन! आशा है विभागीय मासिक शिविरा पत्रिका का यह सम्पादकीय 'दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ' आपके और मेरे मध्य संवाद-सेतु के रूप में प्रभावी रहेगा।

शैक्षिक जगत ऐसा क्षेत्र है जहाँ बहुत रचनात्मक संभावनाएँ हैं। हमें हर पल इस गर्व और गौरव की अनुभूति रहनी चाहिए कि राष्ट्र और समाज में शिक्षा के माध्यम से एक नई जीवनदृष्टि विकसित की जा सकती है। अपने होने के वैशिष्ट्य को पहचानते हुए हमें आधुनिक समय में नवाचारों के साथ विकास और प्रगति के नए आयाम स्थापित करने हैं। हमारा राज्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की शक्ति से, सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा का सिरमौर बने ऐसी मेरी स्पष्ट प्रतिबद्धता है।

वर्तमान शिक्षा सत्र 2019-20 पूर्णता की ओर है। वार्षिक परीक्षाओं से विद्यार्थियों का शैक्षिक मूल्यांकन होगा परन्तु उनके सफल और अच्छे इंसान बनने के सफर में हम सभी का सतत मूल्यांकन चलता रहेगा। बोर्ड परीक्षा में 10वीं और 12वीं के विद्यार्थी उच्चतम अंक प्राप्त करने हेतु दिन रात परिश्रम कर रहे हैं। विभाग ने भी परीक्षा परिणाम उन्नयन हेतु ठोस रणनीति अपनाई। प्री-बोर्ड परीक्षा के बाद प्राप्त फीडबैक, अभिभावक शिक्षक सभा (PTM) उपचारात्मक शिक्षण, विषय विशेषज्ञों की अतिरिक्त कक्षाएँ, तत्क्षण काठिन्य निवारण के साथ ठोस कार्यों की परिणति उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के प्रति हमें आश्वस्त करते हैं।

परीक्षा में सभी विद्यार्थी अपनी क्षमता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें, तनाव और भय से मुक्त होकर परीक्षा दें आपकी सफलता के लिए मेरी अग्रिम शुभकामनाएँ।

उत्सव, पर्व और विशिष्ट दिवस हमें नया उत्साह प्रदान करते हैं। 08 मार्च विश्व महिला दिवस, 10 मार्च रंगों का पर्व होली, 23 मार्च भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु का शहीद दिवस, 25 मार्च नव संवत्सरारम्भ/चेटीचण्ड/गुड़ीपड़वा तथा 30 मार्च राजस्थान राज्य का स्थापना दिवस है। पर्व और उत्सव मनाने से हमारी सामूहिक मंगलेच्छा की भावना दृढ़ होती है।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ!

(सौरभ स्वामी)

150वीं गाँधी जयन्ती

महात्मा गाँधी : एक महान् प्रेरक व्यक्तित्व

❐ मेघाराम चौधरी

देश के लिए जिसने विलास को ठुकराया,
त्याग विदेशी धागे जिसने खुद ही खादी बनाया
पहनकर काठ की चप्पल जिसने
सत्याग्रह का राग सुनाया
देश का था वह अनमोल दीपक
जो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी कहलाया।

महात्मा गाँधी बड़े ही सरल और सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। उन्होंने कभी भी शारीरिक सौन्दर्य के लिए जीवनयापन नहीं किया एवं निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा की। गाँधीजी ने देशवासियों को सत्य, अहिंसा, स्वावलम्बन, आत्म संयम, छद्म आकर्षणों से बचने, समय का पाबंद होने और विद्यार्थियों को विद्यार्थी बनने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने देश को आजाद कराने में अपना अभूतपूर्व योगदान देते हुए देशवासियों को भारतीय संस्कृति और स्वराज का महत्त्व भी बताया। इस प्रकार बापू हमारे लिए सद्गुणों की खान है।

महात्मा गाँधी का विचार था कि आँख के बदले आँख पूरे विश्व को अंधा बना देगी क्योंकि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। अपनी मांगे मनवाने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाना चाहिए। सत्य और अहिंसा उनके दो बड़े हथियार थे। इन्हीं के बल पर उन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अंग्रेजों से लोहा लिया था।

महात्मा गाँधी समय के बड़े पाबंद थे। वे अपने प्रत्येक कार्य को समय पर पूर्ण करते थे। उनके लिए समय का एक-एक पल बेशकीमती था। उनका मानना था- जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया गया धन, कमाए हुए धन के समान महत्त्वपूर्ण होता है।

बात उन दिनों की है जब गाँधी जी साबरमती आश्रम में रहते थे। एक दिन पास ही के गाँव के कुछ कार्यकर्त्ता गाँधीजी से मिलने आए। उन्होंने अपने गाँव में एक सभा का आयोजन किया था जिसमें वे गाँधीजी को सम्बोधन के लिए आमंत्रित करना चाहते थे। गाँधीजी ने अपना दूसरे दिन का कार्यक्रम देखा

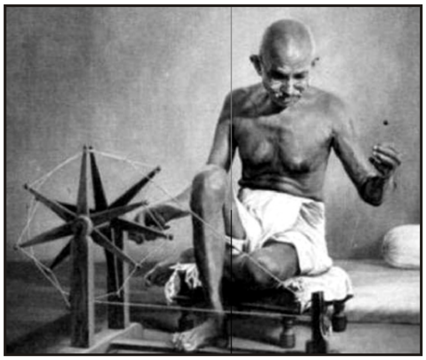

और उन कार्यकर्त्ताओं से पूछा- 'आप लोगों ने कार्यक्रम कितने बजे निश्चित किया है?' कार्यकताओं ने कहा- 'चार बजे का समय तय किया गया है।' गाँधीजी ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया। जाने से पहले एक कार्यकर्त्ता ने कहा- ''बापू! आपको लेने के लिए गाड़ी के साथ एक व्यक्ति को भेज देंगे ताकि आपको सभा स्थल तक पहुँचने में परेशानी ना हो।'' गाँधीजी ने उन्हें निश्चित समय पर तैयार रहने का आश्वासन दिया। इसके बाद कार्यकर्त्ता गाँव वापस चले गए।

अगले दिन गाँधीजी समय पर सभा में जाने के लिए तैयार हो गए। वे गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगे लेकिन पौने चार बजने के बाद भी कोई कार्यकर्त्ता गाड़ी के साथ उन्हें लेने नहीं पहुँचा। सभा का समय हो रहा था, ऐसे में बापू जी चिंतित हो उठे कि उनके समय पर नहीं पहुँचने पर सबका समय व्यर्थ होगा। लोगों का समय व्यर्थ न हो, इसका उन्हें एक उपाय सूझा और उन्होंने उस पर तुरंत अमल किया। कुछ देर बाद गाड़ी लेकर कार्यकर्त्ता जब साबरमती आश्रम पहुँचा तो गाँधीजी वहाँ नहीं मिले। उन्हें वहाँ न पाकर कार्यकर्त्ता आश्चर्य में पड़ गया और गाँव लौट आया। वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि गाँधीजी सभा स्थल पर पहुँच चुके हैं और भाषण दे रहे हैं। वहाँ उपस्थित सभी लोग बड़े ही ध्यान से गाँधीजी को सुन रहे थे। सभा समाप्त होने पर वह कार्यकर्त्ता गाँधीजी के पास गया और उनसे पूछा - 'बापू! मैं तो आपको लेने आश्रम गया था लेकिन आप मुझे वहाँ नहीं मिले। आप यहाँ कैसे आए?'

गाँधीजी ने उत्तर दिया - 'जब आप पौने चार बजे तक नहीं पहुँचे तो मैंने साइकिल उठाई और उसे चलाते हुए यहाँ आ गया। मैं अपने कारण इतने लोगों का समय व्यर्थ नहीं करना चाहता था।''

यह बात सुनकर कार्यकर्त्ता बहुत शर्मिंदा हुआ।

तब गाँधीजी ने उसे समय का महत्त्व समझाते हुए कहा - ''समय अमूल्य है, इसे व्यर्थ मत गवाओ।''

दांडी यात्रा के दौरान बापू एक स्थान पर रुके और जब वे चलने को हुए तो उनका एक अंग्रेज प्रशंसक उनसे मिलने आया एवं बोला - 'हैल्लो मेरा नाम वॉकर (Waker) है।'

चूंकि बापू उस वक्त जल्दी में थे इसलिए चलते हुए ही विनयपूर्वक बोले- 'मैं भी तो वॉकर (Waker) हूँ।' इतना कहकर वे जल्दी-जल्दी चलने लगे।

तभी एक सज्जन ने पूछा - बापू, यदि आप उस अंग्रेज से मिल लेते तो आपकी प्रसिद्धि होती और अंग्रेजी समाचार पत्रों में आपका नाम सम्मानपूर्वक छपता।

बापू बोले- 'मेरे लिए सम्मान से अधिक समय कीमती है।'

समय की पाबंदी को लेकर गाँधीजी के जीवन का एक और प्रसंग है - एक बार लेखक बनारसीदास चतुर्वेदी को बापू जी ने मिलने व बातचीत करने के लिए सवेरे सात बजे से सवा सात बजे के बीच का समय दिया था। उन दिनों लेखक नए-नए आश्रम में गए थे। उन्होंने सोचा कि बापू कहीं जाते थोड़े ही हैं, दो-चार मिनट की देरी हो जाए तो क्या फर्क पड़ता है? लेखक सात बजकर बारह मिनट पर गाँधीजी के पास पहुँचे।

बापू ने मुस्कराकर कहा - ''तुम्हारा समय तो बीत गया। अब आप जा सकते हैं। फिर कभी वक्त तय करके आना।'' यह सुनकर लेखक को

बहुत लज्जित होना पड़ा।

गाँधीजी विनम्र और सहनशील प्रवृत्ति के इंसान थे। वे कभी किसी पर क्रोध प्रकट नहीं करते थे। एक अंग्रेज ने महात्मा गाँधी को पत्र लिखा। उसमें गालियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। गाँधीजी ने पत्र पढ़ा और उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया। उस पत्र में जो आलपिन लगा हुआ था उसे निकालकर सुरक्षित रख लिया। वह अंग्रेज गाँधीजी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आया। आते ही उसने पूछा – 'महात्मा जी आपने मेरा पत्र पढ़ा या नहीं।'

गाँधीजी बोले – 'बड़े ध्यान से पढ़ा है।'

उसने फिर पूछा– 'आपने क्या सार निकाला।'

गाँधीजी ने कहा– 'एक आलपिन निकाला है। बस, उस पत्र में इतना ही सार था। जो सार था, उसे ले लिया। जो असार था, उसे फेंक दिया।'

हमारे बापू राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी विनोदी और हास्य स्वभावी भी अवश्य थे।

गाँधी जी एक सभा में भाषण दे रहे थे। तभी कुछ लोग जो पीछे बैठे थे, जोर-जोर से चीखने लगे। हमें आपका भाषण सुनाई नहीं पड़ रहा। इस पर गाँधी जी मुस्कराकर बोले – 'जो लोग मेरी आवाज नहीं सुन पा रहे हैं, वे अपना हाथ ऊपर कर लें।' तभी पीछे बैठे कुछ लोगों ने अपने हाथ ऊपर कर लिए। गाँधी जी कुछ देर तक मौन होकर उन्हें देखते रहे फिर उनकी मूर्खता पर मुस्कराते हुए बोले – 'जब आप लोगों को मेरा भाषण सुनाई नहीं दे रहा तो मेरी यह आवाज कैसे सुन ली?' गाँधी जी की बात सुनकर सभी श्रोता शांत हो गए और चुपचाप उनका भाषण सुनने लगे।

महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन मानवमात्र के लिए एक प्रेरणापुंज है। बापू जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए एवं उनके विचारों को अपने जीवन में उतारकर सदैव सच और मेहनत के बल पर आगे बढ़े।

बापू के सपनों को फिर से सजाना है,
देकर लहू का कतरा इस चमन को बचाना है,
बहुत गा लिए हमने आजादी के गाने,
अब हमें भी देशभक्ति का फर्ज निभाना है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
चिड़िया (गिड़ा), बाड़मेर
मो: 7850902715

Gandhian Values and their Importance in Education : An Observation

❐ **Dr. Santosh Kumar Jakhar**

I often think about the greatness of Mahatma Gandhi, how he became Mahatma Gandhi from M.K. Gandhi. Really his personality was charismatic having multiple traits to admire. Each aspect of his life's incidents helps us to discover a new Gandhian Value.

After going through the autobiography of Gandhiji-'The Story of my Experiments with Truth' and Hind Swaraj (The Concept of Swaraj of Mahatma Gandhi). I was moved to think and write about Gandhian values.

So, an effort has been made in this article to express about the Mahatma Gandhi in form of Gandhian values in a simple, lucid and clear manner which will be helpful to students. So, they can inculcate the Gandhian values in their lives and develop themselves as responsible citizens. While going through the written documents related to Gandhiji. I could list down several Gandhian values. Some of them are as follows :

● Truthfulness or Honesty ● Religiousness ● Morality ● Faith and respect to every religion ● Hard working ● Punctuality ● Untouchability ● Nonviolence ● Non stealing ● Non possession ● Control of palate ● Voice against Racial discrimination ● Determination ● Selfless sacrifice ● Truth and righteousness ● Fearlessness ● Discipline life ● Nationalism ● Love and obedience for parents ● Self-realization

These Gandhian values should be inculcated in curriculum so that we can justify with the characteristics of education given by Gandhiji "Education means all round drawing out of the best in child and man , body, mind and spirit as such Gandhian value based education help in developing all round dimensions of personality development such as moral, mental and emotional .

If we analyze present scenario and whatever incidents take place since last decade, reflects that Gandhian values are eroded under profile of humanity and fast pace of development. Everyone try to harness value system in the society and school is the primary institution where we shape human resource. If these Gandhian values will be inculcated, then positively it will be helpful to our future generation.

Some Gandhian values are to be explained:

1. Religious consciousness : It means one should follow or faith in other than one's own. For this practice the students should be trained to inculcate the habit of recognition and admire the practice of various great religions of the world in a spirit of reverence and broad-minded tolerance.

2. Morality and Ethics : It means to impart initial knowledge of morality and ethics. This can only be possible when one teacher should become an ideal of morality and ethics and his pupil. Just inculcate the same practices in his future life and it also help to develop responsible towards society. He needs to be polite and should set an ideal example of "simple living and high thinking". It also helpful in character building and for the physical and mental development of the students.

3. Every child is blessed with some qualities : According to him every child has some special qualities that can also be termed as inherited traits of personality so at the primary level a student quality and value should be identified by his mentor. A student should gain education according to curriculum and moral guidance and such practices also improve his physical strength, but the teacher should watch and identify his quality that could be helpful in his later life.

In nutshell we quote the thought of Gandhi "Gandhi wanted to use the cement of nationalism to make it one," says Louis Fischer, but Jinnah wanted to use the dynamite of religion to make it two. So Gandhian values can again reignite the light he showed is "shining still and will shine forever.

Teacher,
Mahatma Gandhi Govt. School
(English Medium) Mansarovar, jaipur

150 वीं गाँधी जयन्ती

प्रिय बापू महात्मा गाँधी आप 'अमर रहें'

❒ डॉ. कमला शर्मा

आदरणीय बापू!

आज 21वीं सदी में आपको बहुत याद करते हैं आपको तो पता है विश्व भर में आपके जन्मदिवस को अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हालांकि आप अपने नाम के साथ कोई वाद नहीं लगाना चाहते थे। परन्तु गाँधीवाद वैश्विक स्तर पर अत्यंत आवश्यक है।

बापू वर्तमान समय में आपका दिया एकादशा मंत्र बहुत प्रासंगिक हैं भ्रष्टाचार, वैमनस्य, हिंसा, अपराधीकरण जैसी समस्त समस्याओं का समाधान इस मंत्र में समाया हैं। बापू एक एक मंत्र आप प्रासंगिक हैं। आपने सत्य की राह पर चलना सिखाया। मन, वचन, कर्म से अहिंसा का पालन करने का व्रत दिया। आपने स्त्री-पुरुष दोनों के लिए विद्याध्ययन काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करवाकर संयमित जीवन का दर्शन दिया। अस्तेय व्रत का पालन करने का व्रत सिखाया। आचरण के नियम निर्धारित किए। अपरिग्रह का व्रत का आप स्वयं पालन करते थे और अपने अनुसरण कर्त्ताओं से भी पालन करवाते थे। अपरिग्रह व्रत लेने से व्यक्ति किश्त भरने के चक्रव्युह में नही फंसता। आपने भयमुक्त होने का सिद्धान्त दिया। आज प्रत्येक मनुष्य स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से जूझ रहा है। आपने शारीरिक श्रम की महत्ता बनाई थी। शरीर श्रम करने से शरीर रोग मुक्त रहता है। सर्वधर्म समभाव का विचार दिया। जिससे सम्पूर्ण विश्व में समरसता उत्पन्न हो। बापू आज पूरे देश में चीन का सामान बिक रहा है। आपका स्वदेशी का मंत्र अपनाकर देश को विकास की ऊँचाई पर ले जा सकते हैं।

गाँधी जी का व्रत 'अस्वाद' यानि हमें उतम ही भोजन करना चाहिए जिससे शरीर का काम चलता रहे। स्वाद के लिए ठूँस-ठूँस कर भोजन करना उचित नहीं है। इस प्रकार का भोजन करना शरीर पर आक्रमण करने के समान हैं। बापू आज 'फास्ट फूड' की क्रान्ति चल रही है। बच्चे बहुतायत मात्रा में खाते हैं। मोटापा बढ़ता है साथ ही बीमारियों बढ़ती हैं। इसका एक

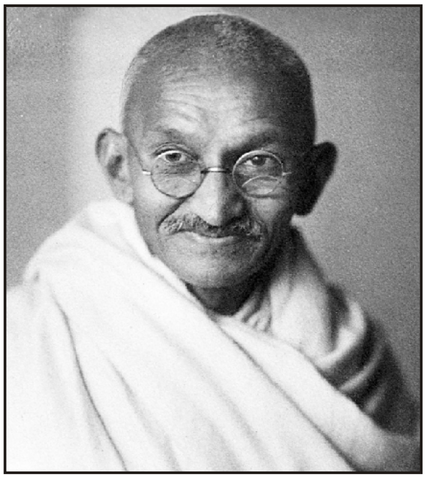

मात्र इलाज है उपवास। विवाह आदि उत्सवों में लोग भोजन की बर्बादी करते हैं। बड़ी मात्रा में भोजन की बर्बादी उस अन्न उत्पादक देवता किसान का अपमान है।

बापू आपने मोटा खाने व मोटा पहनने का सिद्धान्त दिए। जो मितव्ययी है। आजकल बच्चे व युवा ब्रान्डेड की होड़ में समय व पैसे की बर्बादी कर रहे हैं। आपने सत्य बोलना सिखाया। सत्य अगर मंजिल है तो अहिंसा उस तक पहुँचने का मार्ग सत्यनिष्ठ किसी से बदला नहीं लेता। सत्य व अहिंसा का व्रत लेने से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण संभव है।

आज प्राकृतिक स्रोतों का अंधाधूंध दोहन हो रहा है। पर्यावरण व प्रकृति को क्षति पहुँच रही है। आवश्यक-अनावश्यक आवश्यकताएँ तो अनंत है जितनी भी बढ़ाओ, बढ़ जाती है। अधिक अर्जन व दूसरे का हक छीनना भी चोरी है। अस्तेय का मार्ग अपनाकर हम प्रकृति व ईश्वर की सेवा कर सकते हैं।

बापू का बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रपिता का अंतिम और संभवतः महानतम् उपहार है। बापू आपने बेसिक शिक्षा की योजना दी जो कि मैट्रिक स्तर तक उद्योगों पर आधारित थी। बेरोजगारों की लंबी पंक्ति भयावह रूप धारण कर रही हैं। आपको शिक्षा प्रण में 'शिल्प की शिक्षा' ग्रामीण उद्योगों की महत्ता थी। अगर सरकार आपकी शिक्षा प्रणाली अपनाए तो हमारे युवा बेरोजगार नहीं घूमे बापू आज मेरे देश के युवाओं के पास डिग्री बहुत है परन्तु रोजगार नहीं है। आपने इस समस्या के बारे में इंगित किया था। आपने शिक्षा में मानवीय गुणों का विकसित करने पर बल दिया था। आज जो विनाश और तबाही फैल रही है वह मनुष्यों में मानवता की कमी के कारण बढ़ती जा रही है। आपने क्रिया द्वारा सीखने पर बल दिया क्रिया करके सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है जो हर क्षेत्र के लिए आवश्यक है। बापू आज आप होते तो सभी युवा स्वावलम्बी होते सभी शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए भी आपकी दी हुई शिक्षा प्रणाली की ओर देख रहे हैं।

बापू आज भारत को गाँवों को राष्ट्र बनाना चाहते थे। भारत की आत्मा 'गाँवों' मे बसती है। लेकिन सभी ने शहरों की तरफ दौड़ना शुरू किया। आज दिल्ली ऐसी नही होती यदि वहाँ इतनी बड़ी जनसंख्या वहाँ जाकर नहीं रहती शहरों की वायु जहरीली हो चुकी है यदि आपका सिद्धान्त स्वीकार करते तो गाँवों को विकसित बनाकर स्वावलम्बी बनाते।

बापू वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने आपकी 150वीं जन्म शताब्दी पूर्ण होने पर आपको स्वच्छ भारत सौंपने के लिए स्वच्छता अभियान चला रखा है। 'स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत' के अभियान में हमने भी अपना योगदान देने के लिए संकल्प कर रखा है। बापू हमारे विद्यालयों में भी 2 अक्टूबर 2019 से 2 अक्टूबर 2020 तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आपके संस्कार भारत के भविष्य को दिए जा रहे हैं। गाँधी संस्कार प्रतियोगिता आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' पर आधारित है। हम पुरजोर कोशिश कर रहे हैं आपके सपनों के भारत के साकार रुप देने में।

C/o श्री मन्नालाल शर्मा
नलिया बास पुरानी गोपालपुरा रोड,
सुजानगढ़, चूरू (राज.) **मो: 7976327625**

बैग फ्री सैटरडे

शिक्षा में नई चेतना की ओर एक कदम

❒ संदीप जोशी

राजस्थान बजट 2020 में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न जनोपयोगी-शिक्षोपयोगी घोषणाओं के लिए राजस्थान सरकार का हार्दिक अभिनंदन। विशेष रूप से शनिवार को बस्ते की छुट्टी करने के लिए अर्थात बैग फ्री सैटरडे घोषित करने के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी और शिक्षा मंत्री महोदय का हृदय की गहराइयों से बहुत-बहुत अभिनंदन साधुवाद। जितने व्यापक स्तर पर इस घोषणा का स्वागत हुआ है उससे स्पष्ट है कि यह जन आकांक्षाओं के अनुरूप लिया गया निर्णय हैं और बहुतायत में सभी ने इसकी प्रशंसा की है। राजस्थान सरकार ने शनिवार को बैग फ्री सैटरडे की घोषणा की है। शनिवार के दिन बिना बस्ते के भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है और यहाँ होने वाली पढ़ाई एवं गतिविधियाँ बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में सहायक सिद्ध होगी। यह योजना भारतीय शिक्षण पद्धति के अनुरूप है।

यह वर्ष पूज्य बापू महात्मा गाँधी जी के जन्म का 150 वाँ वर्ष है और सौभाग्य से यह योजना महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों के अनुरूप हैं। इससे बहुत सारे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ होंगे। शिक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का भी महत्त्व रेखांकित होगा एवं शिक्षकगण गंभीरता से लेंगे क्योंकि पाठ्य सहगामी क्रियाओं की बालक के व्यक्तित्व के विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। बच्चे भारी भरकम बस्ते के बोझ से मुक्त तनाव रहित होकर शिक्षा को आनंद मय वातावरण में उत्सव के रूप में ग्रहण करें, इस दृष्टि से पिछले 12 वर्षों से बस्ते का बोझ कम करने की दिशा में प्रयत्नशील हूँ। समाधान स्वरूप मासिक पाठ्य पुस्तक एवं शनिवार को बस्ते की छुट्टी की संकल्पना की थी। सौभाग्य से दोनों ही सुझावों को धीरे धीरे मान्यता मिल रही है। शनिवार के दिन बिना बस्ते के पढ़े जा सकने वाले शिक्षण बिंदुओं को एक आलेख के रूप में लिखा था। जो शिविरा पत्रिका में भी प्रकाशित हुआ। यदि इस प्रकार से कालांश विभाजन की योजना बन जाएगी तो यह बैग फ्री सैटरडे योजना सरलता से सफलतापूर्वक क्रियान्वित हो सकेगी।

बस्ता मुक्त शनिवार क्यों : कंधे पर भारी भरकम बस्ते का बोझ, लिए धीमी गति से ...थके थके से चलते पाँव एवं मासूम चेहरों को देखते ही मन में पीड़ा होती है। हम उसे सभ्य, सुसंस्कृत, सुयोग्य नागरिक बनने की शिक्षा दे रहे हैं अथवा केवल कुशल भारवाहक बनने का प्रशिक्षण? बचपन की मस्तियाँ, शैतानियाँ, नादानियाँ, किलकारियाँ, निश्छल हँसी, उन्मुक्तता, जिज्ञासा आदि अनेक बालसुलभ क्रियाओं को बस्ते के बोझ ने अपने वजन तले दबा दिया है। बचपन का सावन, कागज की कश्ती और बारिश के पानी के बालक केवल बातें ही सुनता है। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के बस्ते का लगातार बढ़ता हुआ बोझ एक समस्या के रूप में समाज के सामने हैं। आजादी के बाद से ही इस पर लगातार चिंतन मनन होता रहा है और लगभग सभी शिक्षा आयोगों, समितियों ने इसकी चर्चा की है, इस बोझ को कम करने की सिफारिश भी की है।

शिक्षा क्या है : शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास का आधार है। सा विद्या या विमुक्तये हो या विद्या ददाति विनयम.... मन बुद्धि और आत्मा के विकास की बात हो अथवा बालक की अंतर्निहित शक्तियों के प्रकटीकरण की बात... शिक्षा मूल रूप से जीवन का आधार है, शिक्षा के बारे में मूल भारतीय चिंतन यही है। विभिन्न विद्वानों और विचारकों ने शिक्षा की परिभाषा में अलग-अलग शब्दों में इन्हीं भावों और उद्देश्यों को रेखांकित किया है। किंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली और परीक्षा प्रणाली बालक को केवल रटना सिखा रही हैं। उसे अधिकाधिक अंकों की दौड़ में प्रतिस्पर्धी मात्र बना रही है। ऐसे में सर्वांगीण विकास की बात अधूरी रह जाती है। बालकों की जन्मजात प्रतिभाएँ, रुचियाँ एवं नैसर्गिक बचपन इस होड़ाहोडी में उलझ कर रह गए हैं। भारी भरकम बस्ते के बोझ तले पीसता बचपन अभिभावकों एवं स्कूल की ऊँची अपेक्षाओं की बलि चढ़ रहा है। बाल सुलभ जीवनचर्या के विपरीत उसका जीवन तनावपूर्ण हो रहा है। यह समस्या मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों, शिक्षाविदों एवं अभिभावकों के लिए भी चिंता का कारण बनी हुई थी। बस्ता शिक्षा का आधार नहीं है, न ज्ञानार्जन की प्रक्रिया भारी भरकम बस्ते पर अवलम्बित है। अक्सर विद्यालय से छुट्टी के बाद बालक घर जाकर जिस तरह से बस्ते को रखता हैं, पटकता है उससे उसके बालमन पर बस्ते और स्कूल के तनाव को सहजता से समझा जा सकता है। एक शिक्षक के रूप में मैंने इस समस्या को निकट से अनुभव किया है। मैं पिछले 12 वर्षों से बस्ते के बोझ की समस्या को हल करने के लिए प्रयासरत हूँ और इस अवधि में समाधान के रूप में दो विकल्प देश भर के शिक्षा प्रेमियों शिक्षाविदों, शिक्षकों और अभिभावकों के सामने रखे हैं। इन प्रयासों को एक बड़ा मुकाम मिला जब कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली के इंडिया हैबिटेट सेंटर में राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग एवं NCERT के तत्वावधान में बस्ते की बोझ की समस्या के समाधान के लिए एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। मैं भी इस कार्यशाला में आमंत्रित था। इस कार्यशाला में मुझे देश के विभिन्न राज्यों से आए शिक्षाविदों और अधिकारियों के सामने अपने सुझाव रखने का अवसर मिला। समस्या ही नहीं समाधान की भी चर्चा होनी चाहिए, इस बात का अनुसरण करते हुए मैंने अपने दो सुझाव प्रस्तुत किए। ये सुझाव देश भर में चर्चा का विषय बने। एक सुझाव को देश के विभिन्न राज्यों द्वारा लागू किया है। साथ ही केंद्रीय विद्यालय संगठन ने देश भर में प्राथमिक कक्षाओं के लिए भी इस सुझाव को लागू किया है। मेरा सुझाव था कि सप्ताह में एक दिन बस्ते की छुट्टी कर दी जाए। देश के विभिन्न भागों में कर्मचारियों के लिए फाइव डे वीक की योजना चलती है जिसमें सरकारी कार्यालय सप्ताह में 5 दिन ही खुलते हैं। शनिवार को विद्यालयों की छुट्टी भले न करें पर शनिवार को बस्ते की छुट्टी अवश्य कर देनी चाहिए अर्थात बच्चे एवं स्टाफ विद्यालय तो आएँ किंतु बस्ते के बोझ से मुक्त होकर व होमवर्क के दबाव के बिना। यहाँ सहज कुछ प्रश्न खड़े होते है। पहला तो यह कि यदि बच्चे बस्ता नहीं लाएँगे तो

विद्यालय में करेंगे क्या? समाधान है सप्ताह में एक दिन बच्चे शरीर, मन, आत्मा का विकास करने वाली शिक्षा ग्रहण करेंगे। अपनी प्रतिभा का विकास करेंगे। शिक्षा शब्द को सार्थकता देंगे और इस शनिवार को नाम दिया आनंदवार अर्थात शनिवार की शिक्षा बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ आनंद, उल्लास और उमंग देने वाली भी हो। यह एक प्रयास है बालक को तनाव मुक्त, आनंददायी, सृजनात्मक/प्रयोगात्मक शिक्षा देने का। वर्तमान में चल रही शिक्षा प्रणाली में बिना ज्यादा बदलाव किए, वर्तमान दायरे में रह कर भी शिक्षा को सहज, बोधगम्य, तनाव रहित, व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विकास करने वाला बनाया जा सकता है। ऐसी अनेक बातें हैं, विभिन्न प्रकार के विषय है जो क्रिया आधारित है। जिनके लिए किताब या बस्ता ज़रूरी नहीं है।

आनंदवार अर्थात शनिवार को भी नियमानुसार कालांश तो लगे पर उनका प्रकार कुछ बदला सा हो।

सादर विचारार्थ सुझाव स्वरूप यह कालांश योजना प्रस्तुत है जिनके आधार पर दिनभर की गतिविधिया सम्पन्न हो सकती है।

प्रथम कालांश- योग, आसन, प्राणायाम व्यायाम - प्रार्थना सत्र के पश्चात पहला कालांश योग-आसन, प्राणायाम, व्यायाम का रहे। बालक का शरीर स्वस्थ रहेगा, मज़बूत बनेगा तो निश्चित रूप से अधिगम भी प्रभावी होगा। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। प्राणायाम-व्यायाम के संस्कार विद्यार्थी के लिए जीवन पर्यंत काम आएँगे। इस कालांश में कौन से योग व्यायाम करवाना इसके लिए हमारे विभाग मे बहुत से एक्सपर्ट शारीरिक शिक्षक उपलब्ध हैं उनसे सलाह करके एक कॉमन योग कार्यक्रम तय किया जा सकता है। इसका एक सरल तरीका और है। विश्व योग दिवस का जो प्रोटोकॉल है, वह भी लगभग 40 मिनिट का है, उसका अभ्यास हो सकता है। उसमें सब प्रकार के योग व्यायाम एवं प्राणायाम सम्मिलित हैं। उसे हुबहू भी अपना सकते हैं अथवा कुछ संशोधन करके भी अपना सकते हैं। इस पहले कालांश को शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए काम में लिया जाना चाहिए

दूसरा कालांश : श्रमदान-स्वच्छता-पर्यावरण संरक्षण - इस कालांश में विद्यालय परिसर की स्वच्छता का कार्य, श्रमदान एवं पर्यावरण संबंधित कार्यों का निष्पादन होगा। विद्यालय में वृक्षारोपण, उनकी सार संभाल, सुरक्षा, पानी पिलाना, आवश्यकता होने पर कटाई-छंटाई, कचरा निष्पादन आदि कार्य।

तीसरा कालांश : संगीत अभ्यास - इस कालांश में गीत अभ्यास, राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा, प्रार्थना का अभ्यास हो। कई बार यह देखा जाता है कि वर्षों तक विद्यालय में पढ़ने के बावजूद कुछ छात्रों को प्रार्थना और प्रतिज्ञा भी याद नहीं हो पाते हैं, यह कालांश उनके लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। उपलब्ध हो तो वाद्ययंत्र का अभ्यास और कभी-कभी डांस क्लास (नृत्य अभ्यास) भी इस कालांश में करवाया जा सकता है।

चतुर्थ कालांश : खेल-कूद - कुछ खेल इंडोर हो सकते है कुछ आउटडोर भी हो सकते हैं।

अत्यधिक धूप की स्थिति में कक्षा कक्ष में ही दिमागी खेल, छोटे समूह के खेल इत्यादि हो सकते हैं। कुल मिलाकर इस खेल कालांश के लिए दो प्रकार की योजनाएँ की जानी चाहिए - इंडोर गेम्स और आउटडोर गेम्स। शारीरिक शिक्षकों की सलाह लेकर ऐसे अलग-अलग खेलों की विस्तृत सूची बनाकर सभी विद्यालयों को देनी चाहिए। बहुत सारे खेल ऐसे होते हैं जिन्हें बिना किसी साधन के भी अथवा न्यूनतम खर्च के संसाधनों के द्वारा खेला जा सकता है जैसे कबड्डी, विभिन्न प्रकार की दौड़े, रूमाल झपट्टा, ऊँची कूद, लंबी कूद इत्यादि

पंचम कालांश : अभिव्यक्ति कालांश- मध्यावकाश बाद के इस कालांश में कविता, नाटक, वाद-विवाद समूह चर्चा (ग्रुप डिस्कशन) अंत्याक्षरी (हिन्दी-अग्रेंजी) चित्रकला इत्यादि। बस्ता नहीं लाना है तो चित्रकला की कॉपी भी नहीं लानी है। अतः श्यामपट्ट पर, कक्षा-कक्ष अथवा बरामदे में फर्श पर चॉक से, मैदान में पेड़ों की छाँव तले मिट्टी पर पानी छिड़क कर छोटी लकड़ी से भी चित्र बनाए जा सकते हैं। मैदान के कंकरों की सहायता से रंगोली भी बनायी जा सकती है।यह प्रयोग हमने किया हुआ है। कंकर को रंग करने के बाद उनसे विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ और रंगोलियाँ बनाई जा सकती है। इसमें लाभ यह है कि एक बार काम में लेने के बाद इन्हें पुनः काम में लिया जा सकता है जबकि सामान्य रंगोली के कलर दोबारा काम नहीं आ सकते। साथ ही बड़ी कक्षाओं में समूह चर्चा के लिए बहुत सारे विषय छाँट कर उनकी एक विस्तृत सूची बनाकर समस्त विद्यालयों को उपलब्ध करवाई जा सकती है । वर्ष भर में लगभग 40 शनिवार कार्य दिवस के रूप में आएँगे। ऐसे में लगभग 80 विषयों की सूची बनाकर विद्यालय को देनी चाहिए जिनमें से शिक्षक अपनी सुविधानुसार कक्षाओं में समूह चर्चा ले सकें जैसे पर्यावरण संरक्षण, साक्षरता में हमारी भूमिका, सड़क सुरक्षा, हमारे महापुरुष, आदर्श विद्यार्थी के गुण, मेरा गाँव मेरा गौरव, स्वास्थ्य के आधार बिंदु, भोजन क्या करें कैसे करें... इत्यादि बहुत सारे विषय हो सकते हैं।

षष्ठम कालांश : पुस्तकालय एवं वाचनालय - इस कालांश में सभी कक्षाओं में छात्र संख्या के अनुरूप पुस्तकें वितरित की जाए। पुस्तकालय प्रभारी संबंधित कक्षाओं के शिक्षकों को पुस्तकें देंगे। इस कालांश में पढ़कर पुनः शिक्षक के माध्यम से पुस्तकालय प्रभारी को जमा करना है। लगभग सभी विद्यालयों में जितने विद्यार्थी हैं इतनी पुस्तकें तो उपलब्ध है ही। उससे ज्यादा भी हो सकती है। अपवाद स्वरूप यदि किन्हीं विद्यालयों में पुस्तकालय में पुस्तक नहीं है तो बैग फ्री सैटरडे के बहाने वहाँ भी पुस्तकालय विकसित हो जाएगा। किसी न किसी योजना से सभी विद्यालयों में पुस्तकालय तो होना ही चाहिए।

सप्तम कालांश : मौखिक गणित एवं भूगोल- यह भी अनेक बार का अनुभूत प्रयोग हैं, कई बार करवाया है और बच्चों को इसमें बड़ा आनंद आता है। पहाड़ा अभ्यास, हाथ की अंगुलियों पर-टिप्स पर सामान्य गणितीय क्रियाओं का मौखिक अभ्यास, जोड़, बाकी, गुणा, भाग, प्रतिशत, बट्टा आदि। साथ ही इस कालांश में सामान्य ज्ञान एवं भूगोल को भी पढ़ाया जा सकता है। मानचित्र परिचय, विश्व, भारत, राजस्थान के राजनैतिक, प्राकृतिक मानचित्र का अवलोकन, उसमें अलग अलग स्थानों को, नदी, पर्वत खोजना इत्यादि। (उपलब्ध हो तो इस कालांश में कम्प्यूटर

शिक्षण भी हो सकता है।)

अष्टम कालांश : अभिप्रेरणा बालसभा, बोधकक्षा, नैतिक शिक्षा, कॅरियर गाइडेंस इत्यादि। सप्ताह भर में आने वाले सभी उत्सव एवं महापुरुषों की जयंतियों का आयोजन भी इस कालांश में हो सकता है। पहला एवं अन्तिम कालांश सामूहिक भी रह सकता है और सुविधानुसार कक्षानुसार भी हो सकता है। कालांशों के विषय सुझाव स्वरूप उल्लेखित किए हैं। विभागीय आदेश ही मान्य होंगे। इनका क्रम विद्यालय स्तर पर सुविधानुसार निर्धारित किया जा सकता है, कक्षानुसार बदला जा सकता है। बैग फ्री सैटरडे का अर्थ यह कतई नहीं है की अध्ययन अध्यापन में कोई कंजूसी हो। पाँच दिन जमकर पढ़ाई और छठे दिन शनिवार को व्यक्तित्व विकास, सजृनात्मकता, अभिव्यक्ति। बैग फ्री सैटरडे की अर्थात आनंदवार की योजना से हमारी कालांश व्यवस्था में भी बहुत विशेष फर्क नहीं पड़ेगा कारण कि सभी कक्षाओं में प्रतिदिन एक न एक पीरियड कला शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा या समाजोपयोगी कार्य के नाम पर होता है। सप्ताह भर के उन सारे कलांशों को मिलाकर शनिवार के 1 दिन में मर्ज करना, इतनी सी बात है। विभिन्न विषयों को मिलने वाले अध्ययन-अध्यापन के कालांश उतने ही रहेंगे। जितने भी सह शैक्षणिक आयोजन करने हैं रैली इत्यादि निकालनी है वह सभी आयोजन इस बैग फ्री सैटरडे को हो सकते हैं शेष 5 दिन केवल शुद्ध रूप से अध्ययन-अध्यापन कार्य ही चले ।

इस प्रकार राज्य सरकार द्वारा बेग फ्री सेटरडे की घोषणा मौजूदा शिक्षा प्रणाली में बिना बदलाव के, बिना किसी वित्तीय भार के इस उपाय से शिक्षा को आनंददायी और विद्यालय परिसर को जीवन निर्माण केन्द्र बना सकने में सक्षम होगी। विद्यार्थियों के सामने भविष्य में आने वाली सामाजिक, स्वास्थ्य एवं नैतिक मूल्यों से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने वाली पीढ़ी के निर्माण में इस विचार की क्रियान्विति महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है।

पुनः एक बार शनिवार को बस्ते की छुट्टी करने के लिए अर्थात बैग फ्री सैटरडे लिए राज्य सरकार का , शिक्षा मंत्री जी का बहुत-बहुत आभार! धन्यवाद! अभिनंदन!

शांति नगर, बी-ब्लॉक,
रामदेव कॉलोनी के पास, जालोर-343001
मो: 9414544197

पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण में पंचवटी का महत्त्व

❑ **राजेन्द्र कुमार ढुंढाड़ा**

ऋषि मुनियों के कथनानुसार सेन्ट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीटयूट के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में रामायण की उस पंचवटी को शामिल किया जहाँ भगवान श्रीराम ने वनवास के चौदह वर्षो में निरोग एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत किया था। उन्होंने पंचवटी में शामिल पाँच वृक्षों- पीपल, वट, बेल, अशोक एवं आंवला पर अलग-अलग शोध किया, शोध के बाद जो परिणाम आए वे बेहद चौंकाने वाले थे। वैज्ञानिकों ने पाया कि पंचवटी के आस-पास रहने से अनेक बीमारियों की आशंका कम हो जाती है, शोध से इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया कि पंचवटी में लगने वाले पौधों के अपने अलग-अलग लाभ हैं, इन वृक्षों अथवा इनके फलों से न केवल सामान्य से अलग वातावरण तैयार होता है, बल्कि उससे मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

शोध में पाया गया कि पीपल का सामान्य वृक्ष 1800 कि.ग्रा. प्रति घण्टे की दर से ऑक्सीजन उत्सर्जित करता है। वट का वृक्ष न केवल गर्मी रोकता है, अपितु प्राकृतिक वातानुकूलता का कार्य भी करता है। आंवले में पाया जाने वाला विटामीन 'सी' जहाँ प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का सबसे सस्ता साधन है, वहीं बेल का नियमित सेवन लोगों को उदर की बीमारियों से बचाता है। अशोक के वृक्ष का उपयोग महिलाओं को कई बीमारियों से बचाता है। पंचवटी के पाँच वृक्षों में हर एक को लगाने की अलग-अलग विधियाँ हैं। कौनसा पेड़ किस

दिशा में लगाना है तथा कितनी दूरी पर होना चाहिए इसका भी वैज्ञानिक आधार है। पीपल का पेड़ पूर्व दिशा में लगाने पर अधिक ऑक्सीजन उत्सर्जित करता है, वट का वृक्ष पश्चिम में लगाए जाने पर प्राकृतिक रूप से वातानुकूलन का कार्य अधिक सुचारू रूप से करता है। आँवला दक्षिण में लगाना चाहिए। बेल का उत्तर में तथा अशोक दक्षिण-पूर्व में लगाए जाने पर स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। पेड़ों के बीच लगभग 10-11 मीटर की दूरी होनी चाहिए।

ऋषि मुनियों का मानना है कि वर्ष भर चलने वाली हवाओं की दिशाएँ अलग-अलग होती हैं। पंचवटी में अलग-अलग दिशाओं में लगे पौधों से गुजर कर आने वाली हवा आरोग्यवर्द्धक होती है। इसके बीच में अगर विश्राम चौकी स्थापित करें और बीमारी से उठा व्यक्ति वहाँ बैठता है तो यह मिश्रित हवा स्वास्थ्यवर्द्धक होने के कारण व्यक्ति जल्दी स्वस्थ हो जाता है। इन वृक्षों के पते झड़नें और फल आने का समय भी वर्ष में अलग-अलग होने के कारण ये वृक्ष, वर्ष भर छाया और फल देते हैं।

प्रदेश में पर्यावरण को सुधारने के लिए ये वृक्ष विद्यालयों, कार्यालयों, सार्वजनिक पार्कों में लगाने चाहिए ताकि पर्यावरण के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के बढ़ते दुष्प्रभाव को रोका जा सके, पंचवटी पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए हितकारी, सस्ती और सुगम है साथ ही हर किसी के लिए फायदेमंद है। पंचवटी के पौधों से जीवन में काफी लाभ मिलता है। मुनियों ने पंचवटी के महत्त्व के बारे में बताते हुए लिखा है कि जिस स्थान पर पंचवटी के पौधे होते हैं वहाँ नियमित रूप से बैठने से मन को शान्ति व पवित्रता मिलती है एवं तन निरोग एवं स्वस्थ रहता है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर
मो: 9414989140

सदाचार

भय-मुक्ति में सद्गुणों की भूमिका

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

सृष्टि में विकारों का होना स्वाभाविक है। चूँकि विकार ही पृथ्वी पर उत्पन्न सृष्टि का धर्म है। जीव मात्र में निहित वे भाव जिसके कारण उसके जीवन में बाधाएँ उत्पन्न होती है उन्हें 'विकार' कहा गया है। इन्हीं विकारों में 'भय' भी विकार का स्वरूप है, जो प्रत्येक जीव में विद्यमान रहता है। इसे परिभाषित करते हुए कहा गया है कि- अनिष्ट की आशंका से जीव के भीतर जो घबराहट होती है उसका नाम 'भय' है और भय से सर्वथा अभाव का नाम ही 'अभय' है।

मानव जाति में व्याप्त भय को मिटाने हेतु हमारे राष्ट्र में वैदिक काल में 'चिन्तन' विमर्श हआ और उसका प्रतिफल था कि 'अभय' की प्राप्ति 'ज्ञानार्जन' से ही संभव है। चूँकि अज्ञान ही भय कारण है और वही आत्मोन्नति व जीवन रक्षा में बाधक होता है। अतः ज्ञान प्राप्ति को जीवन में सर्वोपरि माना गया और इसकी प्राप्ति हेतु ज्ञान प्रदायक के रूप में सद्गुरुओं का होना आवश्यक है। चूँकि गुरु ही 'ज्ञान' का 'दान' देकर शिष्य को भय से मुक्त करवाकर 'अभय' का 'वर' देते हैं।

भय की उत्पत्ति और उसके निवारण से पूर्व यह जानना भी आवश्यक है कि मानव को यह दो रीति से प्रभावित करता है। बाह्य और आन्तरिक।

बाह्य भय की विवेचना में इसे मानव को अनुशासित, आज्ञाकारी, मर्यादित तथा स्वतन्त्र (उच्छृंखलता से विहीन) जीवन शैली को बनाए रखने हेतु आवश्यक माना गया है। जिसके प्रसंग में कहा गया है कि-हमें विद्या पढ़ाने वाले, अच्छी शिक्षा देने वाले आचार्य, सन्त, महात्मा, माता-पिता आदि के वचनों की आज्ञा की अवेहलना न हो जाए, हमारे राष्ट्र के संवैधानिक नियमों, शास्त्र और कुल मर्यादा के विरुद्ध कोई आचरण न बन जाए, इस प्रकार के उत्पन्न विचारों से उत्पन्न भय को 'बाह्य भय' कहा गया है। परन्तु यह भय वास्तव में भय नहीं है प्रत्युत यह तो अभय बनाने वाला भय है।

ऐसा भय तो होना चाहिए। ऐसा भय होने से ही व्यक्ति सन्मार्ग पर चल सकता है। इस प्रसंग में कहा गया है -

हरि डर, गुरु डर, जगत डर, डर करनी में सार
रज्जाब डरया सो उबरया, गाफिल खायी मार।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी 'भय बिन प्रीति' का जिस सन्दर्भ में उल्लेख किया है वह भी बाह्य भय ही है।

लेकिन व्यक्ति के जीवन से जुड़े घटनाक्रम जिसके कारण उसके मन में भय उत्पन्न हो जाता है, वह 'आन्तरिक भय' है। 'आन्तरिक भय' के कारण व्यक्ति की मनःस्थिति अस्थिरता को प्राप्त होती है। इस भय से ग्रस्त व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भय का साम्राज्य दिखाई देता है। यह स्थिति उसे उसके कर्त्तव्य कर्मों को करने में बाधक बनती है। आन्तरिक भय की यह स्थिति उसमें व्याप्त अज्ञान के कारण ही उत्पन्न होती है। इसलिए वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाता है और यह भी सत्य है कि जब तक वह करने योग्य कार्य नहीं करता, जानने योग्य को नहीं जानता और पाने योग्य को नहीं पाता तब तक सर्वथा अभय नहीं हो सकता, उसके जीवन में भय रहता ही है।

अतः ऐसी स्थिति से ग्रस्त व्यक्ति को भय-मुक्त कराने का दायित्व उन व्यक्तियों पर विशेषरूप से होता है जो उनके जीवन के संरक्षण एवं उत्थान में निर्वाहक की भूमिका का निर्वाह करते हैं।

ऐसा दृष्टांत श्रीमद्भगवतगीता से हमें प्राप्त होता है- जब युद्ध क्षेत्र में युद्ध करने के लिए उपस्थित अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से अपने रथ को दोनों सेनाओं के मध्य खड़ा करने को कहते हैं। श्री कृष्ण ने दोनों सेनाओं के मध्य रथ को खड़ा करके अर्जुन से कहा-

हे पार्थ! युद्ध के लिए जुटे हुए इन कौरवों को देख। अर्जुन ने वहाँ अपनों को देखा तो उसमें 'करुणा', 'मोह' के भाव उत्पन्न हुए और स्वजनों को मारने में 'पाप' का दोष होने के भय से वह विकल होकर कर्त्तव्य कर्म से पराङ्मुख हो गया। उसने स्वयं को युद्ध करने में सक्षम नहीं समझा और रथ के पिछले भाग में बैठ गया। अर्जुन की मनःस्थिति संशय से ओतप्रोत थी। इसे श्री कृष्ण ने समझा और उससे कहा-

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विष समुपस्थितम्।
अनार्यजुष्टम स्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।।

(2/2)

हे अर्जुन! तुझे इस असमय में यह मोह किस हेतु प्राप्त हुआ? क्योंकि न तो यह श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा आचरित है, न स्वर्ग को देने वाला है और न कीर्ति को करने वाला है।

वे अर्जुन से पुनः कहते है- **क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतम** (3/2) अर्थात् - हे परंतप। हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो जा।

श्री कृष्ण के कहने पर भी अर्जुन संशय से मुक्त नहीं हुए। तब अर्जुन के मन में श्री कृष्ण के कथनों को अधिक स्पष्ट रूप से समझने की इच्छा जाग्रत हुई और अपने भीतर उत्पन्न भय से मुक्त होने की शिक्षा देने के लिए श्री कृष्ण से कहा-

कार्पण्य दोषो पहत स्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्म सम्मूढ़चेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।

(7/2)

अर्थात्- कायरता रूप दोष उपहत हुए स्वभाव वाला तथा धर्म के विषय में मोहित चित्त हुआ मैं आपसे पूछता हूँ कि जो साधन निश्चित कल्याणकारक हो वह मेरे लिए कहिए, क्योंकि मैं आपका शिष्य हूँ इसलिए आपकी शरण हुए मुझको शिक्षा दीजिए।

तब श्री कृष्ण ने अर्जुन को 'ज्ञान योग' और 'कर्म योग' के उपदेशों के माध्यम से उनका संशय दूर किया तथा धर्म युद्ध करने के लिए 'भय' मुक्त किया।

उक्त प्रसंग में हमें सद्गुरु के रूप में श्री कृष्ण के उपदेश देने अथवा अर्जुन को समझाने के समय उनके स्वभाव पर भी दृष्टिपात

करना आवश्यक हो जाता है। चूँकि भयग्रस्त व्यक्ति पर उपदेश के व्यवहार का प्रभाव भी महत्त्व रखता है। श्रीमद्भगवत गीता के अध्याय-2 श्लोक-10 में इसे वर्णित किया गया है-

तमुवाच हृषीकेशः महसन्निव भारत।
सेनयोरूभयोर्मध्ये विषीदन्त मिदं वचः।।

अर्थात्- हे भरतवंशी धृतराष्ट्र! अन्तर्यामी श्री कृष्ण महाराज दोनों सेनाओं के बीच में शोक करते हुए उस अर्जुन को हँसते हुए से यह वचन बोले-

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे।
गतासुनगता सूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः।।
(11/2)

हे अर्जुन! तू न शोक करने योग्य मनुष्यों के लिए शोक करता है और पण्डितों के से वचनों को कहता है, परन्तु जिनके प्राण चले गए हैं, उनके लिए और जिनके प्राण नहीं गए हैं, उनके लिए भी पण्डित जन शोक नहीं करते।

उक्त दृष्टान्त हमारे लिए पथ प्रदर्शक है। अगर हमारी शिक्षण संस्थाओं में किसी विद्यार्थी के मन में पाठ्यक्रम को लेकर अथवा शिक्षण संस्था में किसी के व्यवहार से भय व्याप्त है, तो उसे तत्काल दूर करने का दायित्व अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत्त सद्गुरुओं का भी है। चूंकि वे ही उनके ज्ञानार्जन के क्षेत्र में मार्गदर्शक-प्रेरक की भूमिका का निर्वहन करते हैं। अतः उनके सदुपदेशों से ही बालक 'भय-मुक्त' हो सकता है। चूँकि जब तक विद्यार्थी के मन में भय रहता है, वह स्थिर चित्त नहीं हो सकता। स्थिर चित्त हुए बिना वह शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता है।

श्रीमद्भगवतगीता के अध्याय 6 श्लोक 14 एवं अध्याय 16 श्लोक-1 में कहा गया है कि भय रहित होने पर ही एकाग्रचित्त होकर अध्ययन किया जा सकता है-

प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितिः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः।।
अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञान योग व्यवस्थितिः।
दानं दयश्च यज्ञश्च स्वाध्याय स्तप आर्जवम्।।

अतः हमारे समाज से भय की समाप्ति सद्गुरुओं से प्रदत्त शिक्षा से ही संभव है।

जस्सुसर गेट रोड़, धर्म कांटे के पास
बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

परीक्षा समसामयिक

परीक्षा की तैयारी : ध्यान देने योग्य बातें

❐ भंवर महेन्द्र सिंह राजपूत

फरवरी-मार्च का महीना प्रारम्भ होते ही विद्यार्थी, अभिभावक व अध्यापकों की चिन्ताएँ परीक्षा को लेकर बढ़ जाती है। जैसा कि बचपन से सुनते आ रहे हैं **'जनवरी में जन्म लो, फरवरी में फरवट (Perfect) हो जाओ और मार्च में मर मिटो।'**-अर्थात जनवरी प्रारम्भ होते ही दोहरान कार्य शुरू कर दे और फरवरी से अध्ययन में पूर्णता लाए व मार्च आते-आते अन्य कार्यों पर ध्यान कम करके पूर्णतः अध्ययन के लिए समर्पित हो जाए और सच्चाई भी यही है कि- **Success is depend on previous preparation, without preparation sure to be failed.** आज के इस प्रतियोगी जमाने में जब विद्यार्थी 60 प्रतिशत अंक प्राप्ति की तैयारी करता है तो उसे 40 प्रतिशत अंक ही प्राप्त होते हैं। ऐसे ही 80 प्रतिशत की तैयारी से 60 प्रतिशत अंक व 100 प्रतिशत की तैयारी से 80 प्रतिशत अंक ही प्राप्त होते हैं। तो सवाल उपजता है कि क्या 100 प्रतिशत अंक प्राप्ति के लिए 120 प्रतिशत की तैयारी करनी होगी? उत्तर है हाँ। अर्थात विद्यार्थी जब अपनी पूरी तैयारी कर लेता है तो उसे परीक्षा कक्ष में कुछ गलत कार्यों को करने से बचना है या कहें कि अति आत्मविश्वास से बचना है। विद्यार्थियों को अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए निम्न सावधानियाँ रखनी है-

1. परीक्षा को सहजता से ले अपने ऊपर दबाव को हावी न होने दें।
2. नियमित अध्ययन करें तथा याद किए हुए को लिखकर देखें।
3. मॉडल पेपर को निर्धारित समय में पूरा करें तथा पेपर के प्रत्येक खण्ड के लिए समय निर्धारित कर उसे हल करें।
4. याद कर लेने के बाद अति आत्मविश्वास से बचें क्योंकि ऐसी स्थिति में गलतियाँ होने की सम्भावना अधिक होती है।
5. परीक्षा कक्ष में समय से पूर्व पहुँचें व प्रश्न पत्र को शान्ति से अच्छी तरह पढ़ें व समझें।
6. उत्तर पुस्तिका में प्रश्न क्रमांक निर्धारित स्थान पर, स्पष्ट व साफ अंकित करें।

विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी में अध्यापकों के कुछ दायित्वः-

1. विद्यार्थियों को उनके स्तर अनुरूप प्रोत्साहित करें और दबाव में आने से बचाएँ।
2. विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करें।
3. अभिभावकों से सम्पर्क में रहें और विद्यार्थियों व अभिभावकों को मार्ग निर्देशित करते रहें।
4. परीक्षा कक्ष में रखने वाली सावधानियों से विद्यार्थियों को पूर्व में ही अवगत करवाएँ। जैसे निर्धारित स्थान पर रोल नम्बर इन्द्राज करना, उपयुक्त तरीके से शब्दों व अंकों में रोल नम्बर लिखना, समय पर पहुँचना, निर्धारित स्थान पर ही बैठना, परीक्षा समय का किस प्रकार विभाजन करना, प्रश्न याद न होने पर भी धैर्य नहीं खोना आदि।
5. प्री-बोर्ड परीक्षा में रही विद्यार्थियों की कमजोरियों को व्यक्तिशः समझाएँ।
6. अभिभावकों को पढ़ाई का महत्त्व बताते हुए, विद्यार्थियों की पढ़ाई में सहयोग करने के लिए समझाएँ।

इन सब उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त विद्यार्थियों के परीक्षा तैयारी में अभिभावकों के उत्तरदायित्व निम्न हैंः-

1. बच्चों को स्वाभाविक पढ़ाई करने दें। क्षमता से अधिक अपेक्षाएँ रखकर बच्चों पर दबाव न बनाएँ।
2. बच्चे के स्वाभावानुसार प्रोत्साहन का उपयोग अधिक करें।
3. घर परिवार के अन्य कार्यों में बच्चों की संलिप्तता कम कर दें।
4. बच्चों को पढ़ाई के साथ खेलने-कूदने का पर्याप्त समय दें।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि परीक्षा तैयारी को सभी स्तरों पर पूर्ण सकारात्मकता व सहजता के साथ लें किसी भी स्तर पर नकारात्मकता व दबाव बच्चों पर न बनने दें। उपर्युक्त सावधानियाँ रखने व अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करने पर विद्यार्थियों की अपेक्षानुसार परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलेगी। सभी परीक्षार्थी, अध्यापक व अभिभावकों को परीक्षा की अग्रिम शुभकामनाएँ।

व्याख्याता (राजनीति विज्ञान)
रा.उ.मा.वि. थोब, कल्याणपुर, बाड़मेर (राज.)
मो: 9460129638

परीक्षा विशेष

परीक्षाओं के दौरान अभिभावकों की भूमिका

❒ राजकुमार तोलंबिया

आज के इस प्रतिस्पर्धा के युग में जहाँ प्रत्येक अभिभावक की अपने बच्चों से यह अपेक्षा रहती है कि वे परीक्षाओं में बेहतरीन प्रदर्शन करें। इसमें बच्चों के कठोर परिश्रम व समर्पण के साथ-साथ अभिभावकों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि अभिभावक सामान्य बातों का ध्यान रखें तो उनके बच्चे उत्कृष्ट उपलब्धि हासिल कर सकते हैं।

1. घर का वातावरण शांतिपूर्ण एवं खुशनुमा रखेंः- परीक्षाओं के दौरान अभिभावकों का यह दायित्व बनता है कि वे घर के वातावरण को शांतिपूर्ण व खुशनुमा बनाए रखें। परिवार के सदस्य अनावश्यक लड़ाई-झगड़ा विवाद ना करें और ना ही आपस में उलझें ताकि बच्चों का पढ़ने में मन बना रहे और वे अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

2. दिनचर्या व समय सारिणी बनाने में सहायता करेंः- बच्चों को परीक्षा की तैयारी के लिए दिनचर्या समय सारिणी बनाने में मदद करें क्योंकि आप अनुभवी हैं आप कई परीक्षाओं की तैयारी कर चुके हैं अतः आप अपने अनुभवों को अपने बच्चों में बाँटे ताकि वे आपके अनुभवों का फायदा उठा सकें।

3. प्रोत्साहित करेंः- हमेशा बच्चों को निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें बेहतर भविष्य, अच्छे कॉलेज में प्रवेश के लिए बेहतर ढंग से अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें। पढ़ाई से उनके भविष्य के उज्ज्वल स्वप्न दिखाकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें।

4. तुलना करना ठीक नहीं- कभी भी अपने बच्चों की तुलना उनके मित्रों से ना करें, इस प्रकार की तुलना से बच्चों में हीन भावना पैदा होती है। कभी भी अपने बच्चों को उसके मित्रों से कमतर आँकना ठीक नहीं है। उनकी पुरानी उपलब्धियाँ याद दिलाए। उन्हें पुरानी उपलब्धियों को लक्ष्य बनाकर उससे अधिक प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें।

5. परीक्षार्थियों से सम्बन्धित समस्त सामग्री एक स्थान पर रखेंः- पाठ्यपुस्तकें, संदर्भ पुस्तक, अभ्यास पुस्तिका, नोट्स, पेन पैंसिल एवं लेपटॉप, स्टेशनरी आदि एक स्थान पर अध्ययन कक्ष में रखें। ताकि अध्ययन के दौरान उन्हें इधर-उधर भटकना न पड़े और अध्ययन में कोई व्यवधान न हो। साथ ही उसके कपड़े, जूते, मौजे व अन्य समस्त आवश्यक सामग्री सभी को एक स्थान पर उसके अध्ययन कक्ष में रखें ताकि किसी भी सामग्री के न मिलने पर जो होने वाली परेशानियों से बचा जा सके। यदि परीक्षार्थियों को कोई वस्तु नहीं मिलती है तो वह परेशान हो जाता है और उसका अध्ययन बाधित हो जाता है। अतः अभिभावक इनका ध्यान अवश्य रखें।

6. खानपान का विशेष ध्यान रखेंः- बच्चे के खानपान का विशेष ध्यान रखे। उन्हें कम मिर्च मसाले, तले-गले पदार्थ ना खिलाए। अंकुरित फल हरी सब्जियाँ आदि कि उनके भोजन में अधिक मात्रा होनी चाहिए ताकि उनका पेट व स्वास्थ्य ठीक रहें और उनका अध्ययन निर्बाध बना रहे।

7. सकारात्मकता बनाए रखेंः- बच्चों के सामने हमेशा सकारात्मकता का माहौल बनाए रखें कभी भी नकारात्मक बातें नहीं करें। यदि सकारात्मकता का माहौल होगा तो बच्चों का मन पढ़ने में लगेगा और उन्हें सफलता मिलेगी।

8. बच्चों को पर्याप्त समय देवेंः- बच्चों से बातचीत करें, उनकी प्रत्येक बात को गंभीरता से लेवें नजरअंदाज नहीं करें। कभी-कभार हल्का मजाक कर लें। इससे माहौल हल्का-फुल्का रहेगा और बच्चे तरोताजा और अधिक सहज महसूस करेंगे और उनका मन अध्ययन में लगा रहेगा।

9. मित्र मंडली का ध्यान रखेंः- बच्चों की मित्र मंडली का ध्यान अवश्य रखें, मित्र हमेशा ऐसे हो जो पढ़ने में सहयोग करें व सकारात्मकता बनाए रखें। यदि मित्र मंडली में नकारात्मक विचारों के व्यक्ति हो, पढ़ाई में व्यवधान एवं शोरगुल उत्पन्न करने वाले हो तो ऐसे दोस्तों से दूर रखें। मित्रों की संख्या हो सके तो कम होनी चाहिए क्योंकि ज्यादा मित्र पढ़ने में व्यवधान उत्पन्न करते हैं। पढ़ने में हेल्प करने वाले मित्र हो इसका अवश्य ध्यान दें।

10. मानसिक तनाव को कम करने का प्रयास करेंः- प्रारंभ में बच्चे दो या तीन घंटे पढ़ते थे, अब उनके पढ़ने के घंटों की संख्या 5 से 8 के बीच में हो जाती है। अतः उनमें मानसिक बदलाव मिलते हैं। उनके तनाव को कम करने में सहायता करें। प्यार व विश्वास से पेश आएँ ताकि मानसिक तनाव कम करने में उपयोगी हो सके। प्रेम से बोला गया एक-एक कथन मानसिक तनाव को काफी हद तक कम करता है व अपने बच्चों में विश्वास बनाए रखें।

11. अभिभावकों की भी परीक्षा हैंः- अभिभावक यह माने की यह न केवल बच्चों की परीक्षा है, बल्कि यह आपकी स्वयं की परीक्षा हैं। आप जब यह मानेंगे तो बच्चों का तनाव स्वतः कम हो जाएगा। वे सहज महसूस करेंगे और पढ़ने में निरंतरता बनी रहेगी।

12. आप भी अध्ययन करेंः- यदि बच्चा पढ़ाई कर रहा है तो उसके साथ-साथ आप कुछ भी अध्ययन कर सकते हैं, जैसे नोवेल या अन्य कोई साहित्य धार्मिक साहित्य, कॉमिक्स इत्यादि पढ़ सकते हैं। फालतू वार्तालाप ना करें या मोबाइल में गेम ना खेलें।

13. मोबाइल व अन्य इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का प्रयोग ना करें- मोबाइल या अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग अध्ययन कक्ष में ना करें, इससे बच्चों का ध्यान भटकता है और उनके अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न होता है। मोबाइल का उपयोग अध्ययन कक्ष में नहीं करें। यदि आवश्यक हो तो बाहर जाकर बात करें।

14. बच्चों को परीक्षा कक्ष तक छोड़ने व लेने के लिए अवश्य जाएँः- बच्चों में अक्सर यह तनाव रहता है कि कैसे परीक्षा केन्द्र

तक पहुँचना और कैसे वापस घर पर पहुँचना है? यदि वह टैक्सी वगैरह का सहारा लेगा तो उसका समय भी बर्बाद होगा और उसे बराबर चिंता बनी रहेगी जिससे उसकी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती। अपने बच्चों को परीक्षा केन्द्र तक छोड़ने जाए और लेने जाए ताकि वह यातायात संबंधी बाधाओं से बच सकें।

15. तिथि व दिनांक वार अवगत कराते रहें:- अपने बच्चों को तिथि, वार अवगत कराते रहें ताकि वह भूल ना जाए। कई बार बच्चे अध्ययन करते-करते इतने व्यस्त हो जाते हैं कि वह तिथि और वार भी भूल जाते हैं एवं ऐसे विषय का अध्ययन कर लेते हैं जिसकी परीक्षा नहीं है। अपने बच्चों को प्रति दिन तिथि एवं वार अवश्य याद दिलाते रहे ताकि वह सही समय पर सही विषय की तैयारी कर सकें।

16. प्रवेश पत्र भी देखें- कई बार बच्चे हड़बड़ाहट में प्रवेश पत्र सही ढंग से नहीं देख पाते हैं तो उन्हें परीक्षा का केन्द्र, समय एवं परीक्षा का विषय व कार्यक्रम सही तरीके से याद नहीं रहता है।

अतः सरसरी निगाह से आप भी एक बार प्रवेश पत्र का अध्ययन कर ले कि परीक्षार्थी का परीक्षा केन्द्र कहाँ है, किस-किस तिथि को और किस समय कौन सी परीक्षा है? यह आपको भी पता होना चाहिए, यदि बच्चा भूल करता है तो आप उसे याद दिला सके।

17. क्षमता से अधिक की अपेक्षा ना करें:- अपने बच्चों की क्षमताओं का ध्यान रखते हुए परिणामों की अपेक्षा करनी चाहिए। कभी भी क्षमताओं से ऊपर उनसे अपेक्षा ना करें, अन्यथा लक्ष्यों के दबाव में बालक में तनाव उत्पन्न हो जाता हैं। अतः उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए उचित लक्ष्य निर्धारित करें, जिसे वास्तव में प्राप्त किया जा सके।

18. प्रेरणास्पद शब्दों का प्रयोग करें:- बहुत अच्छा तुम यह कर सकते हो। तुम्हारी परफोर्मेंस बहुत अच्छी है। पिछले साल की तुलना में तुमने बहुत अच्छा किया है। दुनिया में तुम्हारे जैसा कोई नहीं है' आदि प्रेरणादायक शब्दों का प्रयोग करें, जिससे बालक स्वप्रेरित होकर अध्ययन कर सके।

19. सेहत का ध्यान अवश्य रखें:- पढ़ाई के साथ-साथ सेहत का ध्यान अवश्य रखें। कई बार बालक स्वास्थ्य के प्रति लापरवाह हो जाते हैं और उसका खामियाजा उन्हें ताउम्र भुगतना पड़ता है। अतः उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें। बच्चों को लेटे हुए नहीं पढ़ने दें, स्ट्रेट बैठकर पढ़ने के लिए कहे, ताकि रीढ़ की हड्डी संबंधी बीमारियों से बचा जा सकें। उनके स्वास्थ्य के प्रति पूरे सचेत रहें, छोटी-सी भी बीमारी आए तो तुरंत चिकित्सक की सलाह लें।

20. आत्मविश्वास बढ़ाएँ:- बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास करें उनकी क्षमता एवं पूर्व उपलब्धियों को याद दिलाए ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़ सके और वह स्व प्रेरित होकर के आगे बढ़े। उनकी छोटी-छोटी सफलताएँ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी और उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

21. प्रलोभन भी दें:- अपने बच्चों को आगे बढ़ने के लिए प्रलोभन दें। जैसे- नई साइकिल, बाइक, स्कूटी व लेपटॉप इत्यादि का प्रलोभन दे और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें। बच्चा पुरस्कार के लालच में अधिक अच्छा करने का प्रयास करता है और ईमानदारी से मेहनत करता है।

22. अध्ययन कक्ष साफ-सुथरा व प्रकाशमय हो- यह ध्यान रखें कि आपके बच्चे का अध्ययन कक्ष साफ-सुथरा, हवादार एवं प्रकाशमय होना चाहिए। उसमें दीवारों पर सफेद कलर होना चाहिए।

23. लाइट की इमरजेंसी व्यवस्था होनी चाहिए:- यदि लाइट बंद हो जाती है तो इन्वर्टर या सोलर लाइट अथवा लैंप हो ताकि उसका अध्ययन निरंतर चलता रहे अन्यथा बच्चे परेशान हो जाते हैं। इन परेशानियों से बचने के लिए इमरजेंसी लाइट की व्यवस्था भी करनी चाहिए।

24. टेक्नोलोजी का प्रयोग:- यदि बच्चा आधुनिक टेक्नोलोजी का प्रयोग करता है तो उसके लिए लैपटॉप, मोबाइल एवं नेट का पर्याप्त बैलेंस होना चाहिए ताकि वह सुविधा अनुसार ऑनलाइन क्लासेस, यूट्यूब या अन्य अध्ययन सामग्री सर्च करके अध्ययन कर सकें।

25. विश्वास में लेकर बच्चे को अध्ययन के लिए कहें:- यदि आप बच्चे को प्यार एवं स्नेह से पढ़ने के लिए कहेंगे तो वह अवश्यक पढ़ाई करेगा अन्यथा दबाव में बच्चे अध्ययन नहीं कर सकते हैं। उनके साथ मित्रवत व्यवहार करें। डाँट-फटकार बच्चों को नकारात्मकता की तरफ ले जाती है, इसलिए बच्चों में सहानुभूति बनाए रखें ताकि वह सकारात्मकता की ओर बढ़े और जीवन में उन्नति कर सकें।

26. ड्राइविंग ना करवाएँ:- बच्चों से बाइक या अन्य तरह की कोई ड्राइविंग ना करवाएँ क्योंकि परीक्षा के दिनों में किसी भी प्रकार की दुर्घटना होने से बच्चे का साल खराब हो सकता है, अतः आप स्वयं छोड़ने जावे और लेने के लिए जावे। बच्चों से ड्राइविंग करवाने से बचे।

27. चाकू व धारदार औजारों का प्रयोग न करने देवें:- बच्चों से सब्जी, फल-फ्रूट आदि काटने जैसे कार्य न करवाएँ। यदि परीक्षार्थी की उंगली एवं अंगूठे पर चोट लग जाती हैं, तो वह परीक्षा में लिख नहीं पाएँगे और यदि लिख नहीं पाएँगे तो उनका साल खराब हो सकता है। अतः अभिभावक गण ध्यान रखें तेज चाकू छुरी आदि से कार्य बच्चों से ना करवाएँ।

28. अनावश्यक दबाव न बनाएँ:- अभिभावक बच्चों पर लक्ष्य प्राप्ति को लेकर अनावश्यक दबाव न बनाएँ क्योंकि परीक्षा जीवन का एकमात्र अंतिम लक्ष्य नहीं हैं, पढ़ाई के अलावा बच्चे अन्य क्षेत्रों में भी अच्छा प्रदर्शन कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं-जैसे कला, व्यापार, नृत्य, संगीत, पेंटिंग, अभिनय या अन्य किसी क्षेत्र को अपना सकते हैं।

29. शादी-ब्याह या अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में बच्चों को ना भेजें:- इससे उनकी दिनचर्या प्रभावित होती हैं, साथ ही उनका समय खराब होता हैं और उन्हें अध्ययन के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता हैं। अतः बच्चों को ऐसे कार्यक्रमों में खाना खाने के लिए ना भेजें और उनके लिए भोजन की व्यवस्था घर पर ही करें ताकि उनकी नियमित दिनचर्या में व्यवधान उत्पन्न ना हो।

यदि अभिभावक उपर्युक्त बातों का याद रखेंगे तो उनके बच्चों को आशातीत सफलता अवश्य मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित............

व्याख्याता (वाणिज्य)
रा.उ.मा.वि. बस्सी, चित्तौड़गढ़-312022
मो: 9929254777

परीक्षा विशेष

परीक्षा यानि त्योहार

❒ महेश कुमार शर्मा

परीक्षा यानि त्योहार! जी हाँ, क्या हम परीक्षा को त्योहार की तरह मना सकते हैं। मुझे पता है पाठक मेरे लेख के शीर्षक को पढ़कर यह सोच रहे होंगे कि परीक्षा और त्योहार का संबंध कैसे हो सकता है? यह तो दोनों अलग-अलग है। परीक्षा के दिनों में कोई त्योहार हो या त्योहार के दिन में कोई परीक्षा हो तो न केवल विद्यार्थी बल्कि पूरे परिवार के लोग उदास हो जाते हैं।

आज मैं आपको परीक्षा को त्योहार की तरह मनाने के कुछ टिप्स देने जा रहा हूँ इन टिप्स से आप परीक्षा को त्योहार की तरह बनाकर अपने परीक्षा के तनाव को न केवल दूर कर सकते हैं बल्कि आप अपने परीक्षा परिणाम को भी बेहतर बना सकते हैः-

पूर्व तैयारीः- जब कोई भी त्योहार आता है तो हम उसकी तैयारी कुछ दिनों पूर्व से ही करने लग जाते हैं बिल्कुल ऐसे ही परीक्षा आने से पूर्व ही इसकी तैयार करनी चाहिए।

प्रबंधन एवं ऊर्जाः- जिस प्रकार त्योहार के आयोजन को आकर्षक एवं खूबसूरत बनाने में हमारे सही प्रबंधन एवं ऊर्जा की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार परीक्षा में आपका सही प्रबंधन एवं ऊर्जा का सही इस्तेमाल बेहद जरूरी है। जैसे समय का प्रबंधन (जिस प्रकार ज्यादा या कम सोने से हमारे शरीर की ऊर्जा स्तर पर प्रभाव पड़ता है जिस कारण हमें थकावट भी हो सकती है इस कारण हमें सोने के लिए उचित समय निर्धारित करना होगा।)

सम्पूर्ण सामग्रीः- जैसे त्योहार में बनने वाली सभी मिठाइयों की सामग्री हम पहले से ही (त्योहार के आने से पहले) अपने घर पर खरीद कर रख लेते हैं ताकि मिठाई स्वादिष्ट बने और उसमें कुछ भी कमी ना रहे ठीक वैसे ही परीक्षा की तैयारी की सारी सामग्री जो आपकी परीक्षा परिणाम को अत्यधिक उत्कृष्ट बना सके जैसे महत्त्वपूर्ण किताबें, आपके द्वारा बनाए हुए नोट्स, सोल्वड पेपर परीक्षा से पूर्व पूर्ण तरीके से एकत्रित कर ले ताकि परीक्षा के दिनों में या कुछ भी नया ना पढ़ना पड़े।

टू-डू-लिस्ट (कार्यों की सूची)ः- जिस प्रकार त्योहार के समय किए जाने वाले कार्यों की सूची (टू-डू-लिस्ट) हम कुछ दिन पूर्व बना लेते हैं ठीक उसी तरह परीक्षा के दिनों में पढ़ने वाले महत्त्वपूर्ण टॉपिक या बिंदुओं की सूची हमें पूर्व में ही बना लेनी चाहिए।

चिंता एवं तनाव मुक्तः- जैसे त्योहार के समय कोई चिंता एवं तनाव नहीं होता ठीक उसी प्रकार परीक्षा में भी चिंता व तनाव से मुक्त रहते हुए अच्छे परिणामों की सकारात्मक विचारधारा से सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

जैसे हम हँसते हुए त्योहार को मनाते हैं ठीक उसी प्रकार हँसते हुए हमें परीक्षा देनी चाहिए क्योंकि जब हम तनाव कम रखते हैं तो हमारे अंक (मार्क्स) उम्मीद से ज्यादा आते हैं।

सकारात्मक सोचः- जिस प्रकार त्योहार के आयोजन के लिए हम सब परिवार के सदस्य मिलकर खुशियाँ मनाते हैं, सब सकारात्मक सोच रखते हैं ठीक उसी तरह परीक्षा के दिनों में न केवल विद्यार्थी को वरन संपूर्ण परिवार के सदस्यों को सकारात्मक सोच रखनी चाहिए। आध्यात्मिक रूप से हमारे जीवन में विचारों को बहुत प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों के अनुसार भी हम हमारे मस्तिष्क में जिस तरह के विचारों को सोचते हैं हमारे जीवन में वैसा ही घटित होता चला जाता है।

उदाहरण के रूप में हम समझ सकते हैं कि सकारात्मकता (पॉजिटिविटी) का चिह्न '+' होता है। इस चिह्न को देखें तो जब हम पॉजिटिव सोच रखते हैं तो चार रास्ते खुलते हैं। इसके विपरीत नकारात्मकता नेगेटिविटी का चिह्न (-) होता है, इसीलिए नकारात्मक सोच में सिर्फ दो ही रास्ते खुलते हैं। अन्य शब्दों में गणित में पॉजिटिव (प्लस) का अर्थ होता है-बढ़ना और नेगेटिव (माइनस) का अर्थ होता है- घटना अर्थात जब हम पॉजिटिव सोचते हैं तो हम बढ़ते जाते हैं और जब हम नेगेटिव सोचते हैं तब हम घटते जाते हैं यानी पीछे चले जाते हैं।

> *हमें वादे नहीं, इरादे लेकर आगे बढ़ना चाहिए।*

मनोरंजनः- जैसे त्योहार में रीति-रिवाजों को मनाने के साथ हम मनोरंजन भी करते हैं ठीक उसी प्रकार परीक्षा के दिनों में सिर्फ पढ़ाई करते रहने से दिमाग बोझिल हो सकता है उसे रिफ्रेश करने के लिए मनोरंजन भी बेहद जरूरी है। इसीलिए परीक्षा के दिनों में भी अपने परिवार, मित्रों के साथ कुछ खेल कर या अपनी रुचि के अनुसार कार्य कर मूड को रिफ्रेश करें।

शांत मस्तिष्क :- विभिन्न शोधों में यह पाया गया कि एक शांत मस्तिष्क 4 गुना ज्यादा बेहतर काम कर सकता है। एक अशांत मस्तिष्क के मुकाबले और यदि हमारा मस्तिष्क शांत होगा तो हमारी गलतियाँ भी कम होगी और हम बहुत ही अच्छी तरह से परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सृजनात्मकता या प्रदर्शन की कलाः- जिस प्रकार हम त्योहार पर कुछ नया करने को उत्सुक रहते हैं। हर बार हम त्योहार पर अपनी सृजनात्मकता (क्रिएटिविटी) से लोगों को आकर्षित करते हैं ठीक उसी प्रकार परीक्षा में केवल पढ़ना ही सब कुछ नहीं है। परीक्षा में अपने उत्तरों को बड़े ही ठीक ढंग से पेश करना आपके लिए प्लस पॉइंट है। इस कला को 'द ऑर्ट ऑफ प्रेजेंटेशन' या 'प्रदर्शन की कला' कहा जाता है। इस कला को आप अभ्यास और थोड़ी मेहनत से सीख सकते हैं। आप उत्तरों को टू-द-पॉइंट (बिंदुवार) लिखकर परीक्षक का ध्यान केन्द्रित करके अच्छे अंक प्राप्त कर सकते हैं।

आप अपनी विशेषताओं का प्रयोग करो, जीवन के हर कदम पर आपको प्रगति का अनुभव होगा।

व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. छबड़ा, बारां
मो: 9460174051

भाषा शिक्षण

सरस शिक्षण

❒ डॉ. लोकेश कुमार शर्मा

साहित्य को प्रमुख रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है; गद्य साहित्य एवं पद्य साहित्य। तत्पश्चात उसके विभिन्न भेदोपभेद किए गए हैं जहाँ बोल चाल में सृष्टि के आदिकाल से ही गद्य का व्यवहार होता आया है वहीं लेखन में पद्य का प्रभाव रहा है। इसका प्रमुख कारण संक्षेपण, रागात्मकता के कारण प्रभावोत्पादकता एवं मानव का संगीत प्रेम रहा है। काव्य का सम्बन्ध कवि तथा कविता से रहा है। ऋग्वेद की ऋचाओं (मंत्रों) का निबंधन छन्दों में हुआ है जो पद्य साहित्य की मूलावस्था का निर्देशन करते हैं। आदिकवि वाल्मीकि ने जब निषाद को–

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वतीसमा यत्कौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्'

कहा तो यह लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम काव्य बना और वाल्मीकि संसार के प्रथम कवि कहलाए। ऋषि ने उक्त वचन अनुष्टुप छन्द (पद्य) में कहे जो छन्द में रामायण का आधार बना। संस्कृत साहित्य से चली यह अविरल धारा कालिदास, भारवि, माघ से होती हुई जब हिन्दी भाषा के धरातल पर बहने लगी तो आदिकालीन साहित्य में भी पद्य को सजाने में ही अपना अधिकाधिक जल व्यय किया। भाव यह है कि लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं का काव्य जगत पद्य साहित्य से न केवल प्रारम्भ हुआ अपितु पुष्पित-पल्लवित भी हुआ।

सभी भाषाओं में गद्य पश्चातवर्ती रहा यद्यपि दण्डी, सुबन्ध, बाणभट्ट जैसे संस्कृत एवं हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद जैसे हिन्दी गद्यकारों ने ललित एवं चमत्कारी गद्य काव्य सृजन से गद्य को जनरुचि का विषय बना दिया तथा साहित्य में चले आ रहे पद्य के एकछत्र साम्राज्य को चुनौती दे डाली।

गद्य या पद्य में से कौन अधिक श्रेष्ठ है यह विचार ही व्यर्थ है। क्योंकि इसका उत्तर रुचि एवं प्रभावोत्पादकता पर आधारित है किन्तु यह स्वीकारने में हमें कतई गुरेज नहीं होना चाहिए कि बोलचाल में गद्य आज भी अपना एकछत्र राज्य कायम किए हुए हैं गीतों के माध्यम से गा-गा कर कोई बात नहीं करता किन्तु उस गद्य को सजाने का काम आज भी पद्य ही करता है। टीवी पर प्रसारित विज्ञापनों में बिजली के स्विच का प्रचार हो या साबुन तेल का प्रचार, पद्य की सहायता से ही पूरा होता है। भाषण, प्रवचन, निबन्ध, कथा, उपदेश आदि सबको मध्य में पद्य के मोती जड़कर ही सजाया जाता है। अस्तु....

साहित्य शिक्षण कैसे प्रभावी हो तथा विद्यार्थियों में रुचि जाग्रत होने के साथ-साथ उनका ज्ञानवर्धन हो, तदुपरान्त परीक्षा में भी अच्छे परिणाम प्राप्त हो इसके लिए साहित्य शिक्षण भले ही वह संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी या किसी भी भाषा के साहित्य का शिक्षक हो सजगता एवं दक्षतापूर्वक अध्यापन कर ही अपने लक्ष्य में सफल हो सकता है।

मैं अपना निजी अनुभव सफल कथा (Success Story) के रूप में आपसे साझा करते हुए गौरव का अनुभव करता हूँ कि मैंने अपने कुछ अध्यापकों से अपने अध्ययन काल में गद्य को पद्य की भाँति एवं पद्य को पद्य की भाँति पढ़कर उसमें सुधारात्मक संवर्धन कर सदा के लिए अंगीकार कर लिया अर्थात् आज भी जब मैं मीरा का पद्य, दुष्यन्त की गजल, घनानन्द का कवित्त पढ़ाता हूँ तो पूर्ण आरोह-विरोह एवं लय के साथ उसे विद्यार्थियों को सुनाता हूँ।

मैं व्यक्तिशः उन भावों में खो जाता हूँ और उस समय उस कवि के उस दृश्य में स्वयं को सम्मिलित मानते हुए भावाभिव्यक्ति का प्रयास करता हूँ और यह सब बिना किसी दिखावे के होता है। अलग-अलग तरह के पद्यों को अलग-अलग राग एवं धुन के साथ प्रस्तुति से विद्यार्थी मंत्र मुग्ध हो जाते हैं तथा साथ-साथ गुनगुनाने लगते हैं। फिर उनसे भी अनुकरण गायन कराया जाता है। इस दौरान उनको न केवल अपूर्व आनन्द की अनुभूति होती है अपितु हम गुरु शिष्य एक साथ अनेक लाभ ले पाते हैं।

मेरी कक्षा में कभी अनुशासन सम्बन्धी समस्या नहीं आती। विद्यार्थी लीन होकर काव्य सुनते हैं, गुनगुनाते हैं, गाते हैं, अनुकरण करते हैं। भाव व प्रसंगानुकूल प्रस्तुति के द्वारा उनको बाँधे रखता हूँ। हर पद्य की प्रस्तुति के बाद Once More की याचना सुनाई देती है और पुनः काव्यपाठ होता भी है। इससे विद्यार्थियों में उस विषय के प्रति रुचि जाग्रत हो जाती है।

भावों को समझने की सामर्थ्य उत्पन्न होती है, शिक्षक के प्रति सम्मान उत्पन्न होता है तथा प्रश्नोत्तर व पाठ की व्याख्या करना उनके लिए बहुत आसान हो जाता है।

यद्यपि सभी शिक्षक अच्छे संगीतज्ञ, गायक या अभिनेता नहीं हो सकते किन्तु आवश्यकता है कि अपने कार्य को स्वयं शिद्दत से करने की। यदि गायक स्वयं आनन्दित होकर पूरी मस्ती में गाता है तो श्रोता निश्चित रूप से आकर्षित व आनन्दित होते हैं। ठीक वैसे ही यदि पद्य का शिक्षण कराते समय पद्य की रागात्मक प्रस्तुति पूर्ण मनोयोग से होगी तो उसका प्रभाव ही कुछ और होगा और यह शत प्रतिशत अनुभूत प्रयोग है।

प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक गद्य हो या पद्य एक ही विधि से पढ़ाते हैं इसलिए वह अरुचिकार हो जाता है। अरुचि के बाद होने वाले दुष्परिणाम एवं रुचि के बाद प्राप्त होने वाले सुपरिणाम चमत्कारी ढंग से देखने को मिलते हैं। क्योंकि शिक्षण अधिगम के सिद्धांतों में रुचि का सिद्धांत (The Principle of Interest) एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। बिना रुचि के कार्य में सफलता सदैव संदिग्ध रहती है।

सभी साहित्य एवं भाषा शिक्षकों को मेरा निवेदन है कि एक बार गद्य को गद्य की तरह एवं पद्य को पद्य की तरह पढ़ाकर तो देखिए आपको विलक्षण सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेंगे यह मेरा दावा है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अयाना,
जिला-कोटा (राज.)
मो: 9460191773

पुस्तकालय की महत्ता

जीवन की ज्योति हैं पुस्तकें

❒ पूनम

प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो के अनुसार शैशवावस्था में ही चरित्र निर्माण होता है। चूँकि सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय आदर्शों का बीजारोपण शैशवकाल से ही होता है अतः हमारी शिक्षण व्यवस्था अपनी इस जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकती। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के लिए पूरी तरह तैयार न करें, तो वह कैसी शिक्षा? शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो बच्चे का सामाजिकीकरण करती है एवं उसमें सामाजिक गुणों एवं भावों को जाग्रत कर उसे समाज का आदर्श नागरिक बनाती है। शिक्षा आयोग ने शिक्षा के आधुनिकीकरण के साथ-साथ बच्चे में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास का दायित्व भी हमारे शिक्षा संस्थानों को सौंपा था। शिक्षा का लक्ष्य सुनागरिक तैयार कर सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करना है। स्वामी विवेकानन्द ने यही कहा था- ''यदि शिक्षा देश प्रेम की प्रेरणा नहीं देती है तो उसको राष्ट्रीय शिक्षा नहीं कहा जा सकता।''

''ज्ञान प्राप्ति के कई साधन हैं जैसे अध्ययन, मनन, प्रयोग तथा पर्यटन। इनमें पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्राप्त करना ज्यादा सहज एवं सरल है। हजारों वर्षों से संचित अनुभवों का सम्प्रेषण पुस्तकों द्वारा ही संभव है। पुस्तकें ज्ञान को व्यवस्थित संकलन के रूप में संग्रहित कर भावी पीढ़ी तक पहुँचाने का सर्वोत्तम साधन है।'' व्यक्ति पुस्तकीय ज्ञान को जीवन में उतार कर समाज का श्रेष्ठ सहगामी बन सकता है उसका समाजीकरण होता है तथा नवीन विचारधारा तकनीक से परिचित होकर वह राष्ट्र निर्माण में प्रतिभागी बनता है। पुस्तकें व्यक्ति एवं समाज में परिवर्तन की क्षमता रखती हैं। बाल गंगाधर तिलक ने कहा था-'मैं नर्क में भी अच्छी पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि उनमें वह शक्ति है कि जहाँ वे होगी वहीं स्वर्ग बन जाएगा।'' वाल्तेयर भी राष्ट्र निर्माण में पुस्तकों का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि 'असभ्य राष्ट्रों को छोड़कर सम्पूर्ण विश्व में पुस्तकों का ही शासन है।' अर्थात ज्ञान की वाहक पुस्तकें नर्क को भी स्वर्ग एवं असभ्य को भी सभ्य बनाने की क्षमता रखती है। स्पष्ट है यदि आज के बच्चों में समाज का सुनागरिक बनने की भावना भरनी है तो हमें पुस्तकों के महत्त्व को स्वीकार करना होगा।

बालक मासूम, कोमल और आश्रित होते हैं लेकिन उनमें जिज्ञासा और कार्य के लिए सक्रियता भी पूरी होती है वे आशा व उमंग से परिपूर्ण होते हैं उनमें हमेशा ही प्रबल संभावनाएँ नजर आती हैं। बालक तो देश की थाती है। बालकों में अपार क्षमता है। शैशवावस्था से ही अगर बालकों में पाठ्यक्रम में इतर अध्ययन के लिए न केवल प्रेरित करना चाहिए अपितु अच्छी-अच्छी बाल पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित भी करना चाहिए। ये पुस्तकें काल्पनिक परियों, राक्षसों या उन्हें भ्रमित करने वाले कथानकों पर आधारित न हो बल्कि मानवीय गुणों, साहस, वैज्ञानिक वृत्तियों आदि पर केन्द्रित हो। शिक्षक का दायित्व है कि बालक के मन को टटोलें, उसके आनन्द के केन्द्र को ढूंढ़े और उसी के अनुरूप न केवल उन्हें रंग-बिरंगे चित्रों से सुसज्जित पुस्तकें उपलब्ध करवाएँ, बल्कि उस संदर्भ में उनसे बातें करें व उनकी जिज्ञासाओं को उभारकर उन्हें सन्तुष्ट करें। यदि बालकों को घर व शाला में इस तरह की मनपसंद पुस्तकें मिल जाए तो वे संभवतः टी.वी., मोबाइल आदि की ओर उन्मुख न हो। उनमें शैशवाकाल से ही पुस्तकों के प्रति मोह जागेगा जो उन्हें कालांतर में बहुत लाभ पहुँचाएगा। वे अपने जीवन के शाश्वत सवालों को अपने ढंग के समीकरण से हल करने के लायक बनेंगे तथा राष्ट्र के विकास में सही ढंग से अपनी भागीदारी निभाएँगे।

पुस्तकें मात्र निर्जीव कागज का पुलिंदा नहीं बल्कि वे विचार हैं चिंतकों के, जो सजीव हैं। इसी दिशा में एक प्रयास बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों के साथ भी किया जा सकता है जिसमें विषयाध्यापक अपनी पाठन-क्रिया में प्रतिष्ठित लेखकों के संदर्भ में इस प्रकार से गूंथ दे कि छात्रों को वे आनन्दित करें और उनमें यह लालसा जगाएँ कि वे उस लेखक से मित्रता करें, उनकी कृति को वे पुस्तकालय से ढूँढ़ निकालें।

अलमारियों में कैद पुस्तकें तरसती है उन हाथों को, जो उनको छूए, उल्टे, पुलटे, देखे और अपना साथी बनाए। वे आपकी प्रशंसा करेगी, मन ही मन आभार मानेगी और आपसे मौन प्यार करेगी। कब से तरस रही थी वे किसी प्रशंसक के लिए। वे देगी आपको ज्ञान, बुद्धि व नई ऊँचाइयाँ। सबसे महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि सब वह अपने भले के लिए नहीं हमारे भले के लिए होता है। पुस्तकें सच्ची मित्र है, पथ-प्रदर्शक है, गुरु हैं। सांसारिक मित्र धोखा दें सकते हैं, पुस्तकें कभी साथ नहीं छोड़ती हैं बल्कि आंतरिक खुशी देती हैं। चीनी कहावत है 'पुस्तक वह बगीचा है जिसे जेब में ले जाया जा सकता है।' पुस्तकों के सम्पर्क में रहने से आत्मशुद्धि होती है, मन में संचित व कुंठित मनोभाव वाष्पीकृत हो जाते है, मन में ताजगी का संचार होता है। पुस्तकें एकांत क्षणों की सर्वोत्तम साथी हैं। हमें अवसर देती है एक ही जन्म में विभिन्न अनुभवों के आस्वादन का।

विकसित देशों की प्रगति का एक प्रमुख कारण है वहाँ के नागरिकों की पढ़ने की प्रवृत्ति। इसीलिए आज प्रत्येक राष्ट्र बच्चों की शिक्षा पर समुचित निवेश कर रहा है। विश्व विकास की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा के स्तर का सीधा प्रभाव विकासशील या कम विकसित राष्ट्रों के उत्पादन तथा पूंजी की दर पर पड़ता है। कहते हैं कि विचारों के युद्ध में पुस्तकें अस्त्र है अतः पुस्तकों का चयन करते समय अच्छी एवं स्तर की पुस्तकों को ही ध्यान में रखना चाहिए और ऐसी पुस्तकें जो चारित्रिक हो, जीवन का निर्माण करने वाली हो, देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हो। अच्छे लेखकों की पुस्तकों ने करोड़ों लोगों के जीवन पथ को सौरभमय बनाया है। सैंकड़ों लोगों के अंधेरे दिलों में प्रकाश जगमगाया है। **संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं वे सभी जीवन भर एक विद्यार्थी की भाँति कुछ न कुछ नया सीखते ही रहे,** चाहे वे जेल में रहे या किसी आन्दोलन की रूपरेखा बनाने में मग्न। अतः पुस्तक व पुस्तकालय की महत्ता को समझते हुए शिक्षक को स्वयं अध्ययनशील रहते हुए अपने विद्यार्थियों को भी पुस्तक एवं पुस्तकालय के प्रति प्रेरित करते रहना चाहिए। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का यह वाक्य याद रखना आवश्यक है-'एक दीप दूसरे को प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी लौ से प्रज्वलित न होता रहे।' वही अभिभावक या शिक्षक यह कार्य कर सकेगा जो स्वयं पुस्तकों की वेदना से परिचित हो चुका हो।

व्याख्याता (हिन्दी)
रा.उ.मा.विद्यालय उदावास, झुंझुनूं

चिन्तन

निराशा और आशा

❒ रामधन मीना

हम निराशा और आशा दोनों की हकीकत को जान सके, ये कैसे संभव है, ये उन क्षणों में सम्भव है, जिन क्षणों में आप जरा समता में हो, तटस्थ अवस्था में हो, जब आपके भीतर-बाहर कहीं सन्तुलन है उन क्षणों में आप निराश मानसिकता का अध्ययन करें और एक आशाजनक मानसिकता का अध्ययन करें तो दोनों मानसिकता को अध्ययन करने पर यह समझ में आ जाएगा कि निराशा सत्य नहीं और आशा भी सत्य नहीं, उम्मीदें भी सत्य नहीं, उम्मीदों का टूटना भी सत्य नहीं, ये सब उस व्यक्ति को जिन्दगी में चलने के लिए उसके दिमाग को चलाने के लिए दिए गए उद्दीपन है या कह दो कि उसके साथ जुड़ी कुछ वैसाखियाँ है जिसके सहारे वो अपने जीवन की गति को तय कर रहा होता है, किन्तु वैसाखियाँ यानि परावलम्बन सत्य नहीं है, स्वावलम्बन सत्य है। खुद को समता में रखकर के अगर हम आजू-बाजू के लोगों का अध्ययन कर सकेंगे तो अपनी घटनाओं का अध्ययन करना भी आएगा दूसरे का अध्याय भी स्वाध्याय का निमित्त बन सकता है, लेकिन दृष्टि समतामय हो तो जिस समय समता हो उस क्षणों का किया गया अध्ययन स्वाध्याय बना देगा और फिर जब हमारे ऊपर से घटाएँ छँटने लगेगी, ऐसे कर्मों का उदय आएगा तब हम क्योंकि पहले निराशा आशा सत्य के तथ्य को हम खो चुके हैं तो हमें अपने भीतर भी उन सारे सूत्रों का अनुप्रयोग करने में मदद मिलेगी, हमे समझ आता है कि निराशाएँ सत्य नहीं, आशाएँ भी सत्य नहीं, ये उम्मीदें भी सत्य नहीं, किसी का अवलम्बन सत्य नहीं, इस दुनिया में परावलम्बन कभी शान्ति नहीं दे सकता, शान्ति अगर कही हैं तो स्वावलम्बन अवस्था में ही है, अस्वावलम्बी होना निःसन्देह कठिन है, क्योंकि जीव को आदत पड़ी हुए है शारीरिक रूप से भी और मानसिक रूप से भी हमेशा ही दूसरों पर दूसरों के कंधों पर अपना वजन रखने की, अपना सिर रखने की। इसलिए ये क्षण भी जब छिन जाते हैं तब आदमी निराशा के गर्त में डूब जाता है और कन्दर्प को जब आशा मिलती है तो आदमी उल्लास और उत्साह में चला जाता है किन्तु जीवन का सत्य यही है कि स्वावलम्बन ही जीवन है, अस्वावलम्बन का मतलब है अपनी योग्यता को जगाओ, अपनी योग्यता पर भरोसा करो। अल्लामा इकबाल का कथन है-

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि हर तकदीर से पहले खुदा
बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है?

अपने आपको अधिकाधिक योग्य बनाओ और फिर सद्भावना और विवेक से अपनी जिन्दगी को जियो यह स्वावलम्बन है। स्वावलम्बन हममें से हरेक व्यक्ति को होना ही होगा अगर हम स्वावलम्बी नहीं होते हैं तो हम सतत झूलों में झूलते हैं, ऊपर और नीचे आशा और निराशा के झूलों में कल्पना के झूले में इन झूलों से बाहर आओ और अपने भीतर एक शाँत अवस्था निर्मित करो। इस शांत अवस्था में अपने चारों ओर की घटनाओं को देखना, परखना सीखो खुद के अन्दर घट रही घटनाओं को भी देखना, परखना सीखो। यह जब स्वाभाविक जागेगा, स्वाभाविक जागने के साथ ही हम अपने जिन्दगी के महान चक्रव्यूहों से बाहर आ पाएँगे, चक्रव्यूह में हम सब हैं इनसे मुक्ति का रास्ता वो भी हमारे भीतर ही है वो विवेक से प्रगट होगा। उसे प्रगट करने में देरी न करें।

स्वावलम्बन और साम्य एक दूसरे के पूरक हैं। स्वावलम्बन से आत्मशक्ति प्राप्त होती है जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, उत्कृष्ट करने की ओर ले जाती है साम्यावस्था, विशेष तौर पर मनःस्थिति की सत और असत के बीच भेद करने की स्थिति उत्पन्न करती है यदि हममें अच्छे और बुरे कर्मों के बीच भेद करने की सामर्थ्य है तो सत्मार्ग पर चलकर स्वावलम्बन की शक्ति से स्वयं का, अपने परिवार का, समाज का, राष्ट्र का भला कर सकते हैं। जिस प्रकार वनों में उपजने वाले पौधे स्वावलम्बन के बल पर ऊँचाइयाँ प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार व्यक्ति भी अपने प्रयासों से ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य हासिल कर सकता है। बस भावना एक ही होनी चाहिए- 'मैं इसे कर सकता हूँ।'

वरिष्ठ अध्यापक (विज्ञान)
रा.मा.वि. सलेमपुरा, लालसोट, दौसा (राज.)-303511

ज जब-जब इंसान निराशा की गर्त में गिर जाता है और उसे ऐसा लगता है कि अब उसका अच्छा कुछ हो ही नहीं सकता क्योंकि लगातार इतना बुरा होता जा रहा है कि अच्छे होने की उम्मीद ही समाप्त हो गई है। उस निराशा के गर्त में डूबे हुए आदमी को कोई अच्छी बात कहे उसके लिए आशापरक, आशाजनक एक सपना उसके सामने रखे कि उस पर विश्वास करेगा, बहुत मुश्किल है वो विश्वास नहीं कर पाएगा। उसे ऐसा लगेगा कि तुम्हें क्या पता मेरा दर्द क्या है? तुम्हें कैसा लग सकता है कि मैं क्या महसूस कर रहा हूँ? और जो बुरे दिन मैं जी रहा हूँ वो बुरे दिन भगवान किसी को ना दे, लेकिन मैं जानता हूँ कि ये सारे दिन मुझे भोगने ही पड़ेंगे और ये जो तुम अच्छी बातें कर रहे हो न तुम इसलिए कर रहे हो कि तुम्हारा पेट भरा है, इसलिए कर रहे हो कि तुम्हें सुख मिले हैं, इसलिए कर रहे हो कि तुम किस्मत वाले हो और तुम मेरे सामने ऐसी बातें मत करो, क्योंकि ये सब बाते सत्य नहीं हो सकती है। निराशा के गर्त में डूबे हुए आदमी को हर आशा में भी निराशा दिखलाई पड़ती है उसे आशाजनक वक्तव्य पर कोई विश्वास नहीं होता और यही कारण है कि वह अपनी निराशा में और अधिक गहन से गहन डूबता चला जाता है। कभी-कभी कोई आशा की किरण उसके भीतर जरा सा प्रेम और विश्वास जगा भी देती है और फिर जैसे ही वो उस उम्मीद के सहारे आगे बढ़ता है तो उसका मन बहुत सारी अपेक्षाएँ पालना शुरू कर देता है। एक छोटी सी उम्मीद पूरी होने पर आदमी के जीवन में आदमी के मन में इतनी सारी आशाएँ जगा जाती है कि उसे लगता है कि अब सब पूरी हो जाएगी लेकिन फिर जब वो चलते हुए गिर जाता है, ठोकर खाता है, चोट मिलती है, पुनः और गहरे अविश्वास के साथ निराशा में डूबता चला जाता है और फिर उसे लगता है कि जो उसने बाते की, वह सब झूठी थी, उम्मीदें सत्य नही है, ऐसा व्यक्ति सबको नकारना शुरू कर देता है यही नकारात्मकता ही नरक है, दुःख है, इस नरक, इस दुःख, इस तनाव को हम अपने अनुभवों से ही निर्मित करते हैं फिर ये दुखद अनुभवों को ही पालते जाते हैं, बढ़ाते चले जाते हैं, दुःख, दुःख को बढ़ाता जाता है और आदमी दुःखों से बाहर ही नहीं निकल पाता है, इस प्रक्रिया का अन्त कहाँ, इस प्रक्रिया का अन्त कैसे हो सकता है? कि हम दुःखों से मुक्त हो सके, हम अपनी निराशाओं से बाहर आ सके।

चिन्तन

हमारा जीवन सफलता की ओर

❐ डॉ. महेन्द्र कुमार चौधरी

मानव जन्म, ब्रह्माण्ड की अनमोल उपलब्धि है। यह चिंतन का विषय है कि क्या हम इसका सदुपयोग कर रहे हैं? यदि हमें अपने लिए ही जीना होता तो परमात्मा ने हमें मनुष्य नहीं बनाया होता। उद्देश्य हीन मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यर्थ गवां देता है। दुःख उन्हीं के साथ रहता है जो कार्यशील नहीं होते। दुनिया में अच्छाइयाँ, बुराइयों से कई गुना अधिक है। सवाल यह है कि हम किसे जानने में अपना समय अधिक बिताते हैं। जो स्थिति बदलने योग्य नहीं है, उसे स्वीकार कर लो, लेकिन जो बदलने योग्य है, उसे नहीं बदलने योग्य मत समझो। जैसे हम बाहर से दिखना चाहते हैं, वैसे भीतर से भी बनें, इससे हम चरित्र-निर्माण में चूकेंगे नहीं। हम हमेशा अपनी तकलीफों को देखते रहते हैं, जरा उन तकलीफों को भी देख लें, जो औरों की है, और हमारी नहीं।

मानव के जीवन में कुछ बिंदु बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं, जैसे आत्म-चिंतन, सकारात्मक-चिंतन, दूरदर्शिता, कर्त्तव्यनिष्ठता, परिश्रमशीलता, सीखने की प्रवृत्ति आदि।

सफलता– सफल होना हर मनुष्य का अधिकार है। कुछ लोग ऐसा सोच रहे हैं कि हमारे तो भाग्य में सफल होना लिखा ही नहीं है, यह अपने आप के आगे स्वयं द्वारा बड़ी की गई काल्पनिक दीवार है। पहले हमें सकारात्मक चिंतन के द्वारा यह दीवार हटानी होगी। इस प्रसंग में एक उदाहरण देखें – ''हाथी का बच्चा जब छोटा होता है तो उसके पैर में मजबूत जंजीरें बाँध दी जाती है ताकि वह भाग न जाए, इन्सान के आधिपत्य में रहना सीखें, वह हाथी का बच्चा उस मजबूत जंजीर को तोड़ने की बहुत कोशिश करता है, लेकिन तोड़ नहीं पाता क्योंकि जंजीरें बहुत मजबूत होती हैं, बच्चा छोटा होता है। धीरे धीरे हाथी का बच्चा बड़ा होने लगता है और उसके पैरों में हल्की जंजीरें लगाई जाती है। जब वह हाथी बड़ा हो जाता है तब उसके पैर में केवल सामान्य रस्सी बाँधी जाती है, लेकिन अब वह तोड़ने का प्रयास ही नहीं करता, क्योंकि उसे लगता है कि इस रस्सी को मैं बचपन से नहीं तोड़ पाया, अब क्या तोड़ पाऊँगा? यही स्थिति मानव जीवन में भी सफलता की राह में बाधक बन जाती है।

सफलता क्या है? सफलता एक संतुलन है, जीवन के विभिन्न पहलुओं का जैसे कि

1. मनोवृत्तियों का आचरण के साथ,
2. इच्छाओं का उपलब्धियों के साथ,
3. व्यक्ति का परिवार और समाज के साथ,
4. मन का परिस्थितियों के साथ।

सामान्य भाषा में इतना ही कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति स्वयं अपने परिवार और समाज के प्रति ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी का पालन करते हुए अपने आप को अपनी सामान्य इच्छाओं की पूर्ति के लिए सक्षम बनाये रखता है, वह सफल है।

सफलता के लिए हमारे जीवन की तीन महत्त्वपूर्ण बातें हैं –

1. Dream अर्थात् सपने,
2. उनकी पूर्णता या प्राप्ति का लक्ष्य और
3. Date अर्थात् ये मुझे कब तक प्राप्त करने है, अगर हमारे सपनें बहुत बड़े हैं तो आवश्यकता होती है दृढ़-आत्मविश्वास, सकारात्मक चिंतन की आशाएँ।

कुछ उदाहरण देखें –

> ***बारिश की बूँदे भले ही छोटी हों, लेकिन उनका लगातार बरसना बड़ी नदियों का बहाव बन जाता है।***
>
> ***वैसे ही हमारे छोटे-छोटे लगातार प्रयास भी जिन्दगी में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।***

'एडीसन' महोदय, बचपन में लोगों से कहते थे कि मैं एक नया सूरज बनाऊँगा, क्योंकि यह उनका सपना था। लेकिन लोग उनकी इस बात पर हँसते थे। शायद लोग उन्हें पागल समझते थे। लेकिन उन्होंने एक हजार बार असफल होने पर फिर सफलता हासिल की। बल्ब का आविष्कार किया और प्रसिद्ध हो गए आज बल्ब के बिना जीवन की कल्पना कोई नहीं कर सकता।

'राइटबन्धु' जिनका सपना था कि मनुष्य आसमान की सैर कर सके। बचपन में लोगों से कहा करते थे कि मैं इन्सान को उड़ाऊँगा, लेकिन लोग इन्हें पागल समझकर इन पर हँसते थे लेकिन इनके कठिन परिश्रम का ही फल है कि आज हम वायुयान की सुखद यात्रा का आनंद लेते हैं।

यही कहानी 'जेम्स वाट' महोदय के जीवन की भी है, जिनके कठिन परिश्रम का फल हुआ 'भाप का इंजन'।

ये दुनिया बड़ी विचित्र है। लोगों पे हँसती है। जो लोग दुनिया की हंसी की परवाह नहीं करते, वे ही सफल होते हैं। अगर ये लोग दुनिया के द्वारा हँसी और अपमान देखकर अपना लक्ष्य छोड़ देते तो विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत नहीं बन पाते। लेकिन ये उनकी सकारात्मक सोच और कठिन परिश्रम का ही परिणाम है कि आज उनका नाम गौरव से लिया जाता है, परिश्रम करने से सफलता मिलती है। लेकिन परिश्रम सही कार्य में होना चाहिए क्योंकि पानी को मथने से घी नहीं बनता।

कभी भी गति और प्रगति को समझने में गलती न करें। जैसे खिलौने वाला घोड़ा अपनी ही जगह हिलता रहता है, यह गति है, प्रगति नहीं। जो रूकते हैं, वे कभी सफल नहीं होते, और जो कभी रूकते नहीं वे सदैव सफल होते हैं।

वरिष्ठ अध्यापक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय
वैशाली नगर, अजमेर

अनुकरणीय

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय शिवाजी पार्क अलवर (राजस्थान)

❒ हेमलता शर्मा

स्कूल का रिनोवेशन हुआ तो नामांकन तीन गुना बढ़ा। (पूर्व नामांकन 104, वर्तमान 315) राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय शिवाजी पार्क, अलवर शहर में स्थित है विद्यालय में वर्तमान में 315 का नामांकन है।

इस विद्यालय में मैंने पदोन्नति पश्चात 03 दिसम्बर 2016 को प्रधानाध्यापक (वरिष्ठ अ. हिन्दी) के रूप में कार्य ग्रहण किया था। इससे पूर्व मैं तृतीय श्रेणी अध्यापिका के रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बुर्जा, उमरैण में कार्यरत थी।

अगले दिन समय से स्कूल पहुँची तो देखा कि स्कूल समय में प्रांगण के कीचड़ में सुअर भी पड़े रहते हैं। पूरे परिसर में गंदगी का आलम था। पेयजल हेतु नल कनेक्शन तो था लेकिन अन्य कोई सुविधा नहीं थी। शौचालय नाम मात्र के वो भी जर्जर थे। दो कक्षा-कक्ष तो वर्षो से खोले ही नहीं गए थे जिन्हें खुलवाया गया तो उनकी स्थिति दयनीय थी। इसके अतिरिक्त एक कक्षा-कक्ष की छत गिराऊ स्थिति में थी जिसे हमेशा के लिए बंद कर रखा था। यूँ तो परिसर में कुल 9 कक्ष थे लेकिन सबकी छत टपकती थी और वर्षों से पुताई तक नहीं हुई थी। दीवारों पर सीलन के धब्बे थे। चारदीवारी नीची थी एवं जर्जर स्थिति में थी। विद्यालय में 104 का नामांकन था लेकिन उपस्थिति ना के बराबर ही रहती थी। स्टाफ में मेरे सहित 6 अध्यापिकाएँ थी। यह सब देखकर मुझे घबराहट सी होने लगी और लगातार स्कूल के बारे में सोचने लगी। सबसे पहले स्टाफ मीटिंग बुलाई और विद्यालय विकास और अच्छे माहौल के बारे में बात की और फिर एस एम सी की मीटिंग बुलाकर सबसे पहले मैंने स्वयं ने 11,000 रुपये निकाल कर स्टाफ को दिए तो स्टाफ सदस्यों ने भी 5,000 रुपये प्रति अध्यापक दिए। शाम को मैंने अपनी बड़ी बहन को ये सब बताया तो 5,000 रुपये उनसे लिए। फिर तो अपने रिश्तेदारों से भी राशि जुटाई। स्कूल का प्लान तैयार कराया और सबसे पहले चार दीवारी ऊँची कराई। जैसे ही विद्यालय में कार्य प्रारम्भ हुआ तो सर्व शिक्षा अभियान अलवर से 1.95 लाख रुपये की स्वीकृति रिपेयर हेतु मिल गई जिसमें सभी कमरों की छत की मरम्मत एवं अन्य कार्य कराए। धीरे-धीरे अन्य दानदाता भी सामने आए जिन्होंने नकद और सामान के रूप में मदद दी। ग्रीष्मकालीन अवकाश में स्काउट की मदद से शिविर लगाया जिसमें सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, नृत्य, संगीत, कम्प्यूटर सिखाया गया। इस दौरान अनेक दानदाताओं का आगमन विद्यालय में हुआ तो विद्यालय में लगभग सभी सुविधाएँ जुटा ली गई। एक कक्ष जिसकी छत जर्जर थी यू आई टी अलवर से वो छत हटाकर दोबारा डाली गई। विद्यालय को पंजाब नेशनल बैंक से 10 पंखे दिए गए, रोटेरी क्लब की ओर 4 कम्प्यूटर और प्रिन्टर दिया गया। हेवलस कंपनी द्वारा पर्याप्त मात्रा में शौचालय निर्मित कराए। माताश्री गोमती देवी ट्रस्ट द्वारा कम्प्यूटर का फर्नीचर दिया और पेयजल के स्थान पर शेड निर्मित कराई गई। आर डी एन सी मित्तल फाउंडेशन द्वारा विद्युत इनसीनरेटर दिया गया। अब सभी बालकों के लिए आकर्षक फर्नीचर, पेयजल और हाथ धोने की पूर्ण सुविधा, बच्चों को किड्स कोर्नर जिसमें प्ले एलीमेंट लग चुके थे। प्रांगण में प्रेयर स्थल को पक्का करा कर बेडमिंटन का कोर्ट बनाया गया। बरसात के पानी हेतु दो जगह रीचार्ज वेल बनाए गए साथ ही शिवाजी पार्क नाम के अनुरूप विद्यालय के नाम के साथ शिवाजी का चित्र और एक आकर्षक पार्क भी विकसित किया गया। सम्पूर्ण परिसर एवं भवन को रंग पेंट किया गया ओर शैक्षिक चित्र बनवाए गए यानि भवन को इस प्रकार तैयार किया कि भवन के प्रत्येक अवयव से बालक स्वयं सीख सकें। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को विशेष शौचालय और रेंप निर्मित कराया गया जिसकी रेलिंग भी इस तरह लगाई कि बच्चे टेलीफोन का खेल-खेल सकें। विद्यालय में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हुए दीवारों पर स्वच्छता से सम्बन्धित चित्र बनाए गए। पेयजल हेतु वाटर कूलर, फिल्टर, आर ओ सिस्टम, सेनेटरी नेपकिन वितरण हेतु स्वचालित मशीन लगाई गई। विद्यालय को दानदाता द्वारा एक बड़ी एल ई डी और लैपटॉप भी दिया गया। स्टाफ का स्वेच्छा से ड्रेस कोड भी निर्धारित किया गया जो अगले सत्र से पहनना था। अब विद्यालय नए रूप में नव प्रवेशी बालकों के स्वागत के रूप में तैयार था। प्रवेशोत्सव के दूसरे चरण में 19 जून 2017 को विद्यालय का पहला दिन था तो प्रवेश की लाइन लग गई। पहले सात दिवस में ही 40 बच्चों का नामांकन हुआ और कुछ ही दिनों में छात्र संख्या 250 से अधिक बढ़ गई और तीन माह बाद विद्यालय से तीन अध्यापिकाएँ स्थानांतरित/सेवानिवृत्ति से चली गई। अब एक अध्यापिका जो सेवानिवृत्ति के नजदीक थी। बीमारी के कारण लंबी छुट्टी पर गई और विद्यालय की शारीरिक शिक्षिका भी प्रतिनियुक्ति पर चली गई। विद्यालय में 250 से अधिक बच्चे होने के कारण स्कूल संचालन कठिन हो गया।

विद्यालय की एस एम सी अध्यक्ष की दो लड़की जो स्नातक की पढ़ाई कर रही थी उनकी मदद अध्यापक के रूप में ली गई। वर्ष पर्यंत विद्यालय का संचालन इसी प्रकार किया लेकिन परिश्रम के कारण विद्यालय पूरी तरह अनुशासन में आ गया। बाल संसद बनाई गई और बच्चों को प्रशिक्षित किया गया तो बाल संसद ने अपना दायित्व बखूबी निभाया अब बच्चे पूरे स्कूल का संचालन अपने आप करने लगे। सभी बच्चे साबुन से हाथ धोकर ही खाना खाते हैं और शौच के बाद साबुन से हाथ धोना नहीं भूलते हैं। विद्यालय परिसर की साफ सफाई का जिम्मा बाल ससंद का ही है। प्रति माह एस.एम.सी. और अभिभावकों की बैठक होती है।

विद्यालय को राज्यस्तरीय स्वच्छ पुरस्कार 2017 भी मिला है। वर्तमान में विद्यालय में मेरे स्वयं के सहित 6 अध्यापक कार्यरत हैं एवं नामांकन 315 है जो तीन गुना से ज्यादा की बढ़ोतरी है। अभी तीन शिक्षकों के पद रिक्त है। विद्यालय के बदले स्वरूप को देखने राज्य मुख्यालय से एवं अन्य जगह से अधिकारी आते हैं। विद्यालय में एक सुसज्जित आँगनबाड़ी है एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल रही है। प्रार्थना स्थलीय कार्यक्रम भी सुरुचि पूर्ण ढंग से होता है एवं प्रार्थना के समय बच्चों को प्रेरक प्रसंग एवं सामान्य ज्ञान की बातें सिखाई जाती है। इन सब कार्यों में मुझे स्टाफ, एस.एम.सी., दानदाताओं, अभिभावकों, बच्चों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों का विशेष सहयोग मिला है।

प्रधानाध्यापिका
रा.बा.उ.प्रा.वि., शिवाजी पार्क, अलवर (राज.)

शैक्षिक चिन्तन

आओं करें मौखिक अभिव्यक्ति मुखरित

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

हम अपने भावों और विचारों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार भाषा समस्त मानसिक क्रियाओं, मनोभावों तथा मनोवेगों की अभिव्यक्ति का साधन है। यह भी सत्य है कि भाषा का वरदान मानव मात्र को ही प्राप्त है और यह भी कहा जा सकता है कि समस्त मानवीय गुणों का विकास भाषा के द्वारा ही होता है।

बालक विद्यालय जाता है। इससे पूर्व वह परिवार और समाज के सम्पर्क में रहता है। इसी भाषाई परिवेश में बालक का विकास होता है। आचार्य दंडी ने भी माना कि यदि शब्द रूपी ज्योति संसार में प्रकाशित न होती तो यह सारा त्रैलोक्य अंधकार में डूब जाता।

भाषा अभिव्यक्ति के दो सशक्त माध्यम है। पहला लिखित, दूसरा मौखिक। विद्यालय के उचित वातावरण एवं परिवेश में बालक अभिव्यक्ति के उक्त दोनों माध्यमों में पारंगत हो सकता है। भाषा के लिखित एवं मौखिक दोनों रूपों से भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति की जा सकती है। किन्तु भाषा का लिखित रूप मनोभावों और उनकी तीव्रता को प्रकट करने में असमर्थ है। अतः मौखिक अभिव्यक्ति को पूर्ण अभिव्यक्ति माना जाता है। इसलिए भाषा शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति का विशेष महत्त्व है। यदि मौखिक अभिव्यक्ति का इतना ही महत्त्व है तो प्रश्न उठता है विद्यालय में बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को कैसे मुखरित करें?

मौखिक अभिव्यक्ति का तात्पर्य है अपने मन के विचारों तथा भावों को बिना किसी रूकावट के बोल कर प्रकट करना। मौखिक अभिव्यक्ति मन के विचारों तथा भावों के अनुकूल शब्द चयन से आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की कला है। अच्छा वक्ता उसे माना जाता है। जिसमें बोलने का उसका अपना प्रभावी अंदाज अथवा लहजा हो। वह स्वाध्यायी हो। विषय-विशेष का ज्ञाता हो। अपने भाषण अथवा वक्तव्य की बोध लघु कहानियाँ, चुटकले, शेर, शायरी प्रभावी कविता के अंश महापुरुषों की जीवनियों के अंश आदि हो। ताकि रोचकता बनी रहे और श्रोता मंत्र मुग्ध हो। सुनते रहे। अंत में अधिकांश श्रोता यही कहे- वाह! क्या भाषण दिया? मजा आ गया। यही है भाषण कला की विशिष्ट विशेषता। जिसे विद्यालयों में बालकों के साथ सामंजस्य बिठा कर उसे भाषण कला (मौखिक अभिव्यक्ति में पारंगत ही नहीं निष्णात बनाना भी है।)

बालक विद्यालय में भाषा शिक्षण एवं अन्य सहगामी प्रवृत्तियों के दौरान भाषा शिक्षक के सही मार्गदर्शन में सक्रिय रूप से भाग लेकर मौखिक अभिव्यक्ति में अपनी अहम भूमिका निभाते हुए पारंगत हो सकता है। यही पारंगत बालक आगे चलकर कुशल वक्ता, नेता, अभिनेता, अभिभावक, उद्घोषक, एंकर, मंच संचालक आदि बनकर अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकता है।

अक्सर विद्यालयों में देखने में आता है कि कुछ ही बालक मौखिक अभिव्यक्ति में प्रवीण होते हैं। जो कक्षा शिक्षण से लेकर प्रार्थना सभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम यथा वाद-विवाद, नाटक, संवाद, कहानी, कविता आदि में बाजी मार लेते हैं। कुछ बालक संकोची एवं दब्बू स्वभाव के होते हैं। उनके मन में भावों एवं विचारों के बादल उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं। किन्तु वे चाहकर भी अपने भावों को अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं। कालान्तर में वे ही बालक आगे चलकर हीन-भावना से ग्रसित होकर जहाँ बोलना चाहिए वहाँ चुपचाप बैठे रहते हैं। परिणामस्वरूप विकास की गति में वे पिछड़ जाते हैं। आवश्यकता है विद्यालय में ऐसे शर्मीले एवं संकोची बालकों को उचित अवसर, परिवेश एवं वातावरण देकर उसकी मौखिक अभिव्यक्ति को मुखरित करने की। उसमें छिपी अन्तर्निहित शक्तियों को प्रस्फुटित करने की। यह जिम्मेदारी सिर्फ भाषा शिक्षक की ही नहीं अपितु विद्यालय के समस्त शिक्षकों की है। इसके लिए मौखिक अभिव्यक्ति हेतु बालकों को समान अवसर दिए जाए। अभिव्यक्ति में कमी अथवा दोष पाएँ जाने पर डाँट-फटकार के बजाय सही सम्बलन एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है। बालक के अल्प प्रयास की सराहना की जाए। उसे शब्दों के माध्यम से अथवा पुरस्कारों से माध्यम से प्रोत्साहित किया जाए। इन प्रयासों से निश्चित रूप से बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को सशक्त बना कर उसे गति प्रदान की जा सकती है। यहाँ यह आवश्यक है कि बालको की अभिव्यक्ति को धैर्यपूर्वक सुना जाए।

विद्यालय में ऐसे कई अवसर आते हैं जिनके माध्यम से बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को प्राणवान बनाया जा सकता है। नई शिक्षा नीति में 'गतिविधि आधारित शिक्षण' का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि प्रत्येक बालक गतिविधि करें। शिक्षण में भाग लें। समुचित रूप से अपनी अभिव्यक्ति दे सके ताकि बालक का समग्र विकास हो सके।

बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए चित्र, चलचित्र, रिकॉर्डिंग आदि श्रव्य-दृश्य सामग्रियों की भी सहायता ली जा सकती है। विद्यालयों में कक्षा-शिक्षण के दौरान प्रश्न-उत्तर, अभ्यास, साँचा-अभ्यास, देखो और वर्णन करो अभ्यास, वार्तालाप अभ्यास, कल्पना धारित (कल्पनाजन्य विषय पर विचार प्रकट करने का) अभ्यास एवं प्रार्थना सभा तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के द्वारा यथा कहानी, कविता, नाटक, चुटकलें, अन्त्याक्षरी, वाद-विवाद, आशुभाषण आदि के द्वारा बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति को शनैः-शनैः उचित अवसर देते हुए विकसित किया जा सकता है।

मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व को निम्न राजस्थानी कहावत से प्रतिपादित किया जा सकता है।

बोले उणरी तो ज्वार ई बिकी जावे
अर नी बोले उणरा तो भुगड़ाई नी बिकै।।

देखा मौखिक अभिव्यक्ति का कमाल। तो आइए आज ही दृढ़ निश्चय करें कि हम अपने बालकों की मौखिक अभिव्यक्ति के लिए जी जान लगाकर समर्पित भाव से उनका सर्वांगीण विकास कर उन्हें सुनागरिक बनाएँ।

प्रधानाध्यापक (सेवानिवृत्त)
देवेन्द्र टॉकीज के पीछे, छोटी सादड़ी (राज.)-312604
मो: 9460607990

नैतिक शिक्षा

मनुष्य की मनुष्यता

❒ मंजू मीणा

मनुष्य का जीवन तथा उसकी सुन्दर एवं मजबूत देह प्रकृति की अनुपम देन है। मानव जीवन इस संसार की अनमोल निधि है। जन्म, मरण तथा परण इस दुनिया का कटु सत्य है जो निश्चित तिथि तथा समय पर ही होते हैं अर्थात् मनुष्य का जन्म लेना पूर्व निर्धारित होता है और उसका परिणय दिन यानि शादी होना भी पूर्व में ही विधि द्वारा तय कर दिया जाता है और तीसरा मरण अर्थात् मौत जो एक पल के लिए भी देरी नहीं करती है। वो भी अपने नियम के अनुसार पहले से ही तय होती है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि मनुष्य के जीवन की रूप रेखा उस सर्वशक्तिमान ईश्वर ने पहले से ही तय कर रखी है कि किस-किस व्यक्ति को क्या-क्या करना है तथा कब तक इस पृथ्वी लोक पर रहना है।

इस बात को हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि हमारा शरीर नश्वर है। यह कभी भी नष्ट हो सकता है। यह जरूरी नहीं है कि हर व्यक्ति की उम्र सौ वर्ष से पहले ही वह किसी भी उम्र में इस दुनिया को अलविदा कह सकता है। उसे खुद को मालूम नहीं होता कि 'मुझे कितनी साँसें उस विधाता ने देकर भेजी है। इसलिए हमें कभी भी अपने समय को बर्बाद नहीं करना चाहिए। हमारा जो कर्म है उसे पूर्ण निष्ठा तथा ईमानदारी के साथ करना चाहिए।

एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। बच्चे प्रेम के भूखे होते हैं, उनके साथ कठोर तथा निन्दनीय व्यवहार तथा कार्य नहीं करना चाहिए। गुरु-शिष्य गरिमा को बेदाग रखना चाहिए। भले ही एक शिक्षक के विद्यार्थी नासमझ तथा मासूम होते हैं, मगर एक शिक्षक तो समझदार तथा बुद्धिमान होता है। उसे ईश्वर का रूप समझा जाता है। इसलिए एक शिक्षक और एक शिक्षार्थी दोनों को ही अपनी-अपनी मर्यादा में रहना चाहिए। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो ये अपने समाज को आगे बढ़ने तथा सुयोग्य नागरिक बनने तथा बनाने में अपनी पूर्ण भूमिका नहीं निभा पाएँगे और इस समाज पर एक बोझ के रूप में जाने जाएँगे और ऐसे व्यक्तियों का जीवन निरर्थक समझा जाएगा। अतः हमें अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

हमारा जीवन और जन्म दोनों सार्थक हो इसके लिए हमें नियमित रूप से उस परमपिता परमेश्वर का ध्यान और स्तुति करनी चाहिए। अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का समुचित उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की हर परिस्थिति का सामना सहज होकर करना चाहिए और यह मानकर चलना चाहिए कि स्थिति और परिस्थिति हमेशा एक जैसी नहीं रहती इसलिए हर परिस्थिति में शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक बल का समुचित उपयोग करना चाहिए।

रहीमदास जी का एक दोहा भी है-

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून।।

इस दोहे का भावार्थ इस प्रकार से है- रहीमदास जी कहते है- यहाँ पानी को तीन अर्थो में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम जी कहते है कि मनुष्य को हमेशा विनम्र (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है। जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीमदास जी का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यहार है।

हटा दो सब बाधाएँ मेरे पथ की।
मिटा दो आशंकाएँ सब मन की।।
जमाने को बदलने की शक्ति को समझो।
कदम से कदम मिला कर चलने दो मुझको।।

विनम्रता और सज्जनता व्यक्ति का प्रमुख गुण माना जाता है। अतः हमें इस गुण को अवश्य अपनाना चाहिए।

व्यक्ति को हमेशा प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। इससे मन तथा तन दोनों स्वस्थ रहते है। मानव जीवन तथा मनुष्यता के कुछ महत्त्वपूर्ण उद्देश्यः-

- हमें हमेशा सहयोग तथा सरोकार की भावना के साथ कार्य करना चाहिए।
- हमेशा सतकर्मों में विश्वास करना चाहिए बाह्य आडम्बरों में नहीं।
- क्रोध, ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना से हमेशा दूर रहना चाहिए।
- व्यक्ति को अपने पद, प्रतिष्ठा तथा सम्मान पर कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए।
- हमेशा जाग्रत तथा तत्परता के गुण को जीवन में अपनाना चाहिए।
- अपने माता-पिता तथा गुरु द्वारा किए गए उपकारों को कभी नहीं भूलना चाहिए।
- अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का हमेशा पालन करना चाहिए।
- हमेशा सादा जीवन उच्च विचार रखने चाहिए।
- बुजुर्गों तथा असहायों की हर संभव मदद करनी चाहिए।
- अपने देश तथा राष्ट्र को आगे बढ़ाने में हर संभव प्रयास करना चाहिए।
- प्राकृतिक सम्पदा तथा पर्यावरण का संरक्षण करना चाहिए।

इस प्रकार संसार के समस्त मानव जाति को अपने अथक प्रयास तथा हरसंभव प्रयत्न के साथ अपना समस्त जीवन अच्छे कार्यों तथा सेवा कार्यों में बिताना चाहिए ताकि हमें अपने जीवन में मानव होने की आत्म संतुष्टि तथा आत्म ज्ञान की जानकारी प्राप्त हो सके।

अध्यापिका
रा.उ.मा.वि. आभावास,
श्रीमाधोपुर सीकर (राज.)

रपट

निदेशक का स्काउट गाइड ने किया स्वागत

❒ मान महेन्द्र सिंह भाटी

13 फरवरी 2020, बीकानेर। राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय बीकानेर के स्काउट गाइड पदाधिकारियों ने आज 13 फरवरी 2020 को निदेशक माध्यमिक शिक्षा बीकानेर सौरभ स्वामी का स्वागत किया गया। राज्य मुख्यालय जयपुर से हेडक्वार्टर कमिश्नर प्रशिक्षण विनोद शर्मा ने स्कार्फ पहनाकर अभिनन्दन किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त मान महेन्द्र सिंह भाटी ने स्मृति चिह्न भेंट किया। मण्डल सचिव देवानन्द पुरोहित ने सत्र 2018-19 एवं 2019 की उपलब्धियों की स्मारिका प्रस्तुत करते हुए आगामी गतिविधियों की जानकारी दी। हेडक्वार्टर कमिश्नर विनोद शर्मा ने राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड की वर्तमान गतिविधियों की जानकारी देते हुए निदेशक महोदय को अवगत कराया कि राजस्थान स्काउटिंग के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। बीकानेर के मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र एवं अन्य केन्द्रों पर मण्डल से लेकर राष्ट्र स्तर पर अनेकों शिविरों एवं शिक्षा विभाग की अनेकों गतिविधियों का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों युवा लाभान्वित होते है।

सौरभ स्वामी ने स्काउट गाइड पदाधिकारियों को स्काउट गाइड संगठन की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित की एवं स्काउट गाइड गतिविधियों के सुचारू संचालन में हर संभव सहयोग की बात कही। इस अवसर पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त संतोष निवार्ण, सी. ओ. स्काउट बीकानेर जसवन्त सिंह राजपुरोहित, सी. ओ स्काउट झुंझुनूं महेश कालावत, सी. ओ. गाइड बीकानेर ज्योतिरानी महात्मा, सी. ओ गाइड श्रीगंगानगर मोनिका यादव, सहायक लीडर ट्रेनर घनश्याम स्वामी, सुगनाराम चौधरी, स्काउटर सुरेन्द्र विजय आदि उपस्थित रहे।

वॉल कलाईम्ब एवं एडवेंचर प्रशिक्षण शिविर– राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय बीकानेर के तत्वाधान में आयोजित वॉल कलाईम्ब एवं एडवेंचर प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ आज सोमवार को किया गया। मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र बीकानेर पर दिनांक 10 से 14 फरवरी तक आयोज्य शिविर में महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान के 45 संभागीयों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उद्घाटन अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय पर्वतारोही मगन बिस्सा एवं डॉ. सुषमा बिस्सा, मण्डल चीफ कमिश्नर डॉ. विजयशंकर आचार्य तथा मण्डल सचिव देवानन्द पुरोहित उपस्थित रहे। मगन बिस्सा ने अपने पर्वतारोहण अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि जीवन की हर कठिनाई को एक एडवेंचर मानकर विजय प्राप्त करनी चाहिए। डॉ. सुषमा बिस्सा ने इस खेल की व्यापकता का परिचय देते हुए कहा कि बीकानेर में इस प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मानकों से युक्त वॉल पर अभ्यास करते हुए इस क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को निखारें।

डॉ. विजयशंकर आचार्य ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविरों को लगातार आयोजित किया जाएगा। जिससे अधिकाधिक युवा लाभान्वित हो सके। शिविर संचालक एवं सहायक राज्य संगठन आयुक्त स्काउट मान महेन्द्र सिंह भाटी के अनुसार पाँच दिवसीय शिविर में संभागी वॉल कलाईम्ब प्रशिक्षण के इतर डेजर्ट सफारी, पैरासेलिंग, पिस्टल शूटिंग, जिपलाइन, टायर वॉल, आर्चरी आदि खेलों के साथ स्थानीय स्थलों में विश्व प्रसिद्ध करणी माता मंदिर, जूनागढ़ फोर्ट आदि का भ्रमण करवाया गया। कैम्पफायर एवं अन्य केन्द्र पर उपलब्ध साहसिक गतिविधियों में सहभागिता की। तृतीय दिवस संभागियों ने पैरासैलिंग एवं डेजर्ट बाइक के साथ रेतीले धोरों में साहसिक खेलों का लुत्फ उठाया। पर्वतारोही मगन बिस्सा एवं डॉ. सुषमा बिस्सा के नेतृत्व में पैरासैलिंग करते हुए गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान के शिविर प्रतिभागी रोमांचित हुए। साथ ही राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में ऊँटों के प्रति अपनी जिज्ञासाओं का निवारण किया। चतुर्थ दिवस को हैडक्वार्टर कमिश्नर (प्रशिक्षण) राज्य मुख्यालय विनोद शर्मा ने शिविर निरीक्षण किया। श्री शर्मा ने साहसिक गतिविधियों के संबंध में वार्ता प्रस्तुत की एवं कहा कि बीकानेर मण्डल में साहसिक गतिविधियों के संबंध में यह पहल अच्छी है और वॉल कलाईम्ब के साथ डेजर्ट सफारी आदि रोमांचक संभागियों की स्मृतियों में रहेगा।

पंचम दिवस समापन समारोह

स्काउटिंग स्वयं एक एडवेंचर- स्वामी वॉल कलाईम्ब एवं एडवेंचर शिविर का समापन

बीकानेर 14.02.2020- राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय बीकानेर के तत्वाधान में आयोजित वॉल कलाईम्ब एवं एडवेंचर शिविर के शुक्रवार को हुए समापन समारोह में संभागियों को संबोधित करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक सौरभ स्वामी ने कहा कि स्काउटिंग एक जीवन शैली है जो एडवेंचर से भरपूर है। बालक बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास में सहशैक्षणिक गतिविधियाँ आवश्यक है। शिविर बच्चों में साहस एवं आत्मविश्वास को मजबूत बनाते है तथा किसी भी प्राप्ति के लिए लक्ष्य बनाना जरूरी है।

10 से 14 फरवरी तक आयोज्य एडवेंचर शिविर के समापन अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर विमला मेघवाल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भारत स्काउट व गाइड एवं अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी सुनील बोडा उपस्थित रहे एवं अध्यक्षता मण्डल चीफ कमिश्नर डॉ. विजयशंकर आचार्य ने की। श्री आचार्य ने कहा कि भविष्य में भी राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड इस प्रकार के एडवेंचर शिविरों का आयोजन करता रहेगा जिसमें स्काउट गाइड के साथ अन्य युवा भी सहभागिता कर सकेंगे।

शिविर के संभागियों ने गार्ड ऑफ ऑनर के साथ अतिथियों को अभिनन्दन किया।

डॉ. विजयशंकर आचार्य ने स्कार्फ पहनाकर स्वागत किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त मान महेन्द्र सिंह भाटी ने बताया कि उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात के संभागियों ने अपने शिविर अनुभव व्यक्त किए। शिविर में चार राज्यों के 41 संभागियों ने वॉल कलाईम्ब, जिपलाइन, ब्रिज, टायरवॉल, पैरासेलिंग, डेजर्ट ट्रेकिंग, फास्ट ट्रेक, टायर टनल आदि साहसिक गतिविधियों में भाग लिया।

शिविर के उत्कृष्ट कार्यों हेतु संभागियों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड मण्डल मुख्यालय द्वारा एक दिवसीय कम्यूनिटी डवलपमेंट सेमीनार का आयोजन भी मण्डल प्रशिक्षण केन्द्र पर शुक्रवार को किया जिसमें बीकानेर जिले के विभिन्न विद्यालयों के स्काउट, गाइड रोवर रेंजर एवं वयस्क लीडर ने सहभागिता की। प्रधानमंत्री शील्ड प्रतियोगिता, उपराष्ट्रपति शील्ड प्रतियोगिता एवं सामुदायिक सेवा से संबंधित वार्ताएँ सी.ओ. गाइड ज्योतिरानी महात्मा एवं सी.ओ. स्काउट बीकानेर जसवन्त सिंह राजपुरोहित ने प्रस्तुत की।

प्रशिक्षण में सी. ओ. स्काउट बीकानेर, जसवंत सिंह राजपुरोहित, सी. ओ. स्काउट झुंझुनूं महेश कालावत, सी. ओ. गाइड श्रीगंगानगर मोनिका यादव, प्रदीप कुमार, यश शर्मा, सोहन गोदारा, तुषार कामरा, भागीरथ तंवर, रामानन्द आजाद आदि द्वारा सहयोग किया गया।

सहायक राज्य संगठन आयुक्त
राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड,
डूंगर कॉलेज के पास, सागर रोड, बीकानेर
मो. 8003097161

आदेश-परिपत्र : मार्च, 2020

1. **समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन उपरान्त उपचारात्मक शिक्षण की सुनिश्चितता बाबत।**
2. **समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में दिनांक : 03.02.2020 से 12.03.2020 की समयावधि में आयोज्य 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के सुचारू आयोजन हेतु प्रभावी मोनिटरिंग बाबत।**
3. **17 दिसम्बर 2018 के बाद दी गई नियुक्तियों की सूचना निर्धारित प्रपत्र में भिजवाने बाबत।**
4. **समर्पित अवकाश के नकद भुगतान एवं शेष अवकाश के नकद भुगतान में पारदर्शिता एवं शुद्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।**

1. समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन उपरान्त उपचारात्मक शिक्षण की सुनिश्चितता बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/324 दिनांक : 05.02.2020 ● समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान। ● विषयः समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के उत्तर पुस्तिका मूल्यांकन उपरान्त उपचारात्मक शिक्षण की सुनिश्चितता बाबत। ●प्रसंग : समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 03.02.2020।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक निर्देश पत्र के अनुवर्तन में समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 'प्री बोर्ड परीक्षा-2020' की उत्तर पुस्तिकाओं के तत्काल मूल्यांकन उपरान्त क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अग्रांकित निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें:-

1. कक्षा-10 एवं 12 की प्री बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट समस्त विद्यार्थियों को सम्बन्धित विषयाध्यापकों द्वारा दिनांक : 13 एवं 14 फरवरी, 2020 को तत्दिवस परख समापन के उपरान्त प्री बोर्ड की उत्तरपुस्तिकाओं का अवलोकन कराया जाए।
2. दिनांक : 15 फरवरी, 2020 (शनिवार) को मध्यान्तर से पूर्व परख का आयोजन कर लिया जाए। मध्याह्न पश्चात विशेष PTM का आयोजन किया जाए, जिसमें कक्षा-10 एवं 12 के समस्त विद्यार्थियों के अभिभावकों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए।
3. उक्त PTM में प्री बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थी द्वारा प्रदर्शित लब्धि के आधार पर आगामी बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थी के शैक्षिक स्तर उन्नयन की सुनिश्चितता हेतु संस्थाप्रधान एवं विषयाध्यापकों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी एवं अभिभावक के साथ सार्थक विमर्श किया जाकर काठिन्य बिन्दुओं के निराकरण हेतु ठोस कार्ययोजना निर्मित की जाए।
4. संस्थाप्रधान द्वारा समस्त अभिभावकों एवं विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा से सम्बन्धित शैक्षिक सामग्री, विषयवार बैंक एवं विगत वर्षों की बोर्ड परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों की स्केन उत्तर पुस्तिकाओं की विभागीय वेबसाइट एवं शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्धता से अवगत करवाए एवं उक्तानुरूप प्रश्न पत्र हल करने में इनकी उपादेयता के दृष्टिगत उपयोग में लेने हेतु प्रेरित करें।
5. प्री-बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आधार पर न्यून परिणाम वाले विद्यालयों का चयन कर काठिन्य से सम्बन्धित विषयों/इकाईयों/बिन्दुओं के अध्यापन हेतु उत्कृष्ट परिणाम वाले समीपस्थ विद्यालयों के सम्बन्धित विषयाध्यापकों को मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से समन्वय उपरान्त 15 दिवस शिक्षण व्यवस्थार्थ लगाया जाकर काठिन्य निवारण की सुनिश्चितता कराए।
6. प्री बोर्ड परीक्षा में अपेक्षानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पाने वाले कक्षा-10 एवं 12 के चिह्नित विद्यार्थियों को परीक्षा तैयारी अवकाश के दौरान बोर्ड पैटर्न एवं ब्ल्यू प्रिंट के अनुरूप अतिरिक्त कक्षाओं में उपचारात्मक शिक्षण/सुपरवाइज्ड स्टडी द्वारा अधिगम स्तर उन्नयन की सुनिश्चितता कराए।

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की समयबद्ध पालना एवं क्रियान्विति सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित की जावे।

● **(हिमांशु गुप्ता)** आई.ए.एस. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में दिनांक : 03.02.2020 से 12.03.2020 की समयावधि में आयोज्य 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के सुचारू आयोजन हेतु प्रभावी मोनिटरिंग बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ●क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/निप्र/नवाचार/2017-19/316 दिनांक : 31.01.2020 ●समस्त संभागीय संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा। समस्त मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा अभियान। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक, समस्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं ब्लॉक संदर्भ केन्द्र प्रभारी, समग्र शिक्षा अभियान।●विषयः समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में दिनांक : 03.02.2020 से 12.03.2020 की समयावधि में आयोज्य 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के सुचारू आयोजन हेतु प्रभावी मोनिटरिंग बाबत। ● प्रसंगः समसंख्यक निर्देश पत्र दिनांक : 28.01.2020

उपर्युक्त विषयान्तर्गत इस कार्यालय के पूर्व प्रेषित प्रासंगिक पत्र में प्रदत्त निर्देशों के अनुवर्तन में लेख है कि क्षेत्राधिकार में 'प्री-बोर्ड परीक्षा-2020' के सुचारू एवं निर्बाध आयोजन हेतु विभिन्न स्तरों पर अग्रांकित निर्देशानुसार समयबद्ध क्रियान्विति सुनिश्चित करावें:-

1. **मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालयः-** CBEO द्वारा प्रतिदिन प्री-बोर्ड परीक्षा समापन के तत्काल पश्चात क्षेत्राधिकार के समस्त माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्थाप्रधानों से तत्दिवस कक्षा-10 एवं 12 में निर्धारित विषयों की प्री-बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट हुए विद्यार्थियों की विद्यालयवार संख्या की अवगति प्राप्त कर संलग्न प्रारूप-01 में कार्यालय छोड़ने से पूर्व सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक के जरिए मेल आवश्यक रूप से सूचना प्रेषित की जाएगी। CBEO कार्यालय में पदस्थापित ACBEO-II उक्त सूचना के नित्यप्रति समेकन एवं तदुपरान्त समयबद्ध प्रेषण हेतु उत्तरदायी होंगे।
2. **जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक कार्यालयः-** वर्तमान में समस्त DEO(HQ)-SEC कार्यालयों में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की प्रायोगिक परीक्षाओं हेतु संचालित नियंत्रण कक्ष प्रभारी द्वारा जिला क्षेत्राधिकार के समस्त CBEO कार्यालयों से प्रारूप-01 में प्राप्त ब्लॉकवार सूचना समेकित कर संलग्न प्रारूप-02 में सम्बन्धित संभागीय संयुक्त निदेशक कार्यालय को तत्दिवस प्रेषित की जाएगी। DEO(HQ)-SEC कार्यालय में पदस्थापित ADEO (ACADEMIC) उक्त सूचना सम्प्रेषण हेतु उत्तरदायी होंगे। जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक द्वारा प्रतिदिन वांछित सूचना प्रेषण की प्रभावी मोनिटरिंग की जाएगी।
3. **मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालयः-** समस्त CDEO कार्यालयों में पदस्थापित सहायक निदेशक, जोकि 'बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्य योजना-2020' के सम्पूर्ण जिले में क्रियान्वयन हेतु भारसाधक अधिकारी के रूप में कार्य निष्पादित कर रहे हैं, उक्त प्री-बोर्ड परीक्षा के सम्पूर्ण जिले में निर्विघ्न संचालन हेतु नियमित पर्यवेक्षण एवं प्रबोधन करते हुए समस्त CBEO एवं DEO(HQ)-SEC के मध्य समुचित समन्वयन का कार्य सम्पादित करेंगे। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त प्री-बोर्ड परीक्षा आयोजन के संबंध में जिला क्षेत्राधिकार के समस्त अधीनस्थ अधिकारियों एवं संस्थाप्रधानों को यथावश्यक सम्बल प्रदान किया जाएगा।
4. **संभागीय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा) कार्यालयः-** RANGE JD कार्यालय द्वारा अधीनस्थ जिला कार्यालयों से प्राप्त प्री-बोर्ड परीक्षा में प्रविष्ट छात्रों की कक्षावार एवं विषयवार प्राप्त सूचना का समेकन उपरान्त संलग्न प्रारूप-03 में विवरण आगामी दिवस प्रातः 11 बजे तक इस कार्यालय की ई-मेल आई डी secondarydd2@gmail.com पर आवश्यक रूप से प्रेषित किया जाएगा। RANGE JD कार्यालय में पदस्थापित शैक्षिक प्रकोष्ठ प्रभारी अधिकारी उक्त सूचना के नियमित एवं समयबद्ध सम्प्रेषण हेतु उत्तरदायी होंगे।

समस्त सम्बन्धितों द्वारा उपर्युक्त निर्देशों की समयबद्ध पालना एवं क्रियान्विति सर्वोच्च प्राथमिकता से करवाई जानी सुनिश्चित की जावे।

● **(मुकेश कुमार शर्मा)** उप निदेशक (माध्यमिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. 17 दिसम्बर 2018 के बाद दी गई नियुक्तियों की सूचना निर्धारित प्रपत्र में भिजवाने बाबत।

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा/माध्य/योजना-7/सीएमआईएस/2019-20 दिनांक 17.01.2020 ● समस्त संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा, समस्त संभाग ● विषयः- 17 दिसम्बर 2018 के बाद दी गई नियुक्तियों की सूचना निर्धारित प्रपत्र में भिजवाने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार के निर्देशानुसार सीएमआईएस पोर्टल पर 17.12.18 के बाद दी गई समस्त नियुक्तियों (पदवार) की सूचना निर्धारित प्रपत्र में प्रतिमाह अपलोड व अद्यतन की जानी अनिवार्य है।

अतः इस क्रम में आपको निर्देशित किया जाता है कि अपने संभाग में शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 17.12.18 से आज तक दी गई समस्त नियुक्तियों की (पदवार) सूचना निर्धारित प्रारूप (संलग्न) में प्रत्येक माह की 11 व 26 तारीख तक जरिये ई-मेल rspedu2@gmail.com को भेजते हुए एक प्रति secyojana@gmail.com को भी भिजवाना सुनिश्चित करें। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता देवें विलम्ब की स्थिति में आप व्यक्तिशः जिम्मेवार होंगे।

● **(हिमांशु गुप्ता)** आई.ए.एस निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

प्री-बोर्ड परीक्षा-2020

प्रारूप- 01

कार्यालय : मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ...

परीक्षा दिनांक :......................

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	विषय	उच्च माध्यमिक परीक्षा						माध्यमिक परीक्षा			
			प्रथम पारी		द्वितीय पारी		योग		द्वितीय पारी		योग	
			पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी

प्री–बोर्ड परीक्षा–2020

प्रारूप– 02

कार्यालय : जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)–माध्यमिक......................

परीक्षा दिनांक :.....................

क्र. सं.	ब्लॉक	विद्यालयों की संख्या			विषय	उच्च माध्यमिक परीक्षा						माध्यमिक परीक्षा			
		उच्च माध्यमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	योग		प्रथम पारी		द्वितीय पारी		योग		द्वितीय पारी		योग	
						पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी

प्री–बोर्ड परीक्षा–2020

प्रारूप– 03

कार्यालय : संभागीय संयुक्त निदेशक (स्कूल शिक्षा),...................

परीक्षा दिनांक :.....................

क्र. सं.	जिला	विद्यालयों की संख्या			विषय	उच्च माध्यमिक परीक्षा						माध्यमिक परीक्षा			
		उच्च माध्यमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	योग		प्रथम पारी		द्वितीय पारी		योग		द्वितीय पारी		योग	
						पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी	पंजीकृत विद्यार्थी	प्रविष्ट विद्यार्थी

CMIS Portal पर प्रक्रियाधीन भर्तियों की प्रगति रिपोर्ट अपडेट करने हेतु निर्धारित प्रपत्र

Name of Department :

Recruitment Institution		Name of Post*	
Level in Pay Matrix*		Recruitment Agency*	
Grade Pay*		Website URL	
Number of Poster for Recruitment*		Recruitment Status	
Date of Sending Requisition to Recruitment Institution		Date of Advertisement	
Advertisement Number		Date of Declaration of Pre Exam Result	
Date of Pre Examination		Date of Declaration of Mains Exam Result	
Date of Mains Examination		Date of Declaration of Typing Exam Result	
Date of Typing Examination		Date of Completion of Interview	
Date on which final list of Candidates received from Recruitment Institiution			
Remarks (if any)			

Vacancy Detail Part-I

SN	Total Posts	TSP							Total TSP Posts	NON TSP							Total Non TSP Posts
		Gen	SC	ST	OBC	Saharis	MBc	EWS		Gen	SC	ST	OBC	Saharis	MBc	EWS	
1																	

Vacancy Detail Part-II

SN	TSP								NON TSP							
	Gen Women	Widow	Divorced	Total Women	Specially Abled	Ex Servicemen	Non Gazetted Employee	Sports Quota	Gen Women	Widow	Divorced	Total Women	Specially Abled	Ex Servicemen	Non Gazetted Employee	Sports Quota
1																

Appointment Detail Part-I

SN	Order Number	Order Date	No. of Appointment Given	TSP							Total TSP Posts	NON TSP							Total None TSP Posts	Remarks
				Gen	SC	ST	OBC	Saharis	MBc	EWS		Gen	SC	ST	OBC	Saharis	MBc	EWS		
1																				

Appointment Detail Part-II

SN	Order No./ Date	TSP								Total TSP Posts	Non TSP								Total Non TSP Posts
		Gen Women	Widow	Divorced	Total Women	Specially Abled	Ex Servicemen	Non Gazetted Employee	Sports Quota		Gen Women	Widow	Divorced	Total Women	Specially Abled	Ex Servicemen	Non Gazetted Employee	Sports Quota	
1																			

हस्ताक्षर सक्षम अधिकारी

4. समर्पित अवकाश के नकद भुगतान एवं शेष अवकाश के नकद भुगतान में पारदर्शिता एवं शुद्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः- शिविरा-माध्य/बजट/बी-4/25577/2019-20/ दिनांक 25.02.2020 ● समस्त आहरण वितरण अधिकारी स्कूल शिक्षा विभाग, राजस्थान ● विषयः- समर्पित अवकाश के नकद भुगतान एवं शेष अवकाश के नकद भुगतान में पारदर्शिता एवं शुद्धता सुनिश्चित किए जाने के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, श्रीगंगानगर कार्यालय में 37.38 करोड़ के सेवानिवृत्ति पर देय बकाया उपार्जित अवकाश के नकद भुगतान के गबन प्रकरण में निदेशक निरीक्षण विभाग राजस्थान, जयपुर एवं आंतरिक जाँच दल प्रारम्भिक शिक्षा द्वारा की गई जाँच में उपार्जित अवकाश के नकदीकरण एवं राजस्थान सेवा नियम के नियम 92(ब) के प्रावधानान्तर्गत विश्रामकालीन अवकाशों के उपभोग से वंचित किए जाने के एवज में अर्जित अवकाशों के सम्बन्ध में अनियमितता सहित अन्य बिन्दु भी उजागर हुए हैं। विभाग के अधीनस्थ कार्मिकों/शिक्षकों के उपार्जित अवकाश के लेखों का उचित एवं नियमानुसार लेखांकन भी कार्यालयों एवं विद्यालयों द्वारा नहीं किया जा रहा है, जिसके कारण ऐसी गंभीर वित्तीय अनियमितताएँ एवं गबन होने जैसी संभावनाएँ बनी रहती हैं। अतः प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा के समस्त अधीनस्थ आहरण-वितरण अधिकारियों को ऐसे अवकाश लेखों के नियमानुसार लेखांकन एवं भुगतान के सम्बन्ध में निम्नलिखित निर्देश जारी किए जाते हैंः-

1. सेवानिवृत्ति पर अवकाश वेतन के नकदीकरण की शुद्धता सुनिश्चित करने के निमित्त सेवानिवृत्त कर्मचारी के अवकाश लेखों की पूर्ण जाँच उपरान्त उसके सही होने और उपार्जित अवकाश का अन्तिम शेष सही होने का प्रमाण-पत्र सेवा पुस्तिका पर सम्बन्धित आहरण-वितरण अधिकारी द्वारा अंकित किया जावे।
2. कार्यालयाध्यक्ष/आहरण-वितरण अधिकारी किसी भी विपत्र को ऑनलाइन/हॉर्डकॉपी कोष कार्यालय को अग्रेषित करने से पूर्व बिल से सम्बन्धित सभी रजिस्टर्स यथा बिल रजिस्टर, बजट नियंत्रण रजिस्टर, बिल ट्रांजिट रजिस्टर आदि में उसका इन्द्राज कर दिया जाना सुनिश्चित करें। कोई भी विपत्र कार्यालय के उपर्युक्त लेखों रजिस्टरों में दर्ज किए बिना कोषालय को अग्रेषित नहीं किया जावे।
3. बिल निर्माण, जाँच एवं कोषालय को ऑनलाइन अग्रेषण प्रक्रिया को पूर्ण करने के लिए निर्धारित लॉगिन पासवर्ड का उपयोग हर हाल में नियमों में अधिकृत व्यक्ति द्वारा ही किया जाए। किसी भी स्थिति में इस प्रक्रिया में अन्य व्यक्ति की भागीदारी नहीं ली जावे।
4. वित्त विभाग के परिपत्र क्रमांक एफ.5(थ-75)डीटीए/IFMS/3666-4165 दिनांक 13.09.2019 के द्वारा राजकीय संव्यवहारों/भुगतानों हेतु आहरण वितरण अधिकारियों/पीडी खाताधारकों/लेखाधिकारियों के लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए गए हैं। परिपत्र में सेवानिवृत्ति पर देय उपार्जित अवकाश नकदीकरण सम्बन्धी जारी दिशा निर्देशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित की जाए।
5. किसी भी कार्मिक/शिक्षक के उपार्जित अवकाश के बदले नकद भुगतान के सम्बन्ध में प्रतिवर्ष जारी किए जाने वाले आदेश का इन्द्राज कार्मिक की सेवा-पुस्तिका में लाल स्याही से आवश्यक रूप से किया जावे ताकि दोहरा आहरण नहीं हो सके।
6. समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यालय/विद्यालय के समस्त स्टाफ की सेवा-पुस्तिका में दर्ज अवकाश लेखों की गहनता से 01 माह में जाँच करें कि उनमें लेखों का संधारण शुद्धता से किया गया है एवं लिए गए समर्पित अवकाश एवं अन्य उपार्जित अवकाशों का लेखांकन सही ढंग से किया हुआ है। समस्त रिकॉर्ड की जाँच करने के पश्चात यदि अवकाश लेखों में अनियमितता का कोई प्रकरण सामने आवे तो तुरन्त इसकी सूचना सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)/संयुक्त निदेशक, स्कूल शिक्षा के माध्यम से इस कार्यालय को देवें।
7. शिक्षकों को विश्रामकालीन अवकाश आदि में शैक्षिक के अलावा अन्य कार्य हेतु ड्यूटी लिए जाने पर राजस्थान सेवा नियमों के नियम 92(ब) के अनुसार दिए जाने वाले 1/3 उपार्जित अवकाश जो कि एक वर्ष में 15 दिवस से ज्यादा नहीं हो का भी इन्द्राज नियमानुसार किया जावे।
8. समस्त आहरण वितरण अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्मिकों की संधारित सेवा पुस्तिका के प्रत्येक पृष्ठ पर कार्मिक का पूर्ण विवरण अंकित किया जाना सुनिश्चित कराए इसके लिए एक रबर सील बनाए जिसमें कार्मिक का नाम, पिता का नाम, पद तथा जन्मतिथि का विवरण हो।

समस्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने कार्यालय से सम्बन्धित समस्त लेखा रजिस्टर यथा बिल रजिस्टर, बजट नियंत्रण रजिस्टर, बिल ट्रांजिट रजिस्टर, इनकैशमेन्ट रजिस्टर तथा कैश बुक आदि का पूर्ण संधारण

करना सुनिश्चित करावे तथा अपने अधीनस्थ आहरण-वितरण अधिकारियों के कार्यालयों/विद्यालयों के स्टाफ की सर्विस बुक का पूर्ण प्रमाणीकरण अपने कार्यालय स्टाफ से करवाया जाना सुनिश्चित करावे। माह अप्रैल व मई 2020 में समस्त CBEO कार्यालयों का विस्तृत निरीक्षण किया जाएगा। यदि इस प्रकार के अभिलेखों के संधारण में कोई अनियमितता/त्रुटि पाई गई तो सम्बन्धित के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

● **(सौरभ स्वामी) IAS** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

माह : **मार्च, 2020**

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : **दोपहर 12.40 से 1.00 बजे तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
02-03-2020	सोमवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
03-03-2020	मंगलवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	25	हमारी पृथ्वी व अंतरिक्ष
04-03-2020	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
05-03-2020	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
06-03-2020	शुक्रवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
07-03-2020	शनिवार	बीकानेर	9	सामाजिक विज्ञान	20	आपदाएँ एवं प्रबन्धन
11-03-2020	बुधवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
12-03-2020	गुरुवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
13-03-2020	शुक्रवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	विश्व उपभोक्ता दिवस		
14-03-2020	शनिवार	बीकानेर	4	पर्यावरण अध्ययन	19	स्वच्छ घर - स्वच्छ गाँव
16-03-2020	सोमवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
17-03-2020	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
18-03-2020	बुधवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
19-03-2020	गुरुवार	बीकानेर	3	पर्यावरण अध्ययन	17	रूप बदलती मिट्टी
20-03-2020	शुक्रवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
21-03-2020	शनिवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
23-03-2020	सोमवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम	चेटीचण्ड		
24-03-2020	मंगलवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम			
26-03-2020	गुरुवार	जयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
27-03-2020	शुक्रवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			
28-03-2020	शनिवार	जोधपुर	गैरपाठ्यक्रम			
30-03-2020	सोमवार	बीकानेर	गैरपाठ्यक्रम	राजस्थान दिवस (उत्सव)		
31-03-2020	मंगलवार	उदयपुर	गैरपाठ्यक्रम			

● निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर

शिविरा पञ्चाङ्ग

मार्च-2020

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18	25	
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

मार्च 2020 ● कार्य दिवस-23, रविवार-05, अवकाश-03, उत्सव-03 ●09 मार्च-होलिका दहन (अवकाश)। 10 मार्च-धुलण्डी (अवकाश)। 15 मार्च-विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव)। 25 मार्च-चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव)। 30 मार्च-राजस्थान दिवस (उत्सव)। ● नोट-माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं का आयोजन। बोर्ड परीक्षा आयोजन के कारण सामुदायिक बाल सभा आयोजन स्थगित रखा गया है। ●प्रत्येक सोमवार-WIFS नीली गोली (कक्षा 6-12), WIFS पिंक गोली (कक्षा 1-5)।

राजस्थान के जिलों में जिला कलक्टर द्वारा वर्ष 2020 के घोषित अवकाश

क्र.स.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
1.	श्री गंगानगर	13.1.20	सोमवार	लोहड़ी
		26.10.20	सोमवार	गंगानगर स्थापना दिवस
2.	बीकानेर	2.6.20	मंगलवार	निर्जला एकादशी
		25.8.20	मंगलवार	पुनरासर मेला
3.	हनुमानगढ़	13.1.20	सोमवार	लोहड़ी
		27.8.20	गुरुवार	गोगा नवमी
4.	कोटा	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
5.	बारां	29.8.20	शनिवार	जलझूलनी एकादशी
		1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
6.	बून्दी	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		6.8.20	गुरुवार	कजली तीज
7.	झालावाड़	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
8.	जयपुर	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
9.	अलवर	जिला कलेक्टर महोदय द्वारा अवकाश की घोषणा नहीं की गई है।		
10.	दौसा	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
11.	पाली	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
12.	जालोर	17.2.20	सोमवार	जालोर महोत्सव 2020
		16.3.20	सोमवार	शीतला माता मेला
13.	सिरोही	15.1.20	बुधवार	मकर संक्रान्ति पर्व (सम्पूर्ण जिला)
		28.2.20	शुक्रवार	रघुनाथ पाटोत्सव (केवल आबूरोड तहसील हेतु)
		9.8.20	रविवार	विश्व आदिवासी कल्याण दिवस
		4.11.20	बुधवार	करवा चौथ (आबूरोड तहसील क्षेत्र को छोड़कर)
14.	नागौर	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
15.	बाँसवाड़ा	9.8.20	रविवार	विश्व आदिवासी दिवस
		1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
		18.11.20	बुधवार	मंशाव्रत चौथ
16.	अजमेर	2.3.20	सोमवार	उर्स मेला
		27.11.20	शुक्रवार	पुष्कर मेला

क्र.स.	जिले का नाम	दिनांक	वार	अवकाश का कारण
17.	चित्तौड़गढ़	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		20.7.20	सोमवार	हरियाली अमावस्या
18.	डूंगरपुर	जिला कलेक्टर महोदय द्वारा अवकाश की घोषणा नहीं की गई है।		
19.	प्रतापगढ़	20.7.20	सोमवार	हरियाली अमावस्या
		9.8.20	रविवार	विश्व आदिवासी दिवस
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
20.	राजसमन्द	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		20.7.20	सोमवार	हरियाली अमावस्या
21.	उदयपुर	27.3.20	शुक्रवार	गणगौर
		20.7.20	सोमवार	हरियाली अमावस्या
22.	भीलवाड़ा	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		13.11.20	शुक्रवार	धन त्रयोदशी
23.	टोंक	1.9.20	मंगलवार	अनंत चतुर्दशी
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
24.	चूरू	8.4.20	बुधवार	सालासर मेला
		13.8.20	गुरुवार	गोगानवमी
25.	झुन्झुनूं	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
26.	सीकर	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रान्ति
		1.4.20	बुधवार	जीणमाता मेला
27.	भरतपुर	19.8.20	बुधवार	वन यात्रा
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
28.	धौलपुर	8.4.20	बुधवार	हनुमान जयन्ती
		24.8.20	सोमवार	देवछट मचकुण्ड मेला
29.	करौली	1.4.20	बुधवार	दुर्गा अष्टमी (केलादेवी मेला)
		25.11.20	बुधवार	देव उठनी एकादशी (अंजनी माता मेला)
30.	सवाईमाधोपुर	13.1.20	सोमवार	चौथ माता मेला
		21.8.20	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी
31.	जोधपुर	16.3.20	सोमवार	शीतला अष्टमी
		20.8.20	गुरुवार	बाबा रामदेव मेला (मसूरिया मेला)
32.	बाड़मेर	6.8.20	गुरुवार	कजली तीज
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस
33.	जैसलमेर	14.1.20	मंगलवार	मकर संक्रांति
		13.11.20	शुक्रवार	धनतेरस

समय की महत्ता

समय का सदुपयोग

❒ रेनू सिकरवार

1. भूमिका– कवि जयशंकर प्रसाद ने मनुष्य की श्रेष्ठता का आधार उसकी तीन विशिष्ट शक्तियों को माना है, जिन्हें उन्होंने शक्ति का त्रिकोण कहा है। ये है इच्छा, ज्ञान और क्रिया। वस्तुतः मनुष्य अनंत इच्छाओं का आगार है। कभी भी कही भी कोई भी इच्छा मनुष्य के अंतस्तल में जन्म ले सकती है, किंतु विधाता ने मनुष्य को ज्ञान के रूप मे एक अंकुश कसौटी या गुरु भी प्रदान किया है। किसी भी इच्छा की पूर्ति इसका उपयोग किया जाना आवश्यक है क्योंकि जहाँ ज्ञान, इच्छा का मूल्यांकन कर यह निर्देशित करता है कि वह संगत है या नहीं, वही यह निर्देश भी देता है कि यदि वह संगत है तो उसकी पूर्ति किस प्रकार की जाए। तदनुसार कार्य करने से सफलता सहज ही मिल जाती है। ऐसे में जो सुखद अनुभूति होती है उसी को **'आनंद'** कहते हैं और यही **'आनंद'** किसी भी इंसान को सबसे बड़ी चाहत होती है।

उक्त समूची प्रक्रिया तभी पूर्ण होती है जब मनुष्य सुविचारित योजना के अनुसार कार्य करता है। ऐसे में समय का नियोजन इस प्रक्रिया के सूत्रधार का कार्य करता है, क्योंकि किसी समय विशेष में जो संदर्भ (कार्य) सहज ही साध्य होते हैं वे बदले समय में कभी–कभी असाध्य भी बन जाया करते हैं। इसीलिए प्रायः यह कहा जाता है कि व्यक्ति की सफलता में अवसर का बहुत बड़ा हाथ होता है। इस अवसर के सार्थक उपयोग को ही **'समय का सदुपयोग'** कहा जाता है।

2. समय के सदुपयोग का आशय– समय के सदुपयोग से प्रमुख आशय है जीवन के प्रत्येक पल का रचनात्मक उपयोग एवं प्रत्येक उचित अवसर का उपयोग। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि आलस्य इसका सबसे प्रबल बाधक तत्त्व है और तत्परता सबसे प्रबल साधक तत्व। कारण यह है कि व्यक्ति के भीतर किसी कार्य को करने की जो तात्कालिक लगन होती है वह समय व्यतीत होने के साथ न केवल शिथिल पड़ जाती है बल्कि एक समय ऐसा भी आता है जब व्यक्ति निश्चेष्ट–सा हो जाता है। परंतु विडंबना तो यह है कि ऐसे में वह स्वयं को नहीं बल्कि अपने भाग्य को कोसता है। थोड़ी–सी (पल भर की) चूक कभी–कभी भारी पड़ जाती है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इसी प्रसंग में लिखा है।

संभलो कि सुयोग न जाए चला।
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला।
प्रभु ने तुमको कर दान किए।
सब वांछित वस्तु–विधान किए।।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो।
फिर है किसका यह दोष कहो।।
समझो न अलभ्य किसी धन को।
नर हो, न निराश करो मन को।।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि कबीरदास ने इस प्रसंग में तो यहाँ तक कह दिया है कि कार्य का पूर्वानुमान लगाकर तत्काल उसकी पूर्णता के लिए सक्रिय हो जाना चाहिए।

3. समय के सदुपयोग की विधि– प्रत्येक व्यक्ति, समाज या संस्थान की कार्य करने की अपनी एक शैली होती है। परंतु कुछ संदर्भ ऐसे भी होते हैं जो सभी पर समान रूप से लागू होते हैं। समय के सदुपयोग का यथार्थ भी कुछ ऐसा ही है। इस प्रसंग में हम एक योजनाबद्ध समय–सारिणी का उल्लेख कर सकते हैं जिसके अनुसार व्यक्ति अपने कृतित्व को योजनाबद्ध तरीके से निर्धारित कर लेता है। फलतः उसके कार्य सहज ही सम्पन्न होते चले जाते हैं। इसके मूल में यह यथार्थ भी सक्रिय होता है कि व्यक्ति अपने कार्य की सफलता या असफलता का पूर्वानुमान सहज ही लगा लिया करता है। फलतः उसके अंतर्मन में संघर्षशीलता एवं मनोबल का तत्व निरंतर प्रबल बना रहता है। अतः यह आवश्यक है कि जिस प्रकार लक्ष्य–भेदन के दौरान अर्जुन को तन्मयता की अवस्था में केवल अपना लक्ष्य दृष्टिगत होता था उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को अपने उद्देश्य की साधना के दौरान केवल अपना लक्ष्य ही दृष्टिगत होना चाहिए। इधर–उधर के प्रपंचों में फँसने से न केवल व्यक्ति की संघर्षशीलता प्रभावित होती है बल्कि कभी–कभी तो उसकी सफलता भी असफलता में परिवर्तित हो जाया करती है। समकालीन वैज्ञानिक युग में तो पल भर का विलंब भी कभी–कभी बहुत बड़ी विसंगति का जनक बन जाता है। अतः जीवन–संघर्ष में सतत सफलता पाने के लिए एक आदर्श समय–सारिणी का निर्धारण अत्यावश्यक है।

4. समय के सदुपयोग से लाभ– आकांक्षाओं की सहज पूर्ति अथवा उद्देश्य की सहज सिद्धि से बढ़कर किसी के जीवन की शायद ही कोई और विशिष्ट लालसा होती हो। समय के सदुपयोग से ऐसा सहज ही संभव हो जाया करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि व्यक्ति में विविध प्रकार के कार्य करने की असीमित क्षमता विद्यमान है। इसी कारण प्रत्येक अध्यवसायी व्यक्ति सुख, शांति और आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है, विशेषकर वे जो अपना कार्य, समय की नजाकत को देखते हुए एक व्यवस्थित कार्यक्रम के अनुसार सम्पन्न किया करते हैं। ये प्रायः जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल होते हैं। वर्तमान में पश्चिमी देशों को सफलता के मूल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कठोर परिश्रम, योजनाबद्ध सक्रियता–प्रभृति संदर्भों के साथ–साथ एक–एक पल के सदुपयोग की भी महती भूमिका है। वहाँ समय के अपव्यय का शायद ही कोई ऐसा उदाहरण उपलब्ध हो सके जैसा कि आज हमारे देश में कहीं भी उपलब्ध हो जाया करता है। इसी क्रम में यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि समय, विधाता की एक ऐसी देन है जो प्रत्येक इंसान को समान मात्रा में उपलब्ध होता है। उम्र भले ही छोटी या बड़ी हो परंतु समय का प्रवाह सभी के लिए एक जैसा ही होता है। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं है। इसके विपरीत जीवन के अन्य बहुत से संदर्भ असीमित हैं। इनमें से बहुतों को खोकर पुनः पाया जा सकता है, परंतु समय को कदापि नहीं। अतः

समय का अपव्यय एक ऐसा अपव्यय है। जिसकी पूर्ति सर्वथा असंभव है। इसी को दृष्टिगत कर किसी मनीषी ने स्पष्ट घोषणा की थी–

आलस्यं हि मनुष्याणाम् शरीरस्थो महान् रिपुः।

यह ध्यान रखें कि समय के सागर में ज्वार–भाटा नहीं होता। अपनी जीवन –नौका को संघर्ष, श्रम और सुनियोजन की पतवार के सहारे जो जितना गतिशील बनाता है, उसकी जीवन–यात्रा उपलब्धियों के उतने ही विशिष्ट बंदरगाहों से होती हुई आगे बढ़ती है। यह बहुप्रचलित उक्ति इसी यथार्थ का समर्थन करती है जिसके अनुसार–

कदम चूम लेती है आकर के मंजिल, मुसाफिर अगर अपनी हिम्मत न हारे।

5. निष्कर्ष :– मनुष्य अपनी मूल प्रकृति में सुख शांति चाहता है। 'आनंद' उसकी सबसे बड़ी चाहत होती है। इसमें संदेह नहीं कि मनुष्य में असीमित क्षमताएँ हैं प्राकृतिक बाधाओं को एक एक कर जीतते हुए उसने निरंतर इसका परिचय प्रस्तुत किया है। आज सर्वत्र उसकी श्रेष्ठता का डंका बज रहा है। अतः इसमें संदेह नहीं कि यदि व्यक्ति द्वारा अपनी रचनात्मक क्षमताओं का सुनियोजित एवं सार्थक उपयोग किया जाए तो उसे व्यापक सफलताएं सहज ही मिल सकती हैं। इसके समर्थन में प्रमाण हेतु सफलता के ऐसे संदर्भों को तलाश करने की हमें आवश्यकता नहीं। किसी क्षेत्र का प्रत्येक सफल व्यक्ति स्वयं में इसका एक उपयुक्त उदाहरण माना जा सकता है।

भारत स्काउट एण्ड गाइड के शिविरों में प्रातःकाल (प्रभावी के रूप में) गायी जाने वाली निम्न पंक्तियाँ इसी यथार्थ की खुली घोषणा–सी करती है –

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है,
जो सोवत है सो खोवत है।

अतः निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता कि समय का सदुपयोग ही जीवन की सफलता का मूलाधार है।

वरिष्ठ अध्यापिका (अंग्रेजी)
राजकीय सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल
लुहारी–धौलपुर (राज.)

पर्यावरण संरक्षण

वैश्विक पर्यावरण समस्या एवं भारतीय संस्कृति

❒ रामचन्द्र स्वामी

भारतीय संस्कृति का मानना है कि सभ्यता का विकास महज भौतिक प्रगति से नहीं होता है, यह दरअसल समाज को एकजुट रखने वाले आदर्शों और साझा विश्वासों पर आधारित रहता है। अस्तित्व का यह आयाम ही मानव जाति को समृद्ध और उदात्त बनाता है। मानव जाति के सांस्कृतिक प्रतिमान जैसे धर्म, नैतिकता, भाषा, आदर्श, प्रथाएँ, परम्पराएँ, जन रीतियाँ, लोकाचार, आविष्कार आदि मानव सभ्यता को समय–समय पर प्रभावित करते हैं। इन सभी प्राकृतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशाओं की सम्पूर्णता ही 'पर्यावरण' है। मानव ने अपनी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए प्रकृति की मूल संरचना और व्यवस्था में ही व्यवधान डाल दिया है। जिसके कारण पर्यावरण की बिगड़ती दशा आज सम्पूर्ण विश्व के लिए चिन्ता का विषय है।

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण मानवता की मूल आवश्यकता है। पर्यावरण के प्रति इन्सान की असावधानी, उपेक्षा, संवेदनहीनता और स्वार्थी चेतना को देखकर प्रकृति ने उसके द्वारा किए गए शोषण के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है, तभी बार–बार भूकम्प, चक्रवात, बाढ़, सूखा, अकाल जैसे हालत देखने को मिल रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज पृथ्वी विनाशकारी हाशिए पर खड़ी है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की एक हालिया रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया से वन्यजीवों की 42 फीसदी, पेड़–पौधों की 12 फीसदी प्रजातियाँ घट गई है। इसी का नतीजा है कि आज पृथ्वी का पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह से गड़बड़ा गया है। इसके बहुत से कारणों में एक हमारी न समझने की प्रवृत्ति रही है। दरअसल इसके पीछे वह मानसिकता काम कर रही है जो पारिस्थितिकी तंत्र को इंसान के फेफड़े मानने के बजाय उसे महज जरूरतें पूरी करने का संसाधन मानती है।

मानव जाति को जल, थल और वायु प्रदूषण के प्रभावों के साथ–साथ अंतरिक्ष के प्रदूषण पर भी गौर करना होगा। वर्तमान में पारिस्थितिकी तंत्र के साथ छेड़छाड़ के कारण होने वाला जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर एक गंभीर समस्या बना हुआ है। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि हो रही है और ऊर्जा की खपत भी प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जिस मनुष्य जाति को प्रकृति ने आजीविका और बसेरा मुहैया कराया। वही मानव जाति आज पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश का कारण बन रही है। प्रकृति ने मानव जाति को सस्ती और सुविधाजनक ऊर्जा, ईंधन, कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस उसकी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए मुहैया कराया। वही मानव अपनी आधुनिक जीवन शैली में अत्यधिक आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का अंधाधुंध प्रयोग व दोहन कर पर्यावरण संतुलन को प्रदूषित कर रहा है। वर्तमान में बड़ी मात्रा में परमाणु रिएक्टरों का उपयोग व ताप वृद्धि के कारण भी प्राकृतिक आपदाएँ भी बड़े खतरों का संकेत दे रही है। वर्तमान में मानव जाति को आधुनिक भौतिक जीवन शैली को बदलना होगा। मानव जाति के आध्यात्मिक और सामाजिक विकास के दृष्टिकोण के भीतर वर्तमान पर्यावरणीय संकट और उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया को एक महत्त्वपूर्ण बदलाव में लाना होगा।

वर्तमान में परिस्थितिकी संतुलन के लिए सार्वभौमिक इको सिस्टम में मानव जाति की भूमिका से सम्बन्धित हमारी धारणा में भारी बदलाव की जरूरत है। जहाँ तक ग्रीन हाउस गैसों में कमी लाने की बात है तो उसके लिए सूर्य की असीम ऊर्जा को इस्तेमाल वाली टेक्नोलॉजी विकसित करना बहुत जरूरी है। इससे अर्थव्यवस्था के विकास में भी मदद मिलेगी। भारतीय संस्कृति के आदर्श ही मानव चेतना के भीतर की रचनात्मक क्षमताओं को विकसित कर प्रकृति प्रदत पर्यावरणीय वस्तु स्थिति में संतुलन स्थापित करते हैं। जिससे भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जागृति रहती है और वो प्रकृति को उपभोग की वस्तु ना मानकर एक दैव्य स्वरूप मानकर पेड़–पौधों व वन्य जीव–जंतुओं को संरक्षण करने की भावना रखते हैं। भारतीय संस्कृति की पहचान है, जहाँ प्रकृति की पूजा होती है वहाँ पर देवता रमते हैं तथा सुदृढ़ व सुसंस्कारित सभ्यता का विकास होता है।

अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय रिडमलसर, बीकानेर
मो: 9414510329

चिन्तन

जीवन कौशल

❒ डॉ. साधना गुप्ता

किसी भी समस्या का समाधान समस्या के ज्ञान पर निर्भर करता है, इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों को प्रार्थना करनी पड़ी-'धियो योन प्रचोदयात। प्रचोदयात अर्थात् सही तरीके से सोचना।

इस विषय को समझने के लिए हमें मूल से यात्रा प्रारम्भ करनी होगी। माँ से नवजात का जीवन नाभिनाल से जुड़ा होता है। अतः उस महान ज्योतिमान शक्ति का संचालन केन्द्र हमारे शरीर में नाभि है ठीक वैसे ही जैसे पावर हाऊस की बिजली का संचालन स्विच से होता है। इस नाभि के दो भाग-प्राण शक्ति व मन है। प्राणशक्ति श्वास द्वारा रक्त शुद्धि, अन्न पाचन इत्यादि शरीर सम्बन्धी समस्त कार्य करती है। मन में शक्ति नहीं होती, केवल गति होती है। जैसे बिजली में केवल करंट। जहाँ लगा दे, वहीं चलने लगता है। हमें इस मन को ही समझना होगा।

मन- वस्तुतः मानव मनु की संतान होने के कारण मानव नहीं कहलाता वरन् मन के होने से मानव कहलाता है। यही कारण है कि मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी है जो अपनी फिलिंग देखने में सक्षम है अर्थात जब आपको क्रोध आता है तो आप यह अनुभव कर सकते हैं कि आप क्रोध में है। बस उसके साक्षी बनें, गुलाम नहीं। इसीलिए कहा गया है- आनन्द में वचन मत दीजिए, क्रोध में उत्तर मत दीजिए, दुःख में निर्णय मत लीजिए, इतना छोटा कद रखिए कि सभी आप के साथ बैठ सके और इतना बड़ा मन रखिए कि जब आप खड़े हो जाए, तो कोई बैठा न रह सके। अतः अपने हालात से ऊपर उठ पाने की योग्यता जाग्रत करें- इस विषय में सम्यक चिन्तन करना ही विचार का बिन्दु है। मनुष्य शरीर में मन ऐसी शक्ति है जिसे जीत लिया तो आप सब कुछ है, नहीं तो असंख्य प्राणियों में एक। परन्तु परेशानी का विषय यह है कि मन दिखता नहीं- जो स्मृति रखता है, याद रखता है, प्रयास करता है, सोचता है, निर्णय लेता है, यहाँ तक कि जीवन व शरीर के तमाम कार्य करता है। तभी तो मन संतुलित है तभी तक व्यक्ति समाज के काम का है।

प्रज्ञा- अर्थात 'बुद्धि' मन का परिष्कृत रूप है जो अच्छे-बुरे का विचार कर निर्णय कर लेगी। मूल रूप से यह भी माया का ही एक रूप है, जो कार्यक्षमता, कार्यकुशलता में वृद्धि कर सांसारिक रूप से हमें काफी ऊँचा उठाती है परन्तु साथ ही अहंकार में भी वृद्धि करती है। यह स्थिति ठीक वैसी ही है जैसे सूर्य के ताप से निर्मित बादल ही सूर्य को ढक लेते हैं। अतः इसे विवेक में परिवर्तित करने की बात भी की जाती है क्योंकि तब यह शत प्रतिशत शुद्ध होती है। समस्त कामनाएँ, स्व-पर की भावना से मुक्त होती है। इसके लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है-सत्संग करना अर्थात अपने से जो श्रेष्ठ है उसकी संगति, उसके निकट रहना, जिससे हममें उसके गुण आए। रामचरितमानस में कहा भी है- 'बिन सत्संग विवेक न होई।'

विवेक एवं आत्मसाक्षात्कार- यह इतना आसान नहीं है। इसके लिए शनै-शनै बाहर से अन्दर की यात्रा करनी होती है। मन का इन्द्रियों से संबंध तोड़ना होगा अर्थात समाधि तब यह मन नाभि की ओर जाएगा जिसे अन्तर्मुखी होना कहा गया है। इसी के लिए भगवत गीता में पार्थ सारथि का अर्जुन को आह्वान है 'मामनुस्मर युद्ध च' अर्थात निरन्तर मेरा स्मरण करके युद्ध कर। वस्तुतः प्रतिमाएँ तो जनता को समझाने के लिए प्रतिकार्थ रूप में बनाई गई है। 'माम' शब्द का अर्थ है- 'सोऽहम्'। 'वो मैं हूँ' जो अन्दर से बोल रहा है इसी को भारतीय संस्कृति में आत्मसाक्षात्कार कहा गया है। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यह स्मरण यदा-कदा नहीं, सर्वकालेशु अर्थात निरन्तर हो। 'नि+अन्तर' दो हिस्सों में जहाँ अन्तर नहीं, धारा प्रवाह, ठीक तेल की धारा 'वसुधारा' के समान जो निरन्तर प्रवाहमान रहे। जरा भी बीच में अन्तर हुआ तो वह बन्द हो जाएगी। इसके लिए क्या करें? कैसे करें, यह यक्ष प्रश्न है जिसका सहज समाधान प्रस्तुत करने का लघु प्रयास यह आलेख है-

मार्गदर्शक या गुरु- जहाँ तक गुरु या मार्गदर्शक की बात है, सच्चा मार्गदर्शक मिलना कठिन ही नहीं दुर्लभ है क्योंकि किस विषय में सोचना है यह कोई नहीं बताता। सब, कैसे सोचना है यह बताते हैं क्योंकि उनका विचार है कार्य सोचने से होता है। यह बात सत्यनारायण की कथा में मूल कथा के न होने के समान ही है। वस्तुतः हमें एक सच्चा मार्गदर्शक चाहिए, जो हमें बताए-'हम किस विषय में सोचे '**A True master is needed so that he may guide us how to think** और यह गुरु हमारे अन्दर है, बाहर नहीं। अन्तर्मुखी होने के बाद जो मार्गदर्शक होगा वही कार्यो से छुटकारा दिलाएगा। जबकि बाहरी मार्गदर्शक माया में भटकाएगा। स्वामी रामकृष्ण ने कहा भी है- 'प्रकृति स्वयं अपने अन्दर से प्रेरणा देकर मार्गदर्शन करती है वही गुरु है।' क्योंकि आध्यात्मिक साधना में मन, बुद्धि, शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं, शारीरिक क्रियाओं से परे सक्रिय मन को निष्क्रिय करना होता है। प्रकृति की दोहरी भूमिका-एक ओर हमसे अच्छे कार्य की अपेक्षा व दूसरी ओर मन में विकार पैदा कर बुद्धि को चलायमान करने से मुक्त रखने के लिए अन्तर्मुखी होने की योग्यता ही सही मार्गदर्शन करती है।

अतः सर्वप्रथम हमें अपने आत्मिक शक्ति को जाग्रत करना होगा। इसके लिए कही गई बात को प्रयोग करके देखें, क्योंकि कहने वाले में जो शक्ति है, वह हममें भी है तथा जो समस्या सामने है उसका मुकाबला यदि सीना तान कर किया जाए तो वह आगे आएगी ही नहीं, ऐसे ही निकल जाएगी। वस्तुत कोई भी समस्या अपनी योग्यता को परखने का, परिचय देने का मौका हमें प्रदान करती है। जिसमें हमें हारना नहीं जीतना है- यह संकल्प होना चाहिए, अतः निर्भय होकर मुकाबला करो- आपकी जीत होगी, पर भाग कर जाएँगे तो हार। समुद्र में लकड़ियाँ बहकर एक जगह इकट्ठी हो जाती है,

पीछे से धक्का आता है लहरों का तो फिर सब चारों ओर बिखर जाती है। इस संसार रूपी प्रवाह में सब वस्तुएँ, परिस्थितियाँ इसी प्रकार एकत्रित हुई हैं, विश्वास रखिए, बिखर भी जाएगी अतः मूल मंत्र है-'वर्तमान में रहो।'

मूल मंत्र- 'वर्तमान में रहो'- भविष्य जितनी तेजी से वर्तमान में उतरता है उतनी ही तेजी के साथ अतीत बनकर बह जाता है, अतः मूल मंत्र है, 'वर्तमान में रहो', 'हमेशा मुस्कराते रहो', 'हर परिस्थिति में प्रसन्न रहो।' वर्तमान में रहने से विवेक जाग्रत होता है। विवेक जाग्रत होने से आपकी संकल्प शक्ति बढ़ जाती है, आत्मविश्वास प्राप्त होता है, जबरदस्त आत्मविश्वास। अपना आत्मविश्वास ऐसा जाग्रत करो जिससे कार्य करने की व्यावहारिक कुशलता के लिए शक्ति अपने आप प्राप्त हो।

शारीरिक श्रम मजदूर करता है। मानसिक रूप से परिपूर्ण विकसित बुद्धिमान व्यक्ति बैठकर काम करता है और संकल्पवान मात्र संकल्प से काम करता है, अतः 'Think and it will happen', 'संकल्प करो और वह पूर्ण होगा' तथा 'Think once and decide once and never give it a second thought' एक ही बार सोचकर निश्चय कर लो, विकल्पों के ऊहापोह में न पड़ो। वर्तमान में रहने के लिए 'जो हो रहा है उसे देखो बस।' बौद्धों की 'विपश्यना' क्रिया इसीलिए जिसमें ध्यान को श्वास क्रिया पर केन्द्रित करने की बात कही गई है। कबीर ने इसे 'सहज समाधि' संज्ञा से अभिहित किया है। मंत्र विज्ञान में त्रिकुटी पर ध्यान केन्द्रित करना कहा है और योग में चित्तवृत्ति निरोध-'योगः चित्तवृत्ति निरोध'। चित्त=मन, वृत्ति=भटकाव, निरोध= रोकना अर्थात मन जो निरन्तर भटकता है उसका निरोध करना योग है। इसके लिए अनिवार्य है सतत जागरूकता।

सतत जागरूकता- जड़ रस्सी को सर्प समझ कर हमारे अन्दर धड़कन की गति को तीव्र करना मन का काम है। बाह्य संसार की हलचल संस्कार, तरंगे (Waves) मन से आकर टकराती है। अतः 'मन एवं मनुष्याणा कारणं बंध मुच्यते।' यह मन केवल गति रूप होता है। उसमें विकार, कार्य करने की क्षमता या प्रेरणा बाहर से आती है जिसे हम संस्कार कहते हैं। घटनाओं को देखना, उनसे विचलित नहीं होना, 'जीवन मुक्त अवस्था' है। इस हेतु मन पर निगरानी (Constant Watch) रखना जरूरी है। सतत जागरूकता (Constant awarness) कि मन भटके नहीं। पुनः स्मरण रखना है आध्यात्मिक साधना में मन, बुद्धि, शरीर का कोई सम्बन्ध नहीं। शारीरिक क्रियाओं से परे सक्रिय मन को निष्क्रिय करना है। जिसके लिए आवश्यक है-मानसिक मौन।

मानसिक मौन- मानसिक मौन ही सच्चा मौन है। यह जब एक निश्चित सीमा तक पहुँच जाता है तो उस मन से कुछ तरंगे जैसी निकलती है, सीधी दूसरे के मन में जाकर उस मन को प्रेरित करती है। प्रेरणा देती है कि वह भी इसी प्रकार मौन रहकर शंकाओं का समाधान पा सकता है। मानसिक मौन रहने से उस परमात्मा द्वारा आने वाले संदेश को वह व्यक्ति ग्रहण कर सकता है, सत्संग में आए अन्य व्यक्तियों को प्रभावित कर सकता है, संदेश उन तक ही नहीं दूर प्रवासी व्यक्ति तक भी पहुँचा सकता है।

अतः मौन सत्संग मन को शुद्ध, पवित्र करने वाला विराट से प्राप्त होने वाले संदेशों को प्राप्त करने वाला, समझने की क्षमता विकसित करने का श्रेष्ठ साधन है जिसे हम 'टेलिपेथी' के नाम से भी सम्बोधित करते हैं। इसकी सिद्धि के लिए आवश्यक है सतत प्रयत्नशीलता।

सतत प्रयत्नशीलता- कोरे आशीर्वाद से कुछ नहीं होता, साधना की सिद्धि सतत प्रयासरत होने में है अतः प्रयास बढ़ाना चाहिए क्योंकि ईश कृपा और आशीर्वाद फलित होते अवश्य है, पर उसके साथ-साथ स्वयं के प्रयत्न भी जारी रहना चाहिए-'नहि सुपतस्य सिंहस्य प्रविश्यन्ति मुखे मृगाः।' अतः अपने धर्म का पालन करते हुए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।

स्व धर्मः- धर्म अर्थात स्वभाव, कर्त्तव्य। जैसे पानी का धर्म है बहना, अपने धर्म का पालन करना चाहिए क्योंकि दूसरे का धर्म अपनाना अर्थात प्रकृति ने तुम्हें जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु भेजा है, जो कार्य दिया है, जो वस्त्र पहनकर अभिनय करने को कहा था उन्हें छोड़ तुमने दूसरे वस्त्र पहने, दूसरा पार्ट खेलना प्रारम्भ कर दिया, तो सोचो, नाटक का क्या होगा?

सार रूप में शरीर पंच महाभूतों का है, हमेशा सक्रिय रहेगा, उसको सक्रिय रखो। शरीर व आत्मा को जोड़ने वाली कड़ी है 'मन'। उस मन को अलग रखो- तटस्थ। जिसके लिए वर्तमान में रहना आवश्यक है अतः वर्तमान में रहकर मन को नियंत्रित करो। तब नियंत्रित रहने के बाद आपको तमाम प्रश्नों के उत्तर अन्दर से ही प्राप्त होंगे, यही गीता का 'स्थित प्रज्ञ' होना है।

मंगलपुरा टेक, झालावाड़ (राज.)
मो: 9530350325

घोषणा-पत्र
(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1. प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4. प्रकाशक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5. प्रधान सम्पादक	:	सौरभ स्वामी
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, सौरभ स्वामी घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(सौरभ स्वामी) आई.ए.एस
निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान,
बीकानेर

नैतिक शिक्षा

विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का समावेश

❐ पुष्पा यादव

आज का मानव जीवन सूचना तकनीक से ओतप्रोत एवं डिजिटल लाइफ का वर्जन हो चुका है। यह हमारी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का हितकर होगा या कुछ अलग ही स्वरूप होगा, इन सभी बातों का जवाब भविष्य के गर्भ में है। हमारा भारत ऋषि-मुनियों की तपोस्थली, वेदों का जनक, विश्व सभ्यता का प्रारम्भिक जनक एवं मानवता के मूल्यों का प्राचीन स्तंभ सदियों से विश्व में अपनी एक अद्‌भुत पहचान बनाए हुए हैं। लेकिन अब काल खण्ड या विकास चक्र की देन देखिए- शिक्षा एवं मानव जीवन ने पाश्चात्य संस्कृति को आँचल या चूनरी की भाँति ओढ़ लिया है। एक तरफ यह सही है कि विश्व के साथ चलने के लिए विदेशी भाषा एवं तकनीकों को सीखना आवश्यक है परन्तु उसको पूर्णतया अंगीकृत कर खुद को, अपनी ही सांस्कृतिक पहचान को भुला देना क्या सही है? औचित्य है-क्या? ऐसे जीवन का- जैसे की खुद की जड़ों से दूरी बनाकर दूसरे पेड़ों की शाखाओं से लटककर फल-फूलों का सृजन करना। शायद ये आभासी या काल्पनिक जीवन का प्रतिबिम्ब है।

वर्तमान में संचालित शिक्षा पद्धति में नवीन शैक्षिक नवाचारों एवं नैतिक मूल्यों को ऐसे तरीके से जोड़ा जाए कि विद्यार्थी उसको जानने के साथ-साथ समझकर अपने ही जीवन में अंगीकृत करें एवं नैतिक दायित्व निभाए। प्रारम्भिक स्तर या प्रारम्भिक शिक्षा से ही इसकी शुरूआत सूक्ष्म प्रयासों से की जानी चाहिए। एक उदाहरण- प्रकृति संरक्षण या जल संरक्षण कैसे नैतिक आधार पर किया जाए। पेड़-पौधों से लगाव, उनका रखरखाव, अपनेपन से सहेजना एवं फल-फूलों का सर्जन तथा संरक्षित उपयोग आदि को समूहवार या संगठित दायित्व विद्यार्थियों में विभाजित करें।

जल ही जीवन का आधार है, जल से जीवन कैसे है? सभी जीव-जन्तुओं में परस्पर निर्भरता किस प्रकार है? इसके हम कथा चित्र,

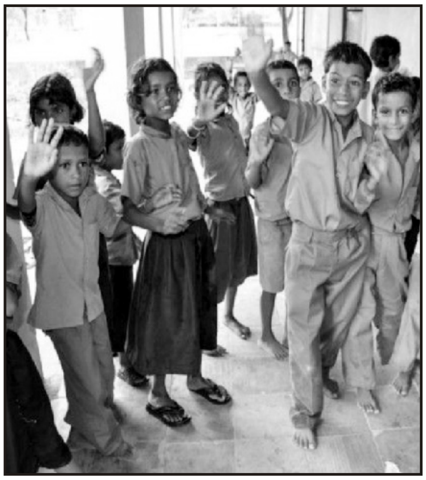

कहानियों, धार्मिक उत्सवों, धार्मिक कहानियों से चलचित्र, नुक्कड़ नाटक, दैनिक क्रियाकलापों से बच्चों में प्रेरणा एवं उत्साह के साथ समावेशित कर सकते हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय स्तर पर तुलसी, नीम, करेला, पीपल, वटवृक्ष, केला, सुदर्शन आदि पौधों का महत्त्व कहानी द्वारा एवं उनका पौधारोपण सामूहिक गतिविधियों से बताए ताकि उनकी समझ में यह आ सके कि ये पौधे भगवान की पूजा-अर्चना के साथ-साथ औषधि रूप में भी काम में आते हैं।

विद्यार्थियों को प्रातः वंदन, अभिवादन-नमस्कार, चरण-स्पर्श तरीके से, योगाभ्यास-स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक स्फूर्ति के लिए लाभकारी है। नैतिक मूल्यों से समझाया जा सकता है। अपनी मातृभाषा में वार्तालाप एवं परिवार में प्रत्येक रिश्ते का भाव एवं महत्त्व सभी जगह- विद्यालय, घर, सामाजिक समूहों में बड़ी सरलता एवं सहज तरीके से समझाए। इसके लिए मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर, मोबाइल, यू-ट्यूब, प्रेरक प्रसंग, प्रोत्साहन कार्यक्रमों की सहायता से जान सकें एवं समझ सकें। पाठ्य सामग्री, समारोह आयोजन में सार्वजनिक स्थानों के कार्यक्रमों में उपहार छोटे-छोटे पौधे, उपहार वितरण, संस्कार चेतना पत्रिका वितरण, गर्मी, सर्दी, बारिश-हँसता खेलता बचपन, धार्मिक उत्सवों में भजन कीर्तन मंडली, सत्संग आदि नैतिक शिक्षा एवं मूल्यों के अच्छे विस्तारक हैं।

तीज, त्यौहार, विवाह, जन्म के अवसर पर गाए जाने वाले मंगल गीतों को पुनः संधारण करें तथा भारतीय संस्कृति की रंग-बिरंगी छटा को फिर से हासिल कर सकें। अब दरकार है- एक पहल की, एक ओजस्वी शुरूआत की। मीलों चलने वाले सफर में जिसकी मंजिल है विकसित एवं अतुल्य भारत। फिर ये कारवाँ चलता जाएगा कि जिसमें स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा बुद्ध, सप्तऋषि मण्डल, रामायण, महाभारत, कृष्णलीला, वीर शिवाजी, भगतसिंह, राणा प्रताप, गुरुनानक देव, मोरध्वज जैसे चमत्कार हैं। जो भारतीय धरा- गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, पार्वती, सीता, लक्ष्मीबाई, अहल्या, मातृशक्ति एवं चारों वेदों, सोलह संस्कारों की प्राणवायु फिर से नए भारत की धड़कन बन जाए।

किसी ने सही कहा है-'शब्दों का वजन तो बोलने वाले के भाव पर आधारित है एक शब्द मंत्र हो जाता है, जबकि एक शब्द गाली कहलाता है। वाणी ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय कराती है।' अंत में ये चंद पंक्तियाँ बचपन से परिपक्व जीवन की तरफ ले जाती हुई-

भागते बचपन में भी थे,
भागते आज भी हैं।
बस्ता वही है- बस अंदर का
सामान बदल गया है।

इसलिए अब अति आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा का प्रमुख भाग या अंग नैतिक शिक्षा ही होना चाहिए ताकि हमारा भारत देश नैतिक मूल्यों एवं आदर्श व्यक्तित्वों से परिपूर्ण-विकसित एवं उन्नत राष्ट्र बनकर विश्व में अपनी समग्र कीर्ति का परचम लहराता रहे।

व्याख्याता (रसायन विज्ञान)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
शाहजहाँपुर, नीमराना, अलवर (राज.)
मो: 9413068956

अनुकरणीय

आओ गुरुकुल बनाएँ

❒ भगवती प्रसाद मासीवाल

मेरे पूर्व शिष्यों का अध्यापक को प्रणाम। प्रणाम मेरे अध्यापक, प्रणाम मेरे उद्धारक जननी ओर जनक से, ज्यादा आपका सम्मान है मेरा होना इत्तफाक, हो सकता है लेकिन मेरा बनना तो आपकी,साधना का परिणाम है

आओ पुनः गुरुकुल बनाएँ इस आर्यवर्त में। प्राचीन समय में गुरु शिष्य परम्परा के तहत गुरुकुल चलते थे। जिसमें गुरु सर्व गुणसम्पन्न (कृषि, युद्ध, संगीत, घुड़सवारी, मलखम खेल) व निपुण होता था। गुरु की सादगी , विद्वता व निष्ठा के आगे राजा व साम्राज्य भी नतमस्तक रहता था। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वह गुरु मात्र मास्टर बनकर रह गया।

यह पद भौतिक सुख-सुविधाओं मे लिप्त आर्थिक कारण बनकर रह गया। समाज के सर्वशक्तिमान, गुरु की गरिमा, तिमिर में ओझल होती जा रही है। वर्तमान समय में मास्टरजी, अपने विषय के ज्ञाता तक ही सीमित रह गए। मुझे याद है बचपन से लेकर अब तक, हम अपने पथ प्रणेता को गुरुजी का सम्बोधन ही देते हैं। उस समय यदि बालक विलम्ब से, विद्यालय आता था। तो गुरुजी, हमसे उसका कारण पूछकर, अभिभावक से सम्पर्क करते थे। ताकि वस्तु स्थिति स्पष्ट हो सके तथा बालक की सत्यता को कसौटी पर परखा जा सके।

यदि अभिभावक बीमार है अथवा सामाजिक या पारिवारिक समस्या है तो सामाजिक रूप से जुड़कर उसका निस्तारण करते थे जिससे केवल बालक ही नहीं, बल्कि अभिभावक की दृष्टि में भी, गुरु के सम्मान को, आत्मीय रूप से स्वीकार किया जाता था।

मन्दिर के प्रति लोगों की आस्था, निष्ठा, मूर्ति के तेजस्वी से ही सम्भव है, न की पुजारी या मन्दिर की भव्यता से।

यदि अध्यापक सर्वगुण सम्पन्न है तो छात्र का उनके प्रति आदर व सम्मान, अपने आप जाग्रत होता है क्योंकि हर छात्र की अभिरुचि अलग-अलग होती है। वह अपने गुरु को हर गुर में दक्ष देखना चाहता है। अध्यापक का पद त्याग एवं समर्पण का पद है। यदि किसी ग्राम के प्रत्येक व्यक्ति से हम सम्मान नहीं पा सकते हैं, तो यह पद और नए जीवन दोनों व्यर्थ हैं।

यह आलेख एक घटना से प्रेरित होकर लिखना पड़ रहा है। पिछले सत्र 2018-19, अप्रेल माह में हमारे विद्यालय का गरीब छात्र, जिसके पिता का अल्पायु में, कैन्सर के कारण देहान्त हो गया। भाई-बहिन, माँ का हाथ बँटाने, कार्य पर निकले थे और सड़क दुर्घटना में दोनों घायल हो गए। छात्र ICU के कौमा में चला गया।

जब इसका जिक्र साथियों से किया तो कोई सकारात्मक जवाब नहीं मिला। अन्ततोगत्वा, मैं उस छात्र से मिलने अस्पताल चला गया। जहाँ उसकी बड़ी बहिन दौड़कर, रिसेप्शन पर आई, जो छात्रा हमेशा मुस्कराती रहती थी, आज उसकी आँखें निःस्तब्ध थी, दो दिन से रो-रोकर लाल हो चुकी थी अब आँखों से बहने के लिए आँसू नहीं बचे थे।

उसने आते ही कहा 'सर मेरा भाई ठीक हो जाएगा?' बहिन का भाई के प्रति अथाह प्रेम, रिश्तों की गहराई ने मेरे अन्तर्मन को झकझोर दिया क्योंकि हम चार भाई हैं हमारी कोई बहिन नही है।

ICU में जब छात्र से मिला, तो पाया कि उसका ईलाज करने वाले डॉक्टर साहब भी, मेरे पूर्व शिष्य हैं। उन्होंने आश्वस्त किया कि छात्र जल्द ही ठीक हो जाएगा। अनायास ही मेरा ध्यान किसी शायर की पंक्तियों पर गया-

कौन कहता है कि आसमाँ में छेद नहीं होता,
एक पत्थर तो दिल से, उछालो यारो।

तुरन्त छात्र की माताजी का मोबाइल नम्बर, बैंक खाता नम्बर, IFSC कोड नोटकर करके वाट्स-अप के जरिए अपने पूर्व शिष्यों व साथियों से सहायता की अपील की। जिससे चारों ओर से अपार आर्थिक व सामाजिक सहायता प्राप्त हुई। कई बड़े ट्रस्ट (खाटू श्यामजी सीकर, सालासर बालाजी धाम चूरू) NGO साथ हो गए तथा 15 दिन ICU में रहने के पश्चात 'मदर डे' के दिन उस गरीब माँ को उनका स्वस्थ बेटा लौटा दिया।

कुछ दिन बाद जब दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम घोषित हुआ। तब उक्त छात्र रोहित हरिजन S/o स्वर्गीय श्री गोपाल लाल हरिजन 63.56% अंक लेकर प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ तो माँ की खुशियाँ दुगुनी हो गई।

इस पुनीत कार्य में हमारी जीव विज्ञान की व्याख्याता श्रीमती सन्ती देवी यादव का आर्थिक, सामाजिक, मानसिक रूप से प्रारम्भ से सहयोग, छात्र की माता व बहिन से निरन्तर सम्पर्क रखना, उनका आत्मबल बढ़ाना, सराहनीय रहा, जो अब भी जारी है क्योंकि छात्र का एक हाथ अभी से सुचारू रूप से कार्य नहीं कर रहा है।

मात्र ढाई साल की राज्य सेवा में, बालकों के प्रति स्नेह, त्याग, कर्त्तव्यनिष्ठा तथा विगत दो वर्षों का XII जीव विज्ञान विषय में शत्-प्रतिशत परीक्षा परिणाम देना सराहनीय है। अनुकरणीय है। वन्दनीय है।

युवा अध्यापकों का मनोबल बढाना, उन्हें उत्साहित करना व इनके कार्यों को सराहकर, अध्यापकों की गरिमा को बढ़ाना चाहिए। ताकि समाज में गुरु-शिष्य परम्परा को मजबूत किया जा सके। सुसंस्कृत समाज बनाया जा सके।

अतः आओ समाज में पुनः गुरु की गरिमा बनाए और अभिभावकों से सम्मान प्राप्त करते हुए इसे गुरुकुल बनाएँ। जहाँ राजा भी नतमस्तक होकर, गुरु को अपने पुत्र सौंप देता था। गुरु शिष्यों को सभी कलाओं में निपुण बनाता था। ताकि समाज में एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सके। सुदृढ़, सुसंस्कारित, चरित्रवान, राष्ट्र का निर्माण हो सके।

अध्यापक-विज्ञान-गणित
रा.उ.मा.विद्यालय गुण्डियागढ़
सांभरलेक, जयपुर-II

चिन्तन

कर्मण्येवाधिकारस्ते

❒ डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने स्वजन बन्धु-बान्धवों को युद्ध के लिए खड़ा देखा तब विषाद ग्रस्त होकर रथ में अपने धनुष बाण रखकर बैठ गया और युद्ध न करने का इरादा कर भगवान श्री कृष्ण से कहने लगा कि सामने खड़े अपने ही बन्धु-बान्धवों, रिश्तेदारों का संहार कर मैं कौनसा सुख-साफल्य पा सकूँगा। ऐसे निराश अर्जुन की किंकर्त्तव्य मूढ़ अवस्था देखकर भगवान श्री कृष्ण ने भगवद्गीता में वर्णित अध्याय दो के सैतालीसवें श्लोक में कहा था कि- 'हे अर्जुन तेरा अधिकार तो मात्र कार्य करना है उसके फल प्राप्ति पर कोई अधिकार नहीं क्योंकि फल तो तुम्हारे द्वारा किए गए कार्य की सम्पन्नता पर निर्भर करता है। हजारों वर्ष पूर्व गीता में उद्धृत यह श्लोक आज भी समस्त मानव जाति के लिए उत्प्रेरक और समीचीन बना हुआ है। इससे हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने कार्य में तभी सफलता मिल सकेगी जब हम कार्य करते समय अपनी धारणा, अपना अवधान, ध्यान समस्त ओर से हटाकर अपने कर्म पर केन्द्रित करेंगे। प्रायः देखा गया है कि मनुष्य कार्य करने से पूर्व उसकी सफलता का दिवा स्वप्न देखने लगता है कि जिसके परिणामस्वरूप कार्य करते समय वह पूर्ण रूप से दत्तचित्त होकर कार्य पर केन्द्रित नहीं हो पाता और अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। यह ठीक उसी प्रकार है जब सूर्य की असंख्य किरणें पृथ्वीतल पर पड़ती हैं तो बिखर जाती हैं। इससे गर्मी तो बढ़ती है परन्तु शरीर को झुलसा देने वाली नहीं होती परन्तु जब उन्हीं प्रखर किरणों को किसी नतोदर (Convex) शीशे में गुजारते हुए नीचे किसी एक बिन्दु पर रखी वस्तु पर केन्द्रित करते हैं तब आग जलने लगती है। मनुष्य की भी यही गति है। यदि वह भी सभी ओर से अपनी दृष्टि, मनोभावनाएँ, कल्पनाएँ हटाकर कार्य सम्पन्न करने में ही समस्त शक्ति केन्द्रित करें तो अवश्य ही उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी इसमें कोई सन्देह नहीं।

कभी-कभी बार-बार प्रयत्न करने पर भी हम अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते और असफलता के लिए अपने भाग्य, साधन अथवा परिस्थितियों को दोष देकर उस कार्य को छोड़ देते हैं और उससे उदासीन हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में दोष व्यक्ति का स्वयं का होता है किसी अन्य का नहीं। इसका प्रमुख कारण भाग्य, परिस्थिति आदि न होकर कार्य करते समय अपेक्षित ध्यान का केन्द्रण न होना है। जब हम किसी कार्य को उसका परिणाम ईश्वर पर छोड़कर उसमें संलग्न हो जाते हैं तब अधिकांश विचार, अनिश्चितता, सफलता, असफलता की संदिग्धता आदि स्वतः समाप्त हो जाती हैं और हमारा मन-मस्तिष्क स्वतः कार्य पर केन्द्रित हो जाता है और परिणाम आशानुकूल हो जाता है। विद्यालयों में छात्र कक्षाओं में एक ही अध्यापक, पुस्तकें आदि के माध्यम से पढ़ते हैं परन्तु जब परीक्षा देते हैं तब परिणामों में उनके अन्तर मिलता है। कारण, पढ़ते समय अध्ययन में मन की एकाग्रता, संयम आदि का कम या अधिक भाव रहता है। अतः सफल बनने के लिए हमें फल का अधिकार ईश्वर पर छोड़कर तन-मन से पूर्ण समर्पित होकर कार्य करना अपना धर्म मानकर चलना चाहिए।

गीता में अनेक प्रकार के कार्यों को योग के नाम से संबोधित किया है। योग का अर्थ वस्तुओं को जोड़ना है। अतः कार्य की सफलता भी कर्म योग पर निर्भर करती है जिससे हमें अपनी समस्त इन्द्रियों को सांसारिक वस्तुओं को आकर्षण-विकर्षण, संलिप्तता, मोह, लोभ त्याग कर मन मस्तिष्क पर केन्द्रित कर कर्म करने में संलग्न हो जाना चाहिए तभी सफलता निश्चित होगी। हमारे देश की अनेक योजनाएँ, उपयोजनाएँ जब पूर्ण तन्मयता से आयोजित की जाती हैं उनमें सफलता निश्चित रूप से मिलती है परन्तु जब उनमें कोई व्यवधान उपस्थित हो जाता है, पूर्ण समर्पित भाव में कमी आ जाती है। योजनाओं के सफल होने में संदिग्धता आ जाती है। अतः हमें प्रत्येक स्थिति में समत्व भाव बना कर कार्य करना चाहिए।

कुछ व्यक्ति दूसरों के कार्यों को असफल होते देख अथवा उनके कठिन कार्यों की दुरुहता को देखकर कार्य करने का साहस नहीं कर पाते अतः जीवन में अच्छे परिणाम, अच्छे निष्कर्ष प्राप्त नहीं कर पाते। यह उनकी अकर्मण्यता का परिणाम रहता है। गीता में जहाँ कर्म करना ही व्यक्ति का अधिकार बताया गया है वहाँ फल की प्राप्ति में उसका अधिकार नहीं होने पर भी मनुष्य को अकर्मण्य होकर नहीं बैठना चाहिए क्योंकि जब व्यक्ति अकर्मण्यता के कारण कार्य करने से विमुख हो जाएगा। उसे आगे बढ़ना और अपेक्षित फल की प्राप्ति कैसे हो पाएगी। अतः प्रत्येक मनुष्य में धैर्य, आत्म विश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति होनी चाहिए। जिससे बार-बार असफल होने पर भी उन्हें चुनौतियाँ मानकर कार्य करते हुए सफलता का रसास्वादन कर सके। आज विश्व के अनेक कार्य इसी प्रकार की कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण और अटूट निष्ठा के उदाहरण हैं।

मनुष्य का आत्म विश्वास परमात्मा में आस्था का परिचायक है। अतः इसी आस्था को हृदय में संजोए हम कठिन परिस्थिति में दुरुहतम कार्य सम्पन्न करने में सफल होते हैं। किसी भी कार्य की सफलता चार बातों पर निर्भर करती है। प्रथम-मन में निराशा छोड़ आशावान और स्थितप्रज्ञ होकर कार्य करना चाहिए जिससे हमारा ध्यान इच्छित कार्य पर केन्द्रित रहे। द्वितीय-व्यक्ति को मन में सदैव सत्यमेव जयते के साथ कर्म एवं जायते की भावना रखते हुए निस्पृह भाव से कर्म की ओर प्रवृत्त रहना चाहिए तीसरे विचार के अनुसार हमें सदैव अपने कार्य की गति एवं प्रगति पर ध्यान देना चाहिए। कार्य की पूर्णता के लिए आवश्यक हो तो निराश न होते हुए बार-बार प्रयत्न करना चाहिए। यदि कार्य में अनुकूलता मिलती है तो अति उत्साहित न होकर सामान्य स्थिति बनाए रखना चाहिए और प्रतिकूल परिस्थिति आने पर विषाद और निराशा को अनुभूति नहीं होनी चाहिए। इसके साथ ही स्वयं में आत्म विश्वास सदवै बनाए रखना चाहिए। परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी विषम एवं दुरुह हों मनुष्य को सदैव कर्म योगी की भाँति निर्लिप्त भाव से निरन्तर कार्य में संलग्न रहना चाहिए। चतुर्थ और अन्तिम विचार के अनुरूप परिणाम को ईश्वर के अधीन छोड़कर निश्चिंत भाव से समस्त इन्द्रियों को एकाग्र करते हुए कार्य में तल्लीन रहना चाहिए। सफलता निश्चित रूप से प्राप्त हो सकेगी।

आशा है मनुष्य भगवद्गीता के इस उपदेश को आत्मसात करके पूर्ण निष्ठा एवं पूर्ण मनोयोग से कार्य को सम्पन्न करेंगे तब उनकी अधिकांश दुष्प्रवृत्तियाँ, चिन्ताएँ, हताशाएँ, कुण्ठाएँ, द्वेष, लोभ, मोह, ईर्ष्या, वैमनस्य आदि दूर हो सकेंगे और उनका जीवन संयमित और सुखी बन सकेगा।

4/82, चौटाला रोड, वार्ड 23,
संगरिया, जिला-हनुमानगढ़ (राज.)-335063
मो: 8561069369

बालिका शिक्षा

ग्रामीण इलाकों में शिक्षा

❐ सुमन ओझा

मैं एक छोटे से विद्यालय में अध्यापन का कार्य करती हूँ। कई अभिभावकों से बात कर उनके विचारों से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हुआ। गाँव में आज भी शिक्षा का अभाव देखा गया। साथ ही उनकी वही पुरानी सोच। बेटे को बेटी से ज्यादा महत्त्व देना। चाहे घर में खाने की समस्या हो रही हो परन्तु बेटे को अंग्रेजी माध्यम के निजी विद्यालय में प्रवेश दिलवाया जाना, जो अभी सिर्फ 3-4 वर्ष का ही है। लेकिन बेटी जो उम्र में उससे बड़ी करीबन 9-10 वर्ष की। उसे कभी राजकीय विद्यालय में भी प्रवेश नहीं दिलवाया गया।

जब मेरे द्वारा उनसे इसका कारण पूछा गया तो उनका प्रति उत्तर सुनकर बड़ा दुःख हुआ। जवाब था-इन्हें तो पराए घर जाकर चौका-चूल्हा ही करना है। वही सीखा कर इन्हें होशियार करेंगे तो आगे काम आएगा। इन्हें पढ़ाकर क्या करना है? एक दिन बच्ची अपने भाई का खाना लेकर विद्यालय आई और वहीं खड़ी होकर पास की कक्षा में अध्यापक जी द्वारा बच्चों को जो पढ़ाया जा रहा था, वह सुनकर ज्यों का त्यों गुनगुनाते हुए पुनः अपने घर को चली गई। अब तो वह रोज ही आती, सुनती और गुनगुनाते हुए चली जाती। इन सब बातों से अनजान उसके माता-पिता को उसकी रुचि का कोई ध्यान ही नहीं।

आज परीक्षा का दिन था। कक्षा में अध्यापक जी मौखिक परीक्षा ले रहे थे। संयोगवश उसके भाई को जवाब देना था। लेकिन वह प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। बाहर खड़ी बहन ने उस प्रश्न को सुना और सही-सही उत्तर दे दिया। इस नई आवाज को सुनकर अध्यापक जी ने पूछा- 'यह कौन बोला?' लड़की ने डरते हुए कहा-'मैंने।' अध्यापक जी ने पुनः पूछा- 'क्या तुम स्कूल जाती हो?'

इस बार लड़की का उत्तर नहीं में था। अध्यापक जी ने आश्चर्य से पूछा-'क्यों! क्यों नहीं जाती? लड़की ने बताया- माँ कहती है, घर का काम करो, पढ़ाई लड़कियों के लिए नहीं

है। इसलिए नहीं जा सकती। अध्यापक जी का अंतिम प्रश्न- क्या तुम्हें पढ़ना अच्छा लगता है? लड़की ने कहा- हाँ मैं भी पढ़ना चाहती हूँ, कुछ बनना चाहती हूँ। लेकिन माँ-बाबा....

लड़की के हौंसले बड़े बुलन्द थे। उसकी लगन को देखकर अध्यापक जी ने उसके माता-पिता से बात की। बहुत मुश्किल से उसके माता-पिता उसे पढ़ाने को तैयार हुए। उसे राजकीय विद्यालय में प्रवेश दिलवाया गया। उसने खूब मेहनत व लगन से पढ़ाई करके शाला में प्रथम स्थान प्राप्त किया। हर वर्ष वह प्रथम स्थान से उत्तीर्ण हो सम्मानित होती। उसके माता-पिता भी उसके पुरस्कृत होने पर प्रसन्न होते।

परन्तु यह प्रसन्नता उस दिन समाप्त हो गई, जब दुर्भाग्य ने उस घर में दस्तक दी। एक दुर्घटना में उसके माता-पिता का निधन हो गया। घर में बड़ी होने के कारण उसे अपनी पढ़ाई छोड़कर पुनः भाई-बहन के भरण-पोषण के लिए काम करना पड़ा। फिर भी उसने अपना सपना नहीं छोड़ा। वह रात में अपने भाई की किताबों से पढ़ती और साथ ही अपनी बहन को भी पढ़ाती। आज उसे शिक्षा का महत्त्व समझ आ चुका था। उस अध्यापक को वह आज भी याद करती है मन-ही-मन नमन करती है, जिसके कारण उसने कुछ अक्षर ज्ञान प्राप्त किया और आज कुछ कर पाने के योग्य हो सकी। इसलिए यदि हम अपने जीवन में किसी को शिक्षित कर पाएँ तो इससे बड़ा पुण्य और कुछ नहीं है। साथ ही हमें बालिकाओं की शिक्षा पर भी विशेष जोर देना चाहिए।

सब्जी मण्डी के पास, 173/2 प्रताप
कॉलोनी, ब्यावर (राज.)
मोः 9461517208

भारत की महान नारियाँ

- **विजय लक्ष्मी पंडित :** दुनिया की पहली महिला जो संयुक्तराष्ट्र महासभा की अध्यक्ष बनी। भारत की पहली महिला जो केन्द्रीय मंत्री बनी।
- **मीराबाई :** अपनी भक्ति के दम पर भगवान का अस्तित्व बता पाना वो भी कलयुग में, ऐसा शायद ही किसी के साथ हुआ हो लेकिन मीराबाई उन्हीं में से एक थी। भगवान श्री कृष्ण की अनन्य भक्त मीराबाई को हमेशा के लिए याद किया जाएगा।
- **इंदिरा गाँधी :** एक राजनीतिक पुरोधा जिसे आयरन लेडी कहा जाता था और अटल बिहारी ने इन्हें दुर्गा का नाम दिया था। भारत की पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न से सम्मानित इंदिरा गाँधी ने ये साबित कर दिया कि अगर एक महिला राजनीति में आ जाए तो देश का शासन भी अच्छी तरह संभाल सकती है।
- **दुर्गावती :** गोंड की महारानी दुर्गावती ने अकबर के खिलाफ मोर्चा खोला था। सबसे बहादुर और युद्ध कौशल में निपुण महिलाओं की श्रेणी में इनका नाम लिया जाता है।
- **आनंदी गोपाल जोशी :** भारत की पहली महिला डॉक्टर जिन्होंने एलोपैथी की डिग्री अपने नाम की थी। इसके अलावा कहा जाता है कि अमेरिका जाने वाली भी वो पहली महिला थी।
- **सरोजिनी नायडू :** अपनी लेखन शैली से लोगों के दिलों में अलख जगाने वाली इस महिला को शायद ही इतिहास भूल पाए। सरोजिनी नायडू को भारत कोकिला भी कहा जाता था और आजादी की लड़ाई में इनका अहम् योगदान रहा।
- **चंद्रमुखी बसु :** भारत के इतिहास में पहली ऐसी महिला जो ग्रेजुएट हुई और अपना एक अलग मुकाम बनाया। इनके साथ कादम्बिनी गांगुली भी थी।

पुस्तक समीक्षा

तीसरी आँख का सच

कविः **राजाराम स्वर्णकार,** प्रकाशक : **नव किरण प्रकाशन, बीकानेर,** संस्करण : **2019,** पृष्ठ संख्या : **80,** मूल्य : ₹ 200/-

साधु ऐसा चाहिए जैसे सूप सुभाव
सार-सार को गहि लैहे, थोथा देय उड़ाय।।

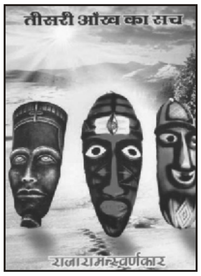

काव्य आदिकाल से आधुनिक काल तक हिमालय से गंगा नदी तक की यात्रा में कई पड़ाव पार करके छन-छन करती आई है। जिसमें आधुनिक काल के इस दौर में भी कविता सबसे सशक्त विधा साबित हुई है। आधुनिक काल के सशक्त समीक्षक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है- जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान देना कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस देना कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते है। कवि का उदात्त कर्म ही काव्य है जिसके द्वारा वह अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है, ऐसे शब्दार्थ का साकार उपस्थान गुम्फन ही 'काव्य' अभिधा को मंडित करता है। खड़ी बोली के पुरोधा कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ने काव्य-प्रयोजन को इस प्रकार व्यक्त किया है जो हम सभी के लिए अनुकरणीय है-

''देती है भर भाव में सरसता कान्तोक्ति में मुग्धता
खोती है तम-तोम लोक-उर का आलोक-माला दिखा, कानों में चित में विमुग्ध मन में है ढाल पाती सुधा हो दिव्या सविता-समान कविता देती महानन्द है।''

नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती छायावादी स्तंभ की कवयित्री महादेवी वर्मा के अनुसार 'काव्य का प्रयोजन मानव-हृदय में समाज के लिए अनुकूलता उत्पन्न करना है।''वर्तमान कविता साठोतरी कविता अर्थात सन् 1960 के बाद की आधुनिक कविता कहलाती है-इसमें सपाटबयानी, यानी अभिधात्मक कथन अधिक है। परन्तु यह जन-जीवन के काफी निकट आ गई है, राजनीति के अधिक निकट होने के कारण भाषा में शब्दावली का अभूतपूर्व भण्डार खुल गया है, आज का कवि वैयक्तिक और सामूहिक जिम्मेदारी को एक साथ निर्वहन कर रहा है।

इसी कड़ी में कविवर राजाराम स्वर्णकार का दूसरा सद्यः हिन्दी कविता संग्रह 'तीसरी आँख का सच' आता है, समीक्ष्य कृति में कुल उनचास कविताओं के मनके एक माला रूप में हमारे सामने हैं। शास्त्र कहते हैं कि उनचास मसदगुण चौबीसों घंटे आकाश में विचरण करते है वैसे ही उनचास भावों/विचारों से कवि ने कविता रूपी साँचों में ढाला है। जो कवि की अनुभूतियों/संवेदनाओं को दर्शाती है।

अपने आस-पास से निकले समाज की गलियों में चक्कर लगाती तिराहे-चौराहे को पार करती मानव मन में विचरती, अलग-अलग रूपों, छवियों को निहारती, साधती/खोजती भावनाओं की सौंदर्यानुभूति प्रदान करती है। समाज में फैली विद्रूपताएँ, रिश्तों में आई विसंगतियों/आडम्बरों को नकारने का साहस जुटाती। 'बहुजन हिताय: बहुजन सुखाय' की कामना करती हुई आगे बढ़ती है।

सामाजिक जागरूकता एवं भारतीय दर्शन को लिए प्रथम कविता 'राग' कोमल भाव/मन में उगाव। दिल की धड़कनों से जुड़ा/एक-दूसरे के प्रति लगाव संवेदना का तरह प्रवाह/हो जैसे फूल में पराग। यही तो कहलाता है राम। दूसरी कविता बोधि भी सतर्क करती है तो 'मौन बनाम शब्द' में 'देवत्व की अर्चना की है, सृष्टि में संस्कृति की रचना की है/ये तो अनहद है/हदबंदी नहीं है इनमें/किसी तरह की दलबंदी नहीं है इनमें' कवि आसपास के जनतंत्र की भावनाओं को स्वर देता है। 'कविता सही समय' में 'दड़बड़-दड़बड़' देशज शब्द का प्रयोग किया है।

कवि वर्तमान समय के प्रति सजग है, शब्दों के प्रति सचेतक है- कवि लिखते हैं- 'तीसरी आँख का सच' 'क्योंकि'/ एक तीसरी आँख शब्दों के भी होती है/जो शांत है तो अभ्युदय है। पर कुपित हो तो समझलो/ महाप्रलय है/अच्छा हो, हम शब्दों में पूजा भाव रखें/शब्दों को समुचित सम्मान दें। इस गरिमामय संसार में/शब्द की संजीवनी का वरदान लें। यही है शांति का स्वरूप और हमारा रक्षा कवच। और यही है तीसरी आँख का असली सच। इसे न माने तो परिणाम युद्ध है/और मान लें तो शांति है, भगवान बुद्ध है।'' (तीसरी आँख का सच पृष्ठ सं. 28) -इसी कड़ी में 'हम तो लिखते जाएँगे।'

-कुछ लोगों का भाग्य यही वे निंदा रस बरसाएंगे हमको भी परवाह नहीं है हम तो लिखते जाएंगे।' के माध्यम से राजनीति, समाज में फैली बेरोजगारी, भुखमरी, मिलावट, रिश्वतखोरी पर व्यंग्य कसा गया है। रिश्तों में आई दरारें, पीड़ाओं का बयान करती कविता 'रातभर लिखता रहा' जो काफी प्रसिद्ध हुई है- ''दर्द कागज पर मेरा बिछता रहा, सो न पाया रात भर लिखता रहा'' 'पीढ़ी का भटकाव' व 'क्यूं आखिर क्यूं' दोनों (रातभर लिखता रहा पृष्ठ सं. 33) आधुनिक बोध कराती कविताएँ हैं।

दूसरे पड़ाव की यात्री कविताओं में 'रंगीन तबीयत का मस्तमौला' बारहमासा आधारित 'ऋतु चक्र' बतला तू कौन है, 'भाग्यचक्र' स्वर्ण परी 'साजन के संग सजनी है' रो रहा है कोई, 'एक हकीकत' 'कैसा चलन' 'दुनिया फानी है' जैसी कविताएँ हैं जो हृदय में झंकार झंकृत करती है, आगे कुछ गीत भी है 'मिलन ऋतु आई रे, आया रे...' 'मेघा आओ....मेघा आओ' और 'नारी जब हुंकार भरेगी।'

गीत साजन संग सजनी में लिखते हैं ''प्रातः अगर सुनहरा है तो चाँदी जैसी रजनी है वह घर भाग्यवान है जिसमें साजन के संग सजनी है।'' गीत- 'बतला तू कौन है' में शृंगार रस का संयोजन शिल्प की दृष्टि से बेजोड़ है-'रूप किशोरी चन्द्र चकोरी ये बतला तूं कौन है बार-बार पूछा पर रहती मौन है। उषा किरण सी दिव्य लालिमा तेरे चेहरे पर छाई उज्ज्वल धवल चाँदनी में खिलती है तेरी करुणाई।'' (बतला तू कौन है पृष्ठ सं. 43) तीसरे पड़ाव के यात्री की कविताओं में 'जिंदगी का फलसफा' गीत है 'भाग्यचक्र' 'रात-भर' गीत 'वारे-वारे' 'ऐसे गीत हमारे हैं' गीत तथा मुक्तक, कुंडलिया दोहा-सोरठा वर्णमाला, सोनेट का प्रयोग रुबाइयां, हाइकू लिए गए है।

दर्शन व अध्यात्म से सराबोर गीत- 'जिंदगी के मर्म को, अब तक समझ पाया नहीं,

आधा जीवन जी लिया पर हाथ कुछ आया नहीं (पृष्ठ सं. 45) है।' आस्था जिसकी रही भगवान में, बंदा वह सुख नींद सोए रातभर (पृष्ठ सं. 48) पर इसी तरह का गीत है। 'ऐसे गीत हमारे हैं' में कवि वर्तमान परिस्थितियों से सीधा रूबरू करवाता है-'शब्दों की पूजा करता में-नहीं जुगाली करता हूँ, क्लिष्ट, बेतुके सारहीन भारी शब्दों में से दूर रहूँ, भारी भरकम शब्दों की मैं नहीं हमाली करता हूँ'' कहकर आधुनिक कविता के सरल, सहज सपाट बयानी की हक बयानी करता है। इसी कड़ी में मुक्तक पर अपनी बात को स्पष्ट कहकर मुक्तक के गुण पर कहते हैं- 'मुक्तक वे जो मौलिकता के साथ कसावट लाते हैं वहीं मोतियों की थाली में, वे मुस्कान जगाते हैं केवल चार पंक्तियों में जो सारभूत बातें कह दें ऐसे मुक्तक ही सचमुच सच्चे मुक्तक कहलाते है।'' आपने कुंडलिया छंद भी लिखा है-''मित्र वही जो जगत में होता सदा सहाय, सबसे पहले विपत्ति में जो आता है धाय, जो आता है धाय, प्राण तक भी दे सकता, संकट जैसा भी हो खुद पर वह ले सकता।' (कुंडलिया पृष्ठ सं. 67)

एक सचेतक कवि सदैव कुछ नयी रचना तथा नये प्रयोग की हिमाकत करता है। राजाराम स्वर्णकार ने दोहा-सोरठा वर्णमाला का जो बखूबी वर्णन किया। सृजन किया उसके लिए उन्हें साधुवाद, अंग्रेजी विद्या सोनेट जो पश्चिम से भारतीय काव्य का अंग बनी, कवि ने सोनेट भी लिखे है तथा कई गजल के साथ रुबाइयों का रचाव कर अपनी कलम को नई ऊँचाइ दी है।

संग्रह की भाषा सरल, सहज एवं सपाट बयानी लिए सच को सच की आँख से देखने का सार्थक प्रयास किया है। कवि राजाराम की कविता यात्रा से गुजरते यही लगा कि-इन्होंने अपने जीवन के अनुभवों, अनुभूतियों के मर्म को छूकर, संवेदनाओं व संप्रेषण को नए प्रयोगों में ढाल नया कलेवर प्रस्तुत किया है। पुस्तक पर गहरी पैठ रखने वाले बीकानेर के साहित्य मर्मज्ञ कवि, व्यंग्यकार हमारे गौरव श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' ने अपनी भूमिका में लिखा है 'शब्द ब्रह्म है तो सत्य जो स्वयं भी ब्रह्म है यदि उन दोनों का मिलन हो तो कविताओं में मानवीय राग आए बिना नहीं रहती। मानवीय राग प्रकृति के साथ हाथ में हाथ डालकर चलती है। महाभारत काल से लेकर सारा द्वंद्व मनुष्य के मनोभावों और मनस्थितियों का है। एक प्रकार से देखा जाए तो यह जीव जगत इन्हीं मनोभावों का एक महाकाव्य है और कविता उसी का अंग है।'

समीक्षकः **डॉ. कृष्णा आचार्य**
उस्ताबारी, बीकानेर (राज.)-334001
मो: 8619402147

ये दरिया इश्क़ का गहरा बहुत है

कविः **पुरु मालव**, प्रकाशक : **कलमकार मंच, 3 विष्णु विहार, दुर्गापुरा, जयपुर-18,** संस्करण : **प्रथम दिसम्बर 2018**, पृष्ठ सं. : **88**, मूल्य : ₹ 150/-

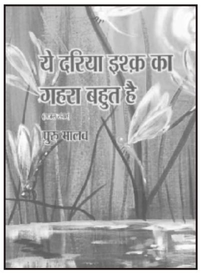

ज़िंदगी सिर्फ साँसों का लगातार चलते रहने वाला सिलसिला नहीं, बल्कि जिंदगी नाम है उस बाजी का, जिसे हम टुकड़ों में कभी जीतते हैं, तो कभी हारते हैं। शायर बहुत हस्सास तबीयत का होता है। वह अपनी आँखों में आँसुओं का समंदर क़ैद करना भी जानता है और जरूरत पड़ने पर उन्हीं आँखों में अंगारे रखने में भी गुरेज़ नहीं करता। शायर भी इसी समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। उसके पास उपलब्ध लेखन के सभी उपकरण समाज द्वारा ही प्रदत हैं। इसलिए वह समाज से विमुख कैसे हो सकता है? भाई पुरु मालव जी ने भी इस हाल ही में प्रकाशित अपने प्रथम गजल-संग्रह 'ये दरिया इश्क का गहरा बहुत है' में अपनी वैयक्तिकता के साथ-साथ समाज, राजनीति, प्रेम, अध्यात्म सहित कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर बहुत अच्छे शेर कहे हैं। पेशे से अध्यापक पुरु मालव जी ने समाज में जो देखा, उसी का जिक्र बड़े सलीके से अपने अशआर में किया है। जीवन में कई मोड़ ऐसे आते हैं, जब हम जीतकर भी स्वयं को हारा हुआ महसूस करते हैं। सब कुछ पाकर भी हाथ खाली नजर आते हैं। हमसे वही वस्तु खो सकती है, जो हमारे पास होगी। जो होगी ही नहीं, उसके खोने का कैसा डर? एक बहुत प्यारा शेर उन्होंने कहा है-

सब कुछ पाकर भी क्यों मुझको
कुछ खोने का डर लगता है

उर्दू के एक शायर ने कहा है-

'हर आदमी में होते हैं दस-बीस
आदमी/जिसको भी देखना हो, कई बार
देखना।'

आज समाज में यही हो रहा है। होंठों को कानों तक खींच लेने के अभ्यस्त लोगों के चेहरों को देखकर उनकी वास्तविक स्थिति का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है। दोस्त भी आस्तीनों में खंजर छिपाए फिरते हैं। एक बहुत सुंदर शेर देखें-

चेहरों पर शातिर मुस्कानें
हाथों में खंजर लगता है।

युवावर्ग आज परिश्रम करने की बजाय शॉर्टकट से सफलता पाने की जुगत में लगा रहता है। उसे मेहनत से अधिक विश्वास भाग्य पर है। हाथों की लकीरों को ही वह अपनी कामयाबी का श्रेय दे देता है। ऐसे लोगों को पुरुजी ने बहुत अच्छा संदेश दिया है-

अपने हाथों की लकीरों पे गुमाँ यूं न करो
ये लकीरें नहीं हालात बदलने वाली
मुश्किलों से घबराकर राह में न रुक जाना
ये तो काम आती हैं हौंसला बढ़ाने में।

संयोग और वियोग, शृंगार के ये दोनों ही पक्ष महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन देखने में आता है कि दैहिक शृंगार अपनी सीमाओं में ही क़ैद रह जाता है, जबकि आत्मिक शृंगार अध्यात्म का रूप लेता है, इसलिए दैहिक से आत्मिक शृंगार महत्त्वपूर्ण है। कवि कहता है-

और रखें क्या सामाँ पथ में
लेकर तेरी याद चले हैं

प्रेम के कुछ अलग रूप देखें

रोज़-रोज़ मिलने से अजनबी न बन जाएँ
दूरियाँ न बढ़ जाएँ और पास आने से
रंग अपने चेहरे का रोज़ जो बदलते हैं
उनपे क्या असर होगा आइना दिखाने से
तूने तो सौगंध ली थी भूल जाने की मुझे
फिर तेरे होंठों पर क्यों मेरे तराने आ गए
और तनहा हुआ जाता हूँ मैं तनहाई में
छोड़कर याद तेरी जब चली जाती है मुझे

समाज में धर्म-मजहब, जात-पाँत और मंदिर-मस्ज़िद के नाम पर कुछ नफरतों का कारोबार कर रहे हैं। परिणामस्वरूप आए दिन दंगें-फसाद होते रहते हैं। कवि की पैनी नज़र ने उसका भी उल्लेख कुछ यूँ किया है-

देखो नफरत की आँधी में
जाने कितने ख्वाब जले हैं

देश में हर पाँच साल में चुनावों के नाम पर

वोटों की फसल काटी जाती है। नए-नए वादों और दावों के साथ राजनीतिक पार्टियों के प्रत्याशी मैदान में उतरते हैं, परंतु जीतने के बाद वे अगले पाँच साल तक नज़र नहीं आते। पुरु जी ने बहुत अच्छा शेर कहा है-

जो तुझे भूख-प्यास देते हैं
वो न पानी, न रोटियाँ देंगे
उजालों में भटके हुए रहनुमा
अँधेरों को रास्ता दिखाने लगे

आज भौतिकता की अंधी दौड़ गाँवों से शहरों की तरफ पलायन करा रही है। नगरीय चकाचौंध ने इंसान के दिलों-दिमाग पर पर्दा डाल दिया है। वह अच्छे और बुरे, अपने और पराये का अंतर भूलता नजर आता है। धन कमाने की लालसा में गाँव छोड़कर शहर आने वाले इंसान को पैसे की हवस ने इतना व्यस्त कर दिया है कि वह अपने बारे में भी नहीं सोच पाता-

गाँव में घर थे, सड़क-मोटर नहीं
शहर में हर चीज़ है पर घर नहीं
रोज़ मुझसे मिलने आता है कोई
रोज़ कहता हूँ कि मैं घर पर नहीं
हसरत है कि दुनिया की हर इक चीज़ खरीदूँ
पर अपना ज़मीर इसलिए बेचा नहीं जाता

सुंदर आवरण से सुसज्जित 88 पृष्ठीय इस पुस्तक में 68 गजलें, एक नज्म और 41 दोहे हैं। अशआर में कहीं- कहीं व्याकरण संबंधी दोष भी दृष्टिगोचर होते हैं। पुरु मालव जी से अपेक्षा है कि वह अग्रजों की देखरेख में अपने साहित्यिक सफर को और अधिक परिश्रम के साथ जारी रखेंगे।

समीक्षक : **डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'**
द्वारा जिला गन्ना अधिकारी
गन्ना भवन सिविल लाइन्स, मुरादाबाद-244001
मोः 9927376877

कोचिंग @ कोटा

उपन्यासकारः **अरुण अर्णव खरे**, प्रकाशकः **ए. पी. एन पब्लिकेशन्स, उत्तम नगर, नई दिल्ली 59**; संस्करणः **2019**, पृष्ठ संख्याः **130**, मूल्य : **₹ 180/-**

श्री अरुण अर्णव खरे के उपन्यास कोचिंग @ कोटा के अंतिम खंड की इन पंक्तियों से यह समीक्षा शुरू करना चाहूँगा 'पापा कैसे है आप?' 'जिसका बेटा ज़िंदगी की सबसे निर्णायक जंग अकेले लड़ रहा हो- उसके बाप को कैसा होना चाहिए।' पापा का उत्तर चौंकाने वाला था और स्वर में चिर परिचित अंदाज से बिल्कुल भिन्न दर्द से भीगा हुआ सा। मेरे बेटे ने मेरा मान बढ़ाया है अब बाप की परीक्षा है बाप फेल नहीं होना चाहता इस परीक्षा में। तुम्हारी माँ ने दिन में ही सब कुछ बता दिया था मुझे। इंसानियत से बड़ी कोई डिग्री नहीं होती। तुम जो फैसला करोगे मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' ये टेलीफोनिक संवाद इस उपन्यास के नायक समीर और उसके पिता के बीच के हैं। जिस पिता ने अपने सारे अरमान संजोकर अपने पुत्र को अच्छे संस्थान से इंजीनियरिंग की डिग्री लेने के लिए कोचिंग हेतु कोटा भेजा। अपनी माँ यानी समीर के दादी के देहावसान पर भी समीर को घर आने से रोका ताकि उसकी पढ़ाई में बाधा न पहुँचे। आज जब समीर प्रवेश परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर चुका है और उसको किसी भी अच्छे संस्थान में प्रवेश मिल सकता तब वह अपनी दोस्त चित्रा के एक्सीडेंट के कारण प्रवेश परीक्षा नहीं दे पाने के कारण उसके साथ ही अगले साल दुबारा प्रवेश परीक्षा देकर उसके साथ ही एडमिशन लेने का निर्णय कर लेता है। पिता और पुत्र के बीच संवाद में पिता की पुत्र के साथ पूरी सहमति के रूप में होती है। यह बहुत कम मामलों में हो पाता है जब कोई पिता लाखों रुपये खर्च करके अपने अरमानों को पूरा होते हुए देखने के बावजूद भी पुत्र को इस बात की सहमति दे दे कि वह एक साल बाद अपनी दोस्त चित्रा के साथ ही परीक्षा दे। उपन्यास के इस भाग के साथ अन्य भागों में भी कई ऐसे भावुक पल हैं जो पाठक की भावनाएँ उन पात्रों और घटनाओं से जोड़ देते हैं।

यह उपन्यास कोटा में जाकर कोचिंग लेकर तैयारी करने वाले किशोर वय के लड़के-लड़कियों को किन-किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। और किन तनावों को झेलना पड़ता है। उनका सजीव चित्रण है। कोचिंग हेतु पहली बार घर छोड़ने वाले किशोरों की मनःस्थिति कोटा में कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों के बीच होने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा, प्रतिस्पर्धा में पिछड़ने पर डिप्रेशन में चले जाने, संस्थानों द्वारा प्रवेश परीक्षाओं में टॉप पर आने वाले विद्यार्थियों जिन्होंने उन संस्थानों से कोचिंग ली ही नहीं फिर भी पैसे देकर समाचार पत्रों और मीडिया में दिए गए इंटरव्यू में अपने संस्थान द्वारा कोचिंग प्राप्त किया हुआ बताने के हथकंडे, उनके फोटो छाप कर विज्ञापन करने, कोचिंग लेने वाले विद्यार्थी के असफल होने के कारण कर्ज में डूबे पिता द्वारा आत्महत्या करने, विद्यार्थियों के साथ विकृत सेक्स प्रवृत्ति रखने वाले लोगों की जानकारी आदि बहुत सी घटनाओं को उपन्यास में इस तरह संजोया गया है कि पाठक खुद उन स्थितियों का हिस्सा बन जाता है।

नायक समीर और नायिका चित्रा की दोस्ती का स्वरूप न तो परम्परागत गर्ल फ्रेंड बॉय फ्रेंड जैसा लगने वाला है और ना ही लव स्टोरी जैसा। यह एक लड़के और लड़की के बीच सच्ची और निश्चल दोस्ती वाला है जिन्होंने कभी मर्यादा की कोई सीमा नहीं लांघी। कहानी, कविता और व्यंग्य में अपनी एक अलग पहचान बना चुके लेखक अरुण अर्णव खरे का यह पहला उपन्यास है। इस उपन्यास की भाषा शैली को उन्होंने किशोरोचित बनाने के लिए खुद उस आयु वर्ग के बीच होने वाले संवादों को सुना और समझा ताकि भाषा शैली और परिवेश उनके अनुरूप और उनके बीच संप्रेषणीय बना सके। उपन्यास के पात्रों और घटनाओं का इस तरह से तारतम्य बैठा कर उनका प्रस्तुतिकरण किया गया है जिससे पाठक केवल पाठक बनकर ही नहीं रहता बल्कि खुद को दर्शक के रूप में पाता है। उपन्यास आदि से अंत तक पाठकों को बाँधे रखता है।

एपीएन. पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित इस उपन्यास का आवरण लगभग त्रुटिरहित मुद्रण, साज सज्जा आदि के कारण एक अलग छाप छोड़ता है। यह उपन्यास एक श्रेष्ठ साहित्यिक कृति होने के साथ-साथ उन बच्चों और अभिभावकों के लिए मार्गदर्शन करने वाली एक अच्छी पुस्तक के रूप में भी उपयोगी है जो कोटा में जाकर मेडिकल और तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए तैयारी हेतु कोटा जाना चाहते है।

समीक्षक : **प्रोफेसर डॉ. अजय जोशी**
बिस्सों का चौक, बीकानेर-334001 (राजस्थान)
मोः 09414968900

बाल शिविरा

शैक्षिक भ्रमण

मेरी अहमदाबाद की यात्रा

❒ नोजी

राष्ट्रीय आविष्कार अन्तर राज्य भ्रमण की रवानगी दिनांक 6 जनवरी, 2020 को प्रातः 10:30 बजे किसान छात्रावास, बाड़मेर से हुई। यहाँ से हम कुल 8 लड़कियाँ व 11 लड़के रवाना हुए। हमारे दल प्रभारी श्री दीपाराम जी (प्रधानाचार्य-बायतु) व श्रीमती सुमित्रा बैरवा (शारीरिक शिक्षिका-भाड़का) के निर्देशन में गए। बाड़मेर जिले में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले 20 विद्यार्थियों का इस भ्रमण में चयन हुआ। जिला शिक्षा अधिकारी श्री हरीकृष्ण आचार्य ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया।

बाड़मेर से रवाना होकर हम धोरीमन्ना पहुँचे वहाँ पर हमारे साथ 1 लड़का व 1 लड़की चढ़े। फिर वहाँ से रवाना होकर हम सांचोर पर रूके वहाँ पर हमने खाना खाया और फिर आगे चल दिए। सांचोर से हम धानेरा होते हुए डीसा पहुँचे। वहाँ पर हमें बड़े-बड़े अस्पताल दिखे। वैसे तो हम जानते हैं कि यहाँ की एक बहुत अच्छी पहचान है, वह पहचान है यहाँ के डॉक्टर। डीसा को पार करने के बाद हमें रंग-बिरंगे फूलों की कतारों वाले खेत खलिहान हमें बहुत ही अद्‌भुत लगे। इनमें सबसे अधिक मनमोहक सरसों के खेत थे जो बहुत ही रोमांचित लगे, एक पल के लिए तो हम इन गुजरात की सड़कों पर खो गए।

मैंने मेरे जीवन में ये इतना मनमोहक दृश्य पहली बार देखा और यह भ्रमण भी मेरे जीवन का पहला भ्रमण था। डीसा होते हुए हम पालनपुर पहुँचे। वहाँ से हम शीतपुर पहुँचे वहाँ पर हमने चाय पी। फिर हम अहमदाबाद के लिए आगे निकल दिए। शीतपुर के बाद हम मैसाना होते हुए 9 बजे हम अहमदाबाद पहुँचे और वहाँ पर हम मयूर पार्क होटल में रूके।

उसके बाद हमने रात को 12 बजे खाना खाया फिर सो गए। हमारे रूम की व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी। एक रूम में 2 बैड, 2 पंखें, 1 टी.वी. व लाईट की पूरी व्यवस्था थी। हमारे कमरे में मेरे अलावा 4 और लड़कियाँ थी। हमारे अलावा जोधपुर, जालौर, जैसलमेर व नागौर जिले के दल भी इसी यात्रा में आये हुए थे।

7 जनवरी 2020 को प्रातः 6 बजे उठे। फिर स्नान करके 8 बजे हमने नाश्ता किया। नाश्ते के बाद कुछ समय तक हमने आराम किया। फिर 10 बजे हम अहमदाबाद की Science City देखने के लिए रवाना हुए। साइन्स सिटी पहुँचकर सर्वप्रथम हमने GSLV मिसाइल देखी। साइन्स सिटी में एक पृथ्वी ग्लोब बना हुआ था जो अन्दर से पाँच मंजिल का था। फिर हमने उस ग्लोब में प्रवेश किया और एक ही बार में पूरी पृथ्वी का दर्शन किया। उससे हमें ऐसा लगा कि हम एक अलग ही दुनिया में है।

उस ग्लोब में हमें पृथ्वी की प्रत्येक वस्तु देखने को मिली। मानव शरीर के प्रत्येक अंग को अच्छी तरह से देखा। प्रकृति की हर वस्तु उस ग्लोब में मिली। इन सब वस्तुओं की जानकारी हमारे दल प्रभारी श्री दीपाराम जी दे रहे थे। इन सब चीजों को देखकर हम सबको बहुत आनन्द आया। फिर हमने साइन्स सिटी स्टेडियम व गार्डन का भ्रमण किया और एक बजे वहाँ से रवाना होकर हम वापस मयूर पार्क होटल पहुँचे। वहाँ पहुँचकर हमने खाना खाया और कुछ समय तक आराम किया।

फिर 4 बजे हम साबरमती आश्रम के लिए रवाना हुए। कुछ समय बाद साबरमती आश्रम पहुँचे। वहाँ पहुँचकर हमने गाँधीजी के जीवन चरित्र के बारे में गाँधीजी द्वारा लिखित कथनों से जानकारी ली। वहाँ पर हमें गाँधीजी के जन्म से मृत्यु तक का वर्णन मिला और वहाँ पर हमने अलग-अलग जगह के चरखे देखे और गाँधीजी के तीनों बन्दरों की मूर्ति देखी जिससे हमें बुरा न देखने, बुरा न सुनने व बुरा न बोलने की शिक्षा मिली।

साबरमती आश्रम, साबरमती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ से हम साबरमती नदी के तट पर गए। साबरमती नदी का दृश्य बहुत ही मनोहर था। कुछ समय तक साबरमती नदी का मनमोहक दृश्य देखा, ग्रुप फोटो खिंचवाए और 7:00 बजे हम कांकरियाँ तालाब के लिए रवाना हो गए।

आधा घण्टा बाद हम कांकरियाँ तालाब पहुँचे। वहाँ पर हमने कांकरियाँ तालाब के चारों ओर भ्रमण किया। वहाँ पर हमने देखा कि कांकरियाँ तालाब के अन्दर कुछ नावें और टॉय ट्रेन चल रही थी।

कांकरियाँ तालाब पर हम ज्यादा नहीं रूके क्योंकि हमें वापस मयूर पार्क होटल पर जाना था। 9 बजे हम होटल पहुँचे और खाना खाया फिर सो गए।

8 जनवरी 2020 को सुबह 7 बजे उठे फिर स्नान आदि करके 10 बजे खाना खाया, फिर हम सब अपना-अपना सामान लेकर 12 बजे होटल से रवाना हो गए।

हमारी अगली यात्रा अक्षरधाम की यात्रा थी। कुछ समय बाद हम अक्षरधाम पहुँचे। अक्षरधाम का दृश्य हम अपने शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। अक्षरधाम का दृश्य बहुत ही अच्छा था, अक्षर धाम का बगीचा बहुत ही अच्छा था। वहाँ पर पौधों से बहुत सारे हाथी बनाए हुए थे।

अक्षरधाम में स्वामीनारायण जी की मूर्ति के साथ-साथ वहाँ पर लक्ष्मी नारायण, राधे-कृष्णा व श्रीराम-सीता की मूर्ति लगी हुई थी। मन्दिर दर्शन के बाद हम म्यूजियम में गए। म्यूजियम में प्रवेश के बाद हमें ऐसा लगा कि जैसे हमने जंगल में प्रवेश किया हो, वहाँ पर कई जंगली जानवर देखने को मिले तो कई झरनें देखने को मिले। स्वामी नारायण जी 11 वर्ष की उम्र में सन्यासी बने थे और उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया।

इतना सब कुछ देखकर हम म्यूजियम से बाहर आए। फिर 7 बजे हम अक्षरधाम से घर के लिए रवाना हो गए। वहाँ से निकलकर हम सुबह 3 बजे बाड़मेर पहुँचे। इस प्रकार मेरी अहमदाबाद की यात्रा सम्पूर्ण हुई।

इस भ्रमण में मुझे बहुत ही आनन्द आया।

छात्रा, कक्षा XIth
रतासर, चौहटन
स्कूलः रा.उ.मा.वि. रतासर, चौहटन, बाड़मेर

बाल शिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

शिक्षक

जीवन का जो सार सिखाए, वे होते हैं शिक्षक।
डूबती नैया जो पार लगाए, वे होते हैं शिक्षक।।
समय बड़ा बलवान है, हमसब ने यही सुना है।
जो समय को बदल दिखाए, वे होते हैं शिक्षक।
माता-पिता तो चलना सिखाते बचपन में हमें।
राह सही जो हमें बतलाए, वे होते हैं शिक्षक।
रोना तो फितरत है अपनी, इस झूठे संसार में।
रोते को हँसना सिखाए, वे होते हैं शिक्षक।
नाजुक कलियों से होते हैं हमसब बचपन में,
ज्ञान महक से जो महकाए, वे होते हैं शिक्षक।
नन्हें गुलाब है 'रमा', हम भारतवर्ष की बगिया के,
ज्ञान कलश से गुलफाम बनाऐ, वे होते हैं शिक्षक।

रमा शर्मा

कक्षा-12th (विज्ञान वर्ग), श्री तुलसीराम रामनारायण राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शोभासर (चूरू)

हे डर न डरा तू मुझे

हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मेरी स्वतंत्रता को जंजीर बनाता है
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मेरे पैरों में पड़ी जंजीरों को डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मेरी खुशियों को दुख बनाता है
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मेरे दुखों को डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मेरे सपनों को पतझड़ बनाता है
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मेरे जीवन में आने वाले पतझड़ को डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मेरी जीत को हार बनाता है
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मुझसे होने वाली हार को डरा
हे डर न डरा तू मुझे................
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मुझे अच्छा बनने से न डरा
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मुझे बुरा बनने से डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मुझे ऊँचाइयों से न डरा
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मुझे नीचे गिरने से डरा
हे डर न डरा तू मुझे..........
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मुझे दिल के टूट जाने से न डरा
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मुझे किसी का दिल तोड़ने से डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मेरी सच्ची आवाज को झूठी खामोशी बनाता है
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मेरी झूठी खामोशी को डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............
हे डर तू चला जा यहाँ से
तू मुझे मेरी परीक्षाओं से न डरा
और डराने का इतना ही शौक है तुझे
तो मेरी कमियों से डरा
हे डर न डरा तू मुझे...............

किरण सैनी

कक्षा-12th, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुस्तला, सवाई माधोपुर

बचपन की यादें

अक्सर याद आता है वह गुजरा हुआ कल।
वह पापा की गोदी में वह बीते हुए हर पल।।
वह रोना वह हँसना वह रूठना मनाना।
ना कल की चिंता ना आज की फिक्र।।
वह मम्मी की थाली मनुहार से खिलाना।
बहुत याद आता है वह गुजरा हुआ कल।।
वह पापा की गोदी वह हँसता हुआ पल।।
बचपन का वह जमाना
खुशियों का खजाना था।।
चाहत सितारे तोड़ने की
दिल तितलियों का दीवाना था।
दादी माँ की वह परियों की कहानी
सुन राजी होना था।।
रोने की कोई वजह न होती
बस हँसने का बहाना होता था।
अब नहीं वैसा जमाना,
जैसा हमारा प्यारा बचपन होता था।।
स्कूलों के भी वो क्या दिन थे
जो दोस्तों के साथ हँसता था।
वो भी क्या बचपन था
हर रोज याद हमें दिलाता है।।
बीता हुआ सुन्दर बचपन
याद रोज हमें आता है।।

इन्द्रा नाई 'इन्दू'

कक्षा-10, रा.बा.उ.मा.वि. कालू, लूणकरणसर, बीकानेर

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे-छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है।

–वरिष्ठ संपादक

माँ तेरी बेटी

माँ मैं तेरे आँगन की शोभा
तेरे आँगन को महकाऊँगी
दूजे घर जाकर माँ तेरा सम्मान बढ़ाऊँगी
देख लोग कहेंगे, किस माँ की यह बेटी है
तेरा सिर कभी झुकने नहीं दूँगी
हर जगह सम्मान तुझे दिलाऊँगी
सम्मान इतना दिलाऊँगी, लोगों के मुख से
फिर निकले, किस माँ की यह बेटी है
सिर ऊँचा कर मैं कहूँगी
मैं उस माँ की बेटी हूँ
जिस माँ ने मुझको जन्म दिया
इस दुनिया को मुझे दिखलाया
लोगों के सम्मुख खड़े होकर बोलना मुझे
सिखाया
जिसने निडर होकर, साहसी बनकर
आगे बढ़ना मुझको सिखलाया।

मीना सैनी
कक्षा-12, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुस्तला, सवाई माधोपुर (राज.)

पिता

पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है।
पिता अंगुली पकड़ें बच्चे का सहारा है।।
पिता कभी खट्टा, कभी मीठा है
पिता पालन है, पोषण है, परिवार का
अनुशासन है।।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है।
पिता है तो बच्चों का इंतजार है।।
वरना पिता के बिना हर मकान सूना है।
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने है।।
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने है।
पिता से ही माँ की बिन्दी और सुहाग है।।
पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति
है।
पिता सुरक्षा है अगर सिर पर हाथ है।।
पिता नहीं तो बचपन भी अनाथ है।
पिता से ही हर बेटी की जुड़ी खुशी है।।
पिता के बिना हर बेटी दुखी है।
विश्व में किसी देवता का स्थान दूजा है।।
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है।

इन्द्रा नाई 'इन्दू'
कक्षा-10, रा.बा.उ.मा.वि. कालू, लूणकरणसर, बीकानेर

माँ

मेरा साहस मेरी इज्जत मेरा
सम्मान है माँ,
मेरी ताकत मेरी पुँजी मेरी पहचान है माँ।।
सारे घर की रौनक उनसे सारे घर की
शान हैं माँ,
मेरी इज्जत मेरी शौहरत मेरा रुतबा मेरा
मान है माँ।।
मुझको हिम्मत देने वाली मेरा
अभिमान है माँ।
सारे रिश्ते उनके दम से सारे
नाते तुमसे है माँ।।
सारे घर की दिल की धड़कन सारे घर
की जान है तू माँ।
मैं हूँ वो किस्मत वाली जो रब ने तेरी
गोद में जन्म दिया है माँ।।
मैं रब से गुजारिश करूँ की सारी
खुशियाँ मिले तुझको माँ।
मेरी अच्छी और सच्ची
मेरी प्यारी ओ माँ।।

इन्द्रा नाई 'इन्दू'
कक्षा-10, रा.बा.उ.मा.वि. कालू, लूणकरणसर, बीकानेर

चौपाई से जानिए हमारे राज्यों के नाम

राम नाम जपते, अत्रि मत गुसिआउ।
पंक में उगो हमी, अही के छबिझाउ।।

नाम वर्ण /शब्द	नाम राज्य				
रा	राजस्थान	अ	अरुणाचल प्रदेश	उ	उत्तराखण्ड
म	मध्यप्रदेश	त्रि	त्रिपुरा	गो	गोवा
ना	नागालैण्ड	म	महाराष्ट्र	ह	हरियाणा
म	मणिपुर	त	तमिलनाडु	मि	मिजोरम
ज	जम्मू कश्मीर	गु	गुजरात	अ	असम
प	पश्चिमी बंगाल	सि	सिक्किम	ही	हिमाचल प्रदेश
ते	तेलंगाना	आ	आन्ध्र प्रदेश	के	केरल
		उ	उत्तरप्रदेश	छ	छत्तीसगढ़
		पं	पंजाब	बि	बिहार
		क	कर्नाटक	झा	झारखण्ड
		मे	मेघालय	उ	उड़ीसा

हेमलता गुर्जर
कक्षा-6, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कासोरिया, बनेड़ा, भीलवाड़ा

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

बीकानेरः एम.एम.स्कूल में भामाशाह हर्ष ने बनवाई प्रयोगशाला

बीकानेर–राजकीय मोहता मूलचंद उच्च माध्यमिक विद्यालय मे रसायन विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण दिनांक 8 जनवरी 2020 को स्वर्गीय बल्लभ राजकुमार हर्ष जी की पुण्यस्मृति मे उनकी धर्म पत्नी डॉ रजनी हर्ष एवं उनके पुत्र यशश्वी हर्ष द्वारा अपने पिताजी की कर्मभूमि रहे इस विद्यालय में किया गया। कार्यक्रम मे गणमान्य प्रबुद्धजनों ने मुख्य अतिथी के रूप में भूमिका निभाई। कार्यकम मे डॉ. एस.एन. हर्ष, डॉ बसंती हर्ष, जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) मा.शि.बीकानेर श्री उमा शंकर किराडू व अति. जिला शिक्षा अधिकारी बीकानेर श्री सुनील बोड़ा, समाजसेवी श्री राजेश चूरा, श्री शशिमोहन मूंधड़ा, रोटरी क्लब आद्यआ प्रेसिडेंट ललीता बजाज, एडवोकेट ओम प्रकाश हर्ष एवं एडवोकेट हीरालाल हर्ष, श्री मनमोहन हर्ष, समाजसेवी एवं राजनीतिज्ञ श्री महेंद्र कल्ला, स्कूल संस्थाप्रधान मय स्टाफ एवं रोटरी इन्टरनेशनल एवं अनेक क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम मे भामाशाह परिवारजन सर्वश्री गिरिराज हर्ष, सुरेंद्र जोशी, जमनादास जी व्यास, अशोक कुमार पुरोहित, शिवा पुरोहित, गणपत व्यास, सौरभ पुरोहित, कामिनी व्यास ने भी अपनी सहभागिता निभाई। संस्थाप्रधान द्वारा भामाशाह हर्ष परिवार का विद्यालय परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

बाड़मेरः बसन्त पंचमी पर विद्यारम्भ संस्कार सम्पन्न

बाड़मेर–राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय सांसियों का तला, बाड़मेर में बुधवार को संस्थाप्रधान मुकेश बोहरा अमन के सान्निध्य में बसन्त पंचमी के पावन अवसर पर नवप्रवेशी बच्चों का विद्यारम्भ संस्कार आयोजित हुआ। बसन्त पंचमी पर विद्यारम्भ संस्कार के दौरान 20 बालक-बालिकाओं का तिलक लगा माला पहनाकर विद्यारम्भ संस्कार सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में 8 बालक व 12 बालिकाओं का विद्यारम्भ संस्कार किया गया। कार्यक्रम में संस्थाप्रधान ने कहा कि हमारे जीवन में विद्या और ज्ञान से ही सही मायनों में सच्ची खूबसूरती और खुशी आती है। व्यक्ति के लिए शिक्षा महती आवश्यकता है। इस दौरान विद्यालय स्टाफ दीप्ति चौधरी, मिथलेश चौधरी, सफूरी, जिन्नत व जमियत सहित बड़ी संख्या में विद्यालय के बच्चे उपस्थित रहे।

बारांः गणतंत्र दिवस पर किया बच्चों ने नाटक का मंचन

बारां–राजकीय माध्यमक विद्यालय ठूंसरा में 71 वां गणतंत्र दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया जिसमें छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनमोहक प्रस्तुतियाँ दीं। विशेष आकर्षण का केंद्र छात्रों द्वारा प्रस्तुत स्वच्छता जागरूकता नाटक–'गाड़ी वाला आया भैया कचरा निकाल' का मंचन किया गया जिसमें फिजा, रौनक, फैजान, नरगिस, अंकिता आदि ने प्रतिदिन कचरे के निस्तारण का संदेश दिया। मुख्य अतिथि सरपंच दिव्या शर्मा थी तथा अध्यक्षता संस्थाप्रधान श्री रघुवीर प्रसाद शर्मा ने की। इस अवसर पर विद्यालय में सर्वाधिक उपस्थित रहने वाले, सबसे स्वच्छ, सबसे अनुशासित छात्र-छात्राओं को पुरस्कार भी दिया गया। संचालन वरिष्ठ अध्यापक तरुण कुमार मित्तल ने किया। इस अवसर पर संविधान की उद्देशिका का पाठ भी करवाया गया।

झालावाड़ : हरिगढ़ में गणतंत्र दिवस मनाया

झालावाड़– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हरिगढ़ में गणतंत्र दिवस मनाया गया। प्रधानाचार्य प्रमोद कनेरिया द्वारा ग्रामवासियों का स्वागत करते हुए प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए पुरस्कार की घोषणा की। प्रेम दाधीच द्वारा गणतन्त्र दिवस पर देश भक्ति के लिए अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का संकल्प दिलाया। बालिका विद्यालय की खुशबू एवं समूह द्वारा ओरीचिरैया पर नृत्य प्रस्तुत किया। सुरेंद्र एवं समूह द्वारा देशभक्ति नाटक प्रस्तुत किया।सुरेंद्र बंजारा द्वारा गीत प्रस्तुत किया। खांडल विद्यालय की बालिका अनुसूइया झाला द्वारा रजवाड़ी ओढ़नी पर नृत्य किया। बालक नितिन द्वारा कविता पाठ किया गया।

बाड़मेर: गुपड़ी में गणतंत्र दिवस पर अनेक कार्यक्रम आयोजित

बाड़मेर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुपड़ी में 71वां गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य मोनिका जोशी ने की। मुख्य अतिथि सरपंच पुष्पा देवी तेली, विशिष्ट अतिथि भिंडर पंचायत समिति प्रधान प्रतिनिधि रघुवीर सिंह, उपसरपंच लक्ष्मण सिंह देवड़ा ऐडवोकेट, पूर्व सरपंच एवं वार्ड पंच महेंद्र सिंह चौहान, वार्ड पंच अंबा लाल गमेती, कृषि पर्यवेक्षक नंदलाल शर्मा, ग्राम विकास अधिकारी शिव लाल गाडरी, विद्यालय एसडीएमसी सचिव चंद्रभान व्यास, नाथू सिंह देवड़ा, एसएमसी अध्यक्षा राधा देवी वैष्णव आदि थे। अतिथियों का स्वागत प्रथम प्रभारी रईस मोहम्मद खान व व्याख्याता प्यारे लाल सालवी ने किया। प्रधानाचार्य मोनिका जोशी ने ध्वजारोहण किया एवं मार्च पास्ट की सलामी ली। छात्र-छात्राओं ने पीटी परेड व्यायाम प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। जिसको ग्रामवासियों ने बहुत सराहा। कार्यक्रम में भामाशाह प्रेरक मंगल कुमार जैन और चंद्रभान व्यास की प्रेरणा से दौलत सिंह एंड डीएस शर्मा एनटीसी कंपनी की ओर से 21,000 रुपये नकद राशि, नंदलाल शर्मा कृषि पर्यवेक्षक बीएलओ ने, 5,000 रुपये नकद, पूर्व सरपंच एवं वार्ड पंच महेंद्र सिंह चौहान ने पाँच ऑफिस चेयर, उपसरपंच लक्ष्मण सिंह देवड़ा ने पाँच ऑफिस चेयर, सरपंच पुष्पा देवी तेली ने ग्यारह ऑफिस चेयर, राम सिंह देवड़ा की ओर से एक ढोल, पंकज खटीक की ओर से पन्द्रह बड़ी थाली और कटोरी, वार्ड पंच अंबा लाल गमेती की ओर से 6,000 रुपये तक का ऑफिस टेबल, दौलत सिंह एनटीसी कंपनी की ओर से जरूरतमंद गरीब छात्रों को स्वेटर उपलब्ध कराने, विधायक प्रतिनिधि ओम सिंह देवड़ा ने कक्षा 10 और 12 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बालक और बालिका को पाँच सौ इक्यावन रुपया नकद पुरस्कार देने की घोषणा की, अभय सिंह देवड़ा ने 15 अगस्त 2020 को विद्यालय के छात्र-छात्राओं को भोजन कराने की घोषणा की, सरपंच पुष्पा देवी तेली ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों को 500 रुपये नकद पुरस्कार देने और दौलत सिंह एनटीसी कंपनी ने 1,000 रुपये नकद समारोह में मिठाई वितरण हेतु प्रदान करने की घोषणा की। विद्यालय विकास समिति, विद्यालय प्रबंधन समिति और समस्त ग्रामवासियों की ओर से सभी भामाशाहों का तिलक माला और ऊपरण से सम्मान किया गया एवं चंद्रभानु व्यास व्याख्याता और मंगल कुमार जैन वरिष्ठ अध्यापक का दशम राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जिला कलेक्टर द्वारा सम्मानित होने पर समारोह में प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका जोशी ने सार्वजनिक अभिनंदन किया। समारोह का संचालन मंगल कुमार जैन वरिष्ठ अध्यापक ने किया। आभार प्रदर्शन प्रथम प्रभारी रईस मोहम्मद खान ने किया।

चित्तौड़गढ़: राज्य स्तरीय इंस्पायर अवार्ड से सम्मानित

चित्तौड़गढ़– राजकीय उच्च माध्य. विद्यालय खेरपुरा जिला चित्तौड़गढ़ की छात्रा चंदा धाकड़ ने झुंझुनू एकेडमी झुंझुनू में जनवरी 2020 में आयोजित राज्य स्तरीय इंस्पायर अवार्ड प्रदर्शनी में अपने मॉडल 'हेण्डी पेन' को प्रदर्शित किया। यह विद्यालय का प्रथम अवसर है जब किसी छात्रा ने इंस्पायर मानक अवार्ड में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रधानाचार्या मधुबाला शर्मा जितेन्द्र शर्मा, कृष्ण कांत शर्मा, उमराव लाल बाकोलिया, वरि. व्याख्याता दिनेश भट्ट आदि ने छात्रा को शुभकामनाएँ देते हुए उत्साहवर्धन किया। शाला स्टाफ द्वारा छात्रा को माला पहनाकर स्वागत कर अभिनन्दन किया गया।

सीकर: भामाशाह ने अपने जन्मदिन पर बच्चों को दिए उपहार

सीकर– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय माण्डेला छोटा, सीकर में फतेहपुर शेखावाटी के गौभक्त शिक्षा प्रेमी, समाजसेवी भामाशाह एवं प्रवासी उद्योगपति श्री लक्ष्मीनारायण गोयनका ने अपना जन्मदिन विद्यालय में उत्साहपूर्वक मनाते हुए बच्चों को ज्योमेट्री बॉक्स, स्कूल बैग, मकर संक्रान्ति के अवसर पर डोर-पंतग का उपहार देकर स्वादिष्ट भोजन के साथ मनाया। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर भामाशाह को जन्म दिन की बधाई दी। प्रधानाध्यापक श्री गोपालसिंह ने भामाशाह का धन्यवाद करते हुए विद्यालय की भौतिक स्थिति के बारे में बताया तो भामाशाह ने आभार जताते हुए कहा कि विद्यालय की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति में यथासंभव सहयोग मिलता रहेगा। अभिभावकों एवं स्टाफ की उपस्थित में हुए इस कार्यक्रम का संचालन अध्यापिका शबनम भारतीय ने किया।

अजमेर : भामाशाह ने किया स्वेटर वितरण

अजमेर– राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, सरगांव (जवाजा) अजमेर में महावीर इन्टरनेशनल ब्यावर द्वारा विद्यालय के 80 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण किए। भामाशाह श्री सुरेशचन्द वैष्णव एवं श्री राकेश कुमार अग्रवाल ने संयुक्त रूप से 50 विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण किए।

संस्थाप्रधान ने भामाशाह संस्था एवं भामाशाहों का आभार व्यक्त करते हुए सम्मानित किया। स्वेटर वितरण कार्यक्रम में पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी श्रीमती रेखा शर्मा, प्रधानाध्यापक श्री नन्द किशोर कुमावत, एसएमससी. अध्यक्ष श्री प्रहलाद गुर्जर व उपाध्यक्ष श्री नरसिंह चौहान, श्री हरलाल प्रजापत आदि भामाशाहों सहित महावीर इन्टरनेशनल ब्यावर के सर्वश्री अमित पारीक, राजू पहाड़िया व सुनील सकलेचा सदस्य एवं अभिभावकों की उपस्थिति में हुए कार्यक्रम का संचालन श्री प्रशांत भारिल्ल ने किया।

बीकानेर: विद्यालय में सरस्वती मंदिर का निर्माण व लोकार्पण समारोह

बीकानेर– शहीद मेजर पूरणसिंह राजकीय फोर्ट उच्च माध्यमिक विद्यालय, बीकानेर में 30 जनवरी, 2020 को बसंत पंचमी के अवसर पर विद्या की देवी माता सरस्वती के मंदिर का उद्‌घाटन जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक श्री उमाशंकर किराडू के कर कमलों से किया गया। इस मंदिर का निर्माण प्रधानाचार्या श्रीमती जाग्रति पुरोहित की प्रेरणा से शाला में कार्यरत भौतिक विज्ञान के व्याख्याता श्री गोपीकृष्ण व्यास ने 45,000 रुपये की लागत से अपनी माताजी स्व. श्रीमती गायत्री व्यास की स्मृति में करवाया, जिसमें मंदिर में सुंदर पेवर ब्लाक्स तथा मार्बल जड़ित 3 फुट चौकी, मार्बल मंदिर उस पर माँ सरस्वती जी की प्रतिमा लगवाई। विद्यालय प्रांगण में जिस वाटिका में मंदिर स्थित हैं, वहाँ प्रधानाचार्या द्वारा वर्षपर्यन्त चलाए गए विकास कार्यो के अंतर्गत उसका भी सौन्दर्यीकरण किया गया। जिसमें पेड़ों की छंटाई, चारदीवारी मरम्मत, रंगरोगन व अनमोल वचन लेखन, बंद फवारे की मरम्मत कर इसे बॉटेनिकल गार्डन के रूप में विकसित करने के उद्देश्य से जीव विज्ञान शिक्षण में उपयोगी पौधों का रोपण किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी महोदय ने इस अवसर पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए बालिका शिक्षा का महत्त्व बताया तथा बालकों को ज्ञानार्जन करते रहने का संकल्प दिलाया। संस्थाप्रधान ने अतिथियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। विद्यालय से सेवानिवृत्त श्री नन्दकिशोर पारीक ने विधि विधान से माँ सरस्वती का पूजन किया जिसकी समस्त पूजन सामग्री संस्कृत की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती किरण शर्मा ने भेंट की। प्रसाद वितरण संस्थाप्रधान व सुन्दर वस्त्रों व्याख्याता श्रीमती कल्पना व्यास की तरफ से किया गया। इस सम्पूर्ण आयोजन में शाला परिवार के सर्वश्री राजेन्द्र यादव, शिवकुमार भार्गव, राजेन्द्र पारीक, पवन गहलोत आदि स्टाफ सदस्यों ने सहयोग किया।

झालावाड़: माता-पिता का पूजन और वार्षिकोत्सव कार्यक्रम

झालावाड़– हरिगढ़ के राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय में शुक्रवार को मातृ-पितृ पूजन दिवस व वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें बालिकाओं ने माता-पिता व बुजुर्गों की सेवा और सम्मान का प्रण किया और प्रेरणादायी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी पुरुषोत्तम माहेश्वरी थे। जबकि अध्यक्षता सरपंच भवानी शंकर बैरवा ने की। विशिष्ट अतिथि मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मोहन लाल राठौर व पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी प्रमोद कनेरिया थे। कार्यक्रम की शुरूआत में प्रधानाध्यापक प्रेमचंद दाधीच ने स्कूल की वर्ष भर की गतिविधियों और उपलब्धियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इसके बाद बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ दी। बालिका खुशबू रेगर ने अंग्रेजी में भाषण दिया और कक्षा दो की बालिका दिव्या भाटिया व प्रतिभा रेगर ने कई देशों और उनकी राजधानियों के नाम धाराप्रवाह सुनाए। इस दौरान स्कूल की 155 बालिकाओं ने अपने माता-पिता का तिलक लगाकर व माल्यार्पण व आरती उतारकर पूजन किया। इस दौरान स्कूल की सभी बालिकाओं ने माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा और सम्मान करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में जिलाशिक्षा अधिकारी ने कहा कि माता-पिता की सेवा और सम्मान करने से ही यहाँ प्राप्त की शिक्षा असल में फलीभूत होगी और बच्चों के व्यक्तित्व में निखार आएगा। इस कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर अन्य स्कूलों में भी ऐसे अनूठे कार्यक्रम होने चाहिए। सरपंच भवानी शंकर बैरवा ने कहा कि विद्यालय में किसी भी प्रकार के भौतिक संसाधन की कमी को दूर करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहेंगे। कार्यक्रम में शिक्षक सरोज मीणा, रामसिया मीणा, कहकशा, प्रियंका दुबे, कविता नागर, सियाराम, मोहनसिंह, ओमप्रकाश सेन, मुरारी लाल, बालचंद, रामविलास व दीपक रेगर ने व्यवस्थाओं का संचालन किया।

पाली : शिक्षक शर्मा वृक्ष-वर्धक पुरस्कार से सम्मानित

पाली– श्री खेताजी धन्नाजी राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय दादाई, जिला पाली के अध्यापक पर्यावरण प्रेमी श्री भरत शर्मा को

वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण कार्य में उल्लेखनीय कार्य करने पर वन विभाग पाली की ओर से वृक्ष वर्धक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री जब्बर सिंह सोलंकी ने श्री शर्मा को प्रशस्ति पत्र व पाँच सौ रुपये का चैक प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान मिलने पर कार्यवाहक प्रधानाचार्य श्री पुखराज देवासी सहित विद्यालय परिवार की ओर से श्री शर्मा को आभार व्यक्त करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

बाँसवाड़ा : वार्षिक उत्सव एवं पीटीएम सभा सम्पन्न

बाँसवाड़ा–कुशलगढ़ के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजौरी बड़ी के वार्षिक उत्सव एवं पीटीएम सभा में मुख्य अतिथि के तौर पर बोलते हुए विधायक रमिला खड़िया ने कहा कि क्षेत्र में शिक्षा से ही विकास का रास्ता निकलेगा। अत: आप सभी क्षेत्रीय लोगों से मेरा व्यक्तिगत निवेदन है कि अपने बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में विद्यालय भेजकर शिक्षा की अलख जगाएँ। इस अवसर पर अध्यक्षता करते हुए स्थानीय विद्यालय के संस्थाप्रधान राजकुमार बुनकर ने विधायिका को स्थानीय विद्यालय के

विकास हेतु एक ज्ञापन सौंपा तथा विद्यालय विकास योजना के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम के संयोजक स्थानीय विद्यालय के शारीरिक शिक्षक कमलेश कुमार चौधरी ने बताया कि विधायक रमिला खड़िया ने स्थानीय विद्यालय में टीएसपी योजना के तहत 5 कमरों के निर्माण की घोषणा की। जिसका उपस्थित सभी अभिभावकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने करतल ध्वनि बजाकर स्वागत किया। इस अवसर पर अभिभावकों एवं शिक्षकों ने 80,000 रुपये का नगद सहयोग किया। सरपंच खुशवा भाभोर ने ग्राम पंचायत से हर संभव विद्यालय के विकास में सहयोग का आश्वासन दिया। रालू भाभोर ने 50 कट्टे सीमेंट एक कमरे के निर्माण के लिए देने की घोषणा की। विद्यालय के सभी शिक्षकों ने 2,100-2,100 रुपये का योगदान दिया। इस अवसर पर पूर्व सरपंच पुनिया भाई चरपोटा, एसएमसी. अध्यक्ष पारसिंह, उपसरपंच मंजुला डिंढोर, सुरेश चंद पहाड़िया, नाथूलाल भाभोर, रामकरण मेघवाल, दशरथ पाटीदार, भुरजी भाई, कमलेश कुमार दोषी, भूरालाल, सुरेश जोशी, सिंबू दयाल चौधरी, सुरेश, रमेश मीणा, विजय खड़िया, राम निवास हुड्डा, माँगीलाल भाबोर सहित कई शिक्षक अभिभावक तथा ग्रामीण महिलाएँ उपस्थित रहे।

जोधपुर : वार्षिकोत्सव, सखासंगम भामाशाह सम्मान व आशीर्वाद समारोह का संयुक्त आयोजन

जोधपुर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बेरडों का बास ओसिया में आज दिनांक 20 फरवरी को वार्षिकोत्सव सखा संगम, भामाशाह सम्मान तथा कक्षा 12 का आशीर्वाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के विशेष अतिथि श्रीमान एसडीओ ओसिया, श्रीमान सीबीईओ हरिराम जी चौधरी श्रीमान एसीबीओ तथा पूर्व प्रधानाचार्य बेरडों का बास श्री सुरजीत सिंह , प्रधानाचार्य नेवरा रोड कानाराम खोड, प्रधानाचार्य धुंधाड़ा अनोपाराम, आरती भीयाराम, भंवर दान, पूर्व पंचायत समिति सदस्य वीरमा राम, पूर्व सरपंच किसनाराम, पूर्व विद्यार्थी तथा भामाशाह नरेंद्र पाल सिंह रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया, उसके पश्चात विद्यालय में 26 जनवरी को घोषित किए गए सरस्वती मंदिर की नींव रखी गई तथा कार्यक्रम में विद्यालय के छात्रों द्वारा ग्राम स्वच्छता पर कमलेश तिवारी रचित नाटिका एवं चुनाव संबंधी हास्य नाटक तथा छात्राओं द्वारा सामूहिक नृत्य की प्रस्तुतियाँ दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों व कक्षा 12 के सभी विद्यार्थियों को पेट्रा क्रोटन प्लांट तथा रमेश अरोड़ा द्वारा लिखित पुस्तक 'विजय व्यक्तित्व' भेंट की गई। विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों को स्मृति-चिह्न तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। यह सभी पूर्व विद्यार्थी हैं जो किसी न किसी राजकीय सेवा में कार्यरत अथवा सेवा से सेवानिवृत्त हैं। विद्यालय में उत्कृष्ट कार्यों के लिए सुश्री दीपिका मीना, श्री अनिल वैष्णव, श्री भंवरलाल को सम्मानित किया गया। साथ ही स्थानांतरित कार्मिकों श्री सुरजीत सिंह व श्री मो. नियाज को अभिनन्दन पत्र प्रदान कर पौधे व पुस्तक भेंट की गई, पीईईओ. क्षेत्र से सेवानिवृत्त होने वाले उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रधानाध्यापक श्री भंवरलाल चौधरी को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर पौधा व श्रीफल भेंट किए गए। कार्यक्रम का संचालन श्री अन्नाराम तथा श्री परसराम द्वारा किया गया। कक्षा 12 के छात्रों ने विद्यालय को आटा पीसने की चक्की भेंट की तथा सभी उपस्थित ग्रामवासियों ने विद्यालय के भौतिक एवं शैक्षणिक विकास हेतु अधिक से अधिक सहयोग देने हेतु आश्वासन दिया। उपस्थित सभी ग्रामीण इस कार्यक्रम से अभिभूत थे। विद्यालय संस्थाप्रधान ने सभी आगंतुकों, अतिथियों, छात्रों, पूर्व विद्यार्थियों तथा पुस्तके भेंट करने हेतु उपलब्ध करवाने के लिए निर्मल गहलोत, उत्कर्ष संस्थान को धन्यवाद ज्ञापित किया।

झालावाड़ः झालरापाटन में भव्य वार्षिकोत्सव 'आगाज'का आयोजन

झालावाड़- रा.उ.मा. वि. झालरापाटन में भव्य वार्षिकोत्सव एवं पूर्व छात्र स्नेह मिलन समारोह 'आगाज' का आयोजन किया गया। स्वागत द्वार पर रोली तिलक लगाकर व भेंट देकर स्वागत किया गया। छात्राओं ने सरस्वती वंदना से शुरुआत की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे APC श्री आबिद खान और अध्यक्षता की श्री हेमन्त शर्मा जी ने। पूर्व छात्र परिषद की ओर से श्री संजय बापना और श्री कदिम जैन ने प्रतिनिधित्व किया। छात्र छात्राओं ने पंजाबी गिद्धा, मराठी लावणी, राजस्थानी और सूफी गानों पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा विद्यालय टीम श्रीमती मेहा गौतम, श्रीमती अरफीना खातून और श्रीमती मंजुला व्यास द्वारा तैयार की गई पेपर ड्रेसेस जिन्हें पहनकर बच्चों ने 'Say No To Poly Bags' और 'Save Nature' थीम पर रैंप वॉक शो किया। विद्यालय के पूर्व छात्र रहे श्री सिद्धेश्वर शर्मा द्वारा 10,000 रुपये विद्यालय विकास कोष को भेंट किए गए। पूर्व छात्र परिषद के औपचारिक गठन की पहल करते हुए श्री विजय मेहता, श्री संजय बापना, श्री पवन शर्मा, श्री बालकृष्ण सेठिया व श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी ने 5,000 रुपये प्रत्येक ने देकर Founder Member के रूप में शुरुआत की। प्रधानाचार्या श्रीमती प्रभा सेन ने कार्यक्रम में उपस्थित भामाशाह श्री अनूप जी शौरी और अरुण जी शौरी और अतिथियों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत मे सभी ने फागोत्सव का आनंद लिया और भोजन किया।

संकलन: प्रकाशन सहायक

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

3 डी प्रिंटिंग और नाइट्रोजन से हड्डी को किया कैंसर मुक्त

अहमदाबाद– सिविल अस्पताल कैंपस स्थित गुजरात कैंसर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट (जीसीआरआइ) में एक बच्ची के पैर को नई तकनीक से कैंसर मुक्त करने में सफलता मिली है। गुजरात में पहली बार है जब अत्याधुनिक 3डी प्रिंटिंग और लिक्विड नाइट्रोजन के जरिए सफल उपचार हुआ है। गुजरात के द्वारका जिले की रहने वाली सात वर्षीय बालिका के घुटने के ऊपर सूजन और दर्द की शिकायत थी। दर्द ज्यादा बढ़ने पर अस्पताल ले जाया गया, जहाँ से एक के बाद एक कई अस्पताल के चिकित्सकों से राय ली गई। अंत में कैंसर की आशंका पर उसे जीसीआरआइ अस्पताल रेफर किया। जहाँ इस बालिका की सभी जाँच करने पर पता चला कि उसकी जांघ की हड्डी कैंसर ग्रस्त हो गई है। हड्डी में कैंसर की गांठ काफी फैल चुकी थी, जो घुटने के जोड़ से मात्र 3 सेंटीमीटर दूर थी। चिकित्सक डॉ. सालुके ने बताया कि क्रायोसर्जरी लिक्विड नाइट्रोजन से की जाने वाली सर्जरी है। माइनस 185 डिग्री लिक्विड नाइट्रोजन (पदार्थ) में कैंसर ग्रस्त हड्डी को शरीर से अलग-थलग कर डाला जाता है। 20 मिनट तक नाइट्रोजन में रहने वाली हड्डी से कैंसर दूर हो गया और उसके बाद हड्डी को 15 मिनट तक सामान्य तापमान में लाकर मरीज में स्थापित कर दी गई। इसमें 3डी तकनीक का उपयोग किया गया, जिससे कैंसरग्रस्त हड्डी को पिन-टू-पिन अलग किया जा सका। दो तकनीकों को मिलाकर किया गया यह ऑपरेशन गुजरात में ही नहीं संभवतः देश में पहली बार होने का भी दावा किया। बालिका स्वस्थ बताई गई है जिसे चलाने को अभ्यास किया जा रहा है।

क्षतिग्रस्त दिमाग को सुधारेगी दवा

वाशिंगटन– एक शोध में पता चला है कि किशोर अवस्था में अधिक शराब पीने से क्षतिग्रस्त हुए मस्तिष्क को अल्जाइमर की दवा से ठीक किया जा सकता है। वैज्ञानिकों ने चूहों पर एक शोध करके इस बात की पुष्टि की। शोध में उन्होंने 16 दिनों तक शराब की अत्यधिक मात्रा लेने वाले चूहों को अल्जाइमर के इलात के लिए दी जाने वाली डोनेपेजिल नामक दवा दी। इन परिणामों से पता चला कि दवा शराब पीने के कारण मस्तिष्क में आई सूजन को ठीक करने में कारगर है।

चंद्रयान-3 इसी साल कम खर्च में लांच होगा

नई दिल्ली–अंतरिक्ष मिशन चंद्रयान-2 की असफलता से सबक लेते हुए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) साल-2020 में चंद्रयान-3 लॉन्च करेगा। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह ने मंगलवार को यह जानकारी दी। चंद्रयान-3 पर आने वाला खर्च चंद्रयान-2 से भी कम होगा। जितेंद्र सिंह ने संवाददाताओं से कहा कि कोई भी ऐसा देश नहीं है जिसने पहले प्रयास में चाद पर सॉफ्ट लैडिंग की हो। दो या अधिक प्रयास करने पड़े थे। उन्होंने दावा किया कि चंद्रयान-2 की कमियों को दुरुस्त कर चंद्रयान-3 को 2020 में सफलतापूर्वक चांद पर उतारेंगे।

इसरो के जीसैट-30 से इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी

बेंगलुरू–भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने सोमवार को कहा कि वह 17 जनवरी को फ्रेंच गुयाना से एरियन-5 प्रक्षेपण यान के माध्यम से संचार उपग्रह जीसैट-30 प्रक्षेपित करेगा। इससे इंटरनेट स्पीड बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह इसरो का 2020 का पहला मिशन होगा। जीसैट-30 उपग्रह भारतीय समयानुसार उस दिन तड़के 2.35 बजे दक्षिण अमेरिका के उत्तरपूर्वी तट पर कौरो के एरियर प्रक्षेपण परिसर से अपनी यात्रा पर रवाना होगा। उपग्रह का वजन 3357 किलोग्राम है। इसरो ने कहा, जीसैट-30 इनसैट-4ए की जगह लेगा और उसकी कवरेज क्षमता अधिक होगी। लांचिग के बाद 15 साल तक काम करता रहेगा। बताया गया कि यह उपग्रह केयू बैंड में भारतीय मुख्य भूमि और द्वीपों को, सी बैंड में खाड़ी देशों, बड़ी संख्या में एशियाई देशों और आस्ट्रेलिया को कवरेज प्रदान करता है।

कई प्रकार के डिमेंशिया से बचाव करता है जैतून का तेल

लंदन–जैतून के तेल (एक्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑलय) का सेवन करने से टाऊ प्रोटीन दिमाग में जमा नही होता और डिमेंशिया (भूलने की बिमारी) होने की जोखिम कम होता है। दिमाग में हानिकारक प्रोटिन के जमा हो जाता है। डिमोंशिया का खतरा बढ़ता है। एक हालिया शोध में यह दावा किया गया है। ऑलिव ऑयल में मौजूद मोनोसैचुरेटेड फैटी एसिड और अच्छी वसा के कारण यह कोलेस्टसेल को कम करने और दिल की बीमारियों से बचाने में मदद करता है। एक्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल का सेवन करने से दिमाग को सुरक्षा मिलती है और बुद्धिमत्ता को फायदा होता है। चूहों पर किए गए शोध में पता चला कि इस ऑलिव ऑयल के सेवन से उनके सीखने और प्रदर्शन करने की क्षमता में सुधार हुआ। इस तेल में ज्यादा मात्रा में पोलीफिनोल्स होते हैं। यह मजबूत एंटीऑक्सीडेंट है जो बीमारी को पलटने या उम्र संबंधित कमजोर याददाश्त को ठीक कर सकता है। शोध में पाया गया कि एक्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल के सेवन से ऑटोफेगी में बढ़ोतरी होती है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें दिमाग की कोशिकाएं हानिकारक पदार्थों को नष्ट कर देती हैं।

क्या काम करता है टाऊ प्रोटीन

अल्जाइमर और मनोभ्रंश के अन्य रूपों में, जैसे कि फ्रटोटेम्पोरल डिमेशिया में टाऊ प्रोटीन न्यूरॉन के अंदर जमा होता है। वहीं, स्वस्थ दिमागों में टाऊ का सामान्य स्तर सूक्ष्मनलिकाएं को स्थिर करने में मदद करते हैं, जो न्यूरॉन के लिए सहायक संरचनाएं हैं। इस शोध में पायाा कि अतिरिक्त वर्जिन ऑलिव ऑसल का लंबे समय तक सेवन करने के कई फायदे हैं। इससे कई तरह के डिमेशिया व अल्जाइमर से बचाव होता है।

गर्भ में पल रहे भ्रूण तक पहुँच सकता है वायरस

वाशिंगटन–ठंड के दौरान होने वाले सदी-जुकाम का वायरस महिलाओं के गर्भनाल को पार कर भ्रूण को भी संक्रमित कर सकता है। एक हालिया शोध के अनुसार गर्भवती महिला को सर्दी-जुकाम होने पर इसका वायरस अजन्मे बच्चे तक भी पहुँच सकता है। अमेरिका की तुलेन यूनिवर्सिटी के शोधकताओं ने कहा कि गर्भनाल गर्भावस्था के दौरान प्रहरी की तरह काम करती है और बच्चे तक पोषण और ऑक्सीजन पहुंचती है। साथ ही जीवाणुओं को बच्चे तक पहुँचने से रोकती है और उसके विकास में मदद करती है। गर्भनाल ही बच्चे को माँ के शरीर से जोड़ती है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

जोधपुर

रा.उ.मा.वि. फिटकासनी में श्री किशनाराम विश्नोई द्वारा 10 लाख रुपये की लागत से एक स्टेज बनाया साथ ही 2 वर्षों से विद्यालय में कम्प्यूटर टीचर की व्यवस्था की जिसकी सालाना फीस एक लाख रुपये हैं। **शहीद छोटूराम मेघवाल रा.उ.मा.वि. चौपासनी चारणान, पं.स. तिंवरी** को HPCL मित्तल फाउण्डेशन एवं HPCL मित्तल पाईप लाइन के संयुक्त सहयोग से विद्यालय को 328 टेबल-स्टूल भेंट जिसकी लागत 3 लाख पचास हजार रुपये तथा पाँच कम्प्यूटर (लिनोवा) विद्यालय को भेंट जिसकी लागत दो लाख दो हजार चार सौ पचास रुपये। **रा.बा.उ.मा.वि. बिलाड़ा** को श्री मोतीसिंह राजपुरोहित ने अपने स्व. माता जतन कंवर एवं स्व. पिताश्री शंकर सिंह राजपुरोहित की स्मृति में 12x25 (लम्बाई x चौड़ाई तथा 12 फीट गहराई) का पानी के टांके का निर्माण करवाया गया, श्री मोतीसिंह ने एक लाख इक्यावन हजार रुपये लगाकर पानी की मोटर व नल फिटिंग तथा पानी की टंकी आदि फीटिंग करवाकर जोधपुर से इंदिरा गाँधी नहर का पानी मंगवाकर छात्राओं हेतु मीठा पानी उपलब्ध करवाया गया।

अलवर

रा.उ.मा.वि. ततारपुर को श्री नारंगी श्रीराम गुप्ता चेरिटेबल ट्रस्ट ततारपुर द्वारा 2,35,000 रुपये की लागत से प्रयोगशालाओं का सामान विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री राकेश गोयल (ततारपुर) से छः अलमारी व एक बक्सा प्राप्त हुआ, जिसकी लागत 51,600 रुपये, श्री मामचन्द निवासी ततारपुर द्वारा विद्यालय के छात्रों को 101 गरम जर्सी उपलब्ध कराई गई जिसकी लागत 30,300 रुपये।

सवाई माधोपुर

रा.उ.मा.वि. कुस्तला, सवाई माधोपुर में श्री देवनारायण गुर्जर (प्रधान पंचायत समिति चौथ का बरवाड़ा) द्वारा 51,000 रुपये की लागत से सरस्वती माँ का मन्दिर निर्माण एवं मूर्ति स्थापना की, श्री जय प्रसाद बैरवा (से.नि.व.अ.) द्वारा वाटर कूलर विद्यालय को भेंट, जिसकी अनुमानित लागत 51,000 रुपये, श्रीमती चन्द्रकला माली (से.नि. च.श्रे.कर्म.) द्वारा 50 स्टूल+टेबल विद्यालय को भेंट जिसकी लागत 51,000 रुपये, श्रीमती आशा मीणा (पूर्व छात्रा कक्षा XII) द्वारा R.O. विद्यालय को भेंट जिसकी अनुमानित लागत 15,000 रुपये, ग्रामवासी कुस्तला के जनसहयोग से 35 सीमेन्ट के कट्टे प्राप्त जिसकी लागत 10,500 रुपये एवं 5 बजरी की ट्रोलियाँ प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये तथा नकद राशि 25,000 रुपये प्राप्त हुए, कक्षा 6 से 8 तक के 30 छात्रों को स्टाफ द्वारा जर्सी वितरण, सुश्री अनिता करणात वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक द्वारा दीवार निर्माण हेतु 20,000 रुपये प्राप्त, श्री सुरेश जैन से 2 सीलिंग फैन प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये, श्री घनश्याम चौधरी द्वारा 3 फर्श एवं पानी की टंकी 500 लीटर की जिसकी अनुमानित लागत 10,000 रुपये, श्री ओम प्रकाश चौधरी द्वारा 10 सीमेन्ट के खंभे प्राप्त जिसकी लागत 3,000 रुपये।

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि. कांखी, पं. स. सिवाना को श्री गणेश सिंह परिहार से एक माइक सेट प्राप्त जिसकी लागत 25,000 रुपये, श्री पीराराम देवासी से एक माइक सेट प्राप्त जिसकी लागत 15,000 रुपये, सर्वश्री मोहनलाल राजपुरोहित, परखाराम देवासी, राजूराम माली, राजूसिंह राजपुरोहित से प्रत्येक से 10-10 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 11,000-11,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री हवाराम माली से एक सोफा ऑफिस के लिए प्राप्त जिसकी लागत 21,000 रुपये, श्री मंगलाराम से 1 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी लागत 1,100 रुपये, सर्वश्री पेमाराम देवासी, सांवल सिंह, भंवरराम माली, रामाराम प्रजापत, मुकेश कुमार मिस्त्री, डूंगरारामजी मेघवाल, मोहनराम मेघवाल, चम्पा राम मेघवाल, चम्पाराम सेन, हस्तीमल सुथार, नारायण सिंह, मालमसिंह प्रत्येक से 5-5 सेट टेबल-स्टूल प्राप्त जिसकी प्रत्येक की लागत 5,500-5,500 रुपये।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. कातनवाड़ा, तह. सराड़ा को जनसहयोग से विद्यालय को एक इन्वर्टर, एक पिंजर बॉक्स भेंट जिसकी लागत 40,000 रुपये, श्री कैवजी पटेल द्वारा विद्यालय को 10 पंखें भेंट जिसकी लागत 20,000 रुपये, श्री अमृत जी पटेल से 04 कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 2,800 रुपये, श्री पेमजी पटेल, श्री गोपाल पटेल प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त।

बीकानेर

शहीद मेजर पूरणसिंह रा. फोर्ट उ.मा.वि. बीकानेर में श्री गोपीकृष्ण व्यास (भौतिक विज्ञान व्याख्याता) द्वारा 45 हजार रुपये की लागत से माता सरस्वती का मंदिर का निर्माण करवाया गया, रोटरी क्लब बीकानेर मिड टाउन द्वारा 25,000 रुपये के पंखे विद्यालय को भेंट, श्री महावीर रांका द्वारा संचालित रामलाल सूरज देवी रांका चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 5 लाख रुपये की लागत से जल मंदिर का निर्माण करवाया गया, श्रीमती विजय लक्ष्मी सोनी (से.नि.वरि.अ.) से एक कार्ड लैस माइक सैट प्राप्त जिसकी लागत 6,000 रुपये, विद्यालय में कार्यरत व.अ. श्रीमती किरण शर्मा द्वारा दरी भेंट जिसकी लागत 10,000 रुपये। **रा.मा.वि. लखनसर तह. श्री डूँगरगढ़** को श्री केशराराम कड़वासरा व उनके भाई श्री भागूराम कड़वासरा ने अपने स्वर्गीय भाइयों स्व. श्री रावताराम एवं स्व. श्री रेवन्तराम कड़वासरा की स्मृति में विद्यालय परिवार को एक लाख रुपये का फर्नीचर जिसमें 81 मेज व 83 स्टूल विद्यालय को भेंट किए।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च, 2020 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादकः अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल विविधा

तितली
रंग – रंग के पंखोंवाली,
तितली हमें लुभाती है।
फूल – फूल से मधु संचय कर,
पल – पल उड़ती जाती है।
अपने छोटे पंखों से वह,
मृदु संगीत सुनाती है।
मुझे न पकड़ो, फूल न तोड़ो,
हम सबको बतलाती है।।
नाम => कंचन
Happy New Year 2020

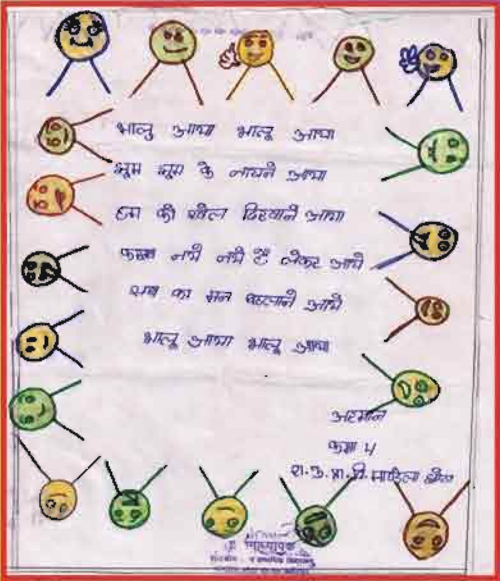
भालू आया भालू आया
झूम झूम के नाचने आया
छम छम कर दिखाने आया
भालू आया भालू आया
कक्षा 4

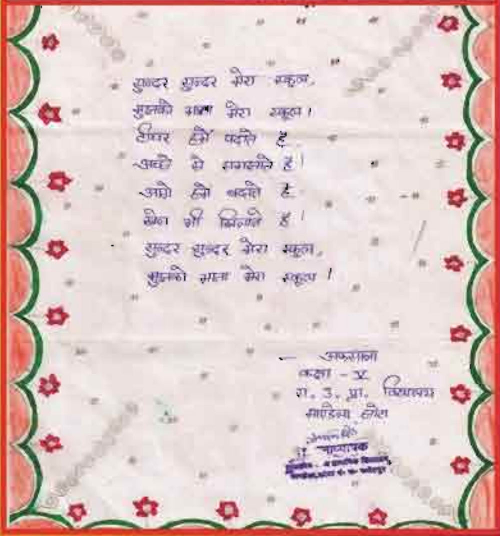
सुन्दर सुन्दर मेरा स्कूल,
मुझको भाता मेरा स्कूल।
टीचर हमें पढ़ाते हैं
अच्छे से समझाते हैं।
आगे हमें बढ़ाते हैं
खेल भी खिलाते हैं।
सुन्दर सुन्दर मेरा स्कूल,
मुझको भाता मेरा स्कूल।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • मार्च, 2020 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मार्च, 2020 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

चित्रवीथिका : मार्च, 2020

श्री सौरभ स्वामी IAS. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का भारत स्काउट एवं गाइड संगठन बीकानेर के मण्डल कार्यालय के पदाधिकारियों ने मण्डल चीफ कमिश्नर डॉ. विजयशंकर आचार्य के नेतृत्व में स्वागत किया और स्काउट गतिविधियों से परिचय करवाया, मुख्यालय जयपुर से हेडक्वार्टर कमिश्नर प्रशिक्षण सर्वश्री विनोद शर्मा ,सहायक राज्य संगठन आयुक्त मान महेन्द्रसिंह भाटी ने स्कार्फ व प्रतीक चिन्ह भेंट किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त श्री संतोष निर्वाण, सी.ओ. स्काउट बीकानेर जसवन्त सिंह राजपुरोहित, सी.ओ. स्काउट झुंझुनू महेश कालावत, सी.ओ. गाइड बीकानेर ज्योतिरानी महात्मा, सी.ओ. गाइड श्रीगंगानगर मोनिका यादव, सहायक लीडर ट्रेनर घनश्याम स्वामी, सुगनाराम चौधरी, स्काउटर सुरेन्द्र विजय आदि।

रा.रा.भा.स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डुंगरपुर के सीओ स्काउट श्री सवाईसिंह के अनुसार राष्ट्रीय बालिका दिवस के पूर्व संध्या पर 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' पोस्टरों का विमोचन करते हुए श्री मणीलाल छगन मु.जि.शि.अ. डूंगरपुर व श्री बंशीलाल रोत जिशिअ (मु.) माशि. डूंगरपुर एवं पोस्टर के साथ छात्राएं।

रा.मा.वि.लाखनसर,डूंगरगढ़ बीकानेर में स्व.रावताराम व स्व.रेवन्तराम की स्मृति में उनके भाई भामाशाह श्री केशराराम व भागूराम पुत्र श्री दुलाराम कड़वासरा ने एक लाख रूपए का फर्नीचर (81मेज व 83स्टूल) शाला को भेंट करने पर संस्थाप्रधान श्री राजूराम खिलेरी भामाशाहों को सम्मानित करते हुए।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़गांव, भींडर, उदयपुर में आयोजित वार्षिकोत्सव के अवसर पर संस्थाप्रधान की प्रेरणा से नई पहल करते हुए स्थानीय शिक्षकों द्वारा अपने स्तर पर स्टाफ में एकरूपता लाने एवं अनुशासन की मिसाल कायम करने की अनूठी पहल करते संस्थाप्रधान, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं सहायक कर्मचारी।

शहीद मेजर पूरणसिंह राजकीय फोर्ट उ. मा. वि. बीकानेर, प्रधानाचार्य जागृति पुरोहित की प्रेरणा से व्याख्याता श्री गोपीकृष्ण व्यास ने रुपए 45000/- की लागत से अपनी माता जी गायत्री व्यास की स्मृति में मार्बल मंदिर मय चौकी पर मां सरस्वती व गणेश की प्रतीमाओं के उद्‌घाटन अवसर पर शाला परिवार एवं शिक्षा अधिकारीगण।